THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

# स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-27 अंक : 349 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) फाल्गुन शु.12 2079 शनिवार, 4 मार्च 2023

प्रधान संपादक – डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

## सोनिया गांधी दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। कांग्रेस पार्टी की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी को दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सोनिया गांधी के चेस्ट में इंफेक्शन है और उनकी हालत स्थिर है। बताया जा रहा कि उन्हें बुखार आ रहा था, जिसके बाद डॉक्टर की सलाह पर उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया।

दिल्ली स्थित सर गंगाराम अस्पताल ने सोनिया गांधी के भर्ती होने को लेकर एक हेल्थ बुलेटिन जारी किया। इस बुलेटिन के अनुसार चेस्ट मेडिसिन विभाग के सीनियर कंसल्टेंट डॉक्टर अरूप बसु और उनकी टीम सोनिया गांधी का इलाज कर रही है। बता दें कि पिछले दो महीनों में सोनिया गांधी को दूसरी बार अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सोनिया गांधी अस्पताल में ऐसे समय पर भर्ती हुई हैं, जब राहुल गांधी लंदन दौरे पर हैं। राहुल गांधी ने शुक्रवार को कैंब्रिज विश्वविद्यालय के छात्रों को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने एक बयान दिया जो विवादों में आ गया है। राहुल गांधी ने कहा कि लोकतंत्र पर हमला हो रहा है और हम रक्षा में लगे हुए हैं। बता दें कि इसके पहले 5 जनवरी को सोनिया गांधी की सर गंगा राम अस्पताल में भर्ती करवाया गया था। >14

# लालच ने भ्रष्टाचार को कैंसर की तरह बढ़ाया : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि धन के लिए अतृप्त लालच ने भ्रष्टाचार को कैंसर की तरह विकसित करने में मदद की है। संवैधानिक अदालतों का देश के लोगों के प्रति कर्तव्य है कि वे भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहनशीलता दिखाएं और अपराध करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें।

शीर्ष अदालत ने कहा कि धन के समान वितरण को हासिल करने का प्रयास कर भारत के लोगों के लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए संविधान के प्रस्तावना के वादे को प्राप्त करने में भ्रष्टाचार एक प्रमुख बाधा है। जस्टिस एस रवींद्र भट और जस्टिस दीपांकर दत्ता की पीठ ने छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के उस आदेश को रद्द करते हुए यह टिप्पणी की, जिसमें राज्य के पूर्व प्रिंसिपल सेक्रेटरी अमन सिंह और उनकी पत्नी के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोप में दर्ज एफआईआर को रद्द कर दिया गया था।

### कोर्ट ने क्या-क्या कहा?

सुप्रीम कोर्ट ने मामले की सुनवाई करते हुए कहा, यद्यपि यह भारत के लोगों को धन के समान वितरण को प्राप्त करने के लिए प्रयास करके सामाजिक न्याय को सुरक्षित करने के लिए संविधान का प्रस्तावना वादा है, यह अभी तक एक दूर का सपना है। यदि मुख्य नहीं, तो प्रगति प्राप्त करने के लिए अधिक प्रमुख बाधाओं में से एक है। यह क्षेत्र निस्संदेह भ्रष्टाचार है।

पीठ ने कहा, भ्रष्टाचार एक अस्वस्थता है, जिसकी उपस्थिति जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। यह अब शासन की गतिविधियों तक सीमित नहीं है, अफसोस की बात है कि जिम्मेदार नागरिक कहते हैं कि यह किसी के जीवन का एक तरीका बन गया है। शीर्ष अदालत ने कहा कि यह पूरे समुदाय के लिए शर्म की बात है कि हमारे संविधान निर्माताओं के मन में जो ऊंचे आदर्श थे, उनका पालन करने में लगातार गिरावट आ रही है और समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास तेजी से बढ़ रहा है।

**हिंदू धर्म का भी किया उल्लेख :** कोर्ट ने अपनी टिप्पणी में हिंदू धर्म का भी उल्लेख किया। कहा, भ्रष्टाचार की जड़ का पता लगाने के लिए अधिक बहस की आवश्यकता नहीं है।

हिंदू धर्म में सात पापों में से एक माना जाने वाला 'लालच' अपने प्रभाव में प्रबल रहा है। वास्तव में, धन के लिए अतृप्त लालच ने भ्रष्टाचार को कैंसर की तरह विकसित करने में मदद की है। यदि भ्रष्टाचारी कानून लागू करने वालों को धोखा देने में सफल हो जाते हैं, तो उनकी सफलता पकड़े जाने के डर को भी खत्म कर देती है। वे इस अहंकार में डूबे रहते हैं कि नियम और कानून विनम्र लोगों के लिए हैं न कि उनके लिए। पकड़ा जाना उनके लिए पाप है।

# विधायक का अधिकारी बेटा 40 लाख रिश्वत लेते गिरफ्तार

## ऑफिस-घर से 8 करोड़ कैश मिला, विधायक पिता ने कंपनी का चेयरमैन पद छोड़ा

बेंगलुरू, 3 मार्च (एजेंसियां)। कर्नाटक में गुरुवार को लोकायुक्त ने भाजपा विधायक मदल वीरुपक्षप्पा के बेटे प्रशांत कुमार को 40 लाख रुपये घूस लेते गिरफ्तार किया। प्रशांत की गिरफ्तारी पिता के बेंगलुरू स्थित कर्नाटक सोप एंड डिटर्जेंट लिमिटेड (केएसडीएल) से दफ्तर से हुई।

लोकायुक्त ने केएसडीएल दफ्तर और प्रशांत के घर पर छापा मारा तो 8 करोड़ कैश बरामद हुआ। गिनती करने के बाद अफसरों ने नोटों के बंडल बिस्तर पर रख दिए।

भाजपा विधायक मदल वीरुपक्षप्पा ने केएसडीएल के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने कहा कि जिस टेंडर के मामले में बेटे ने घूस ली, उसमें मैं शामिल नहीं हूं। वीरुपक्षप्पा के इस्तीफे से पहले कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कहा था कि लोकायुक्त को दोबारा शुरू करने का मकसद राज्य में भ्रष्टाचार को खत्म करना था। लोकायुक्त अधिकारियों के मुताबिक, प्रशांत कर्नाटक एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस के 2008 बैच के अधिकारी हैं। उन्होंने साबुन और अन्य डिटर्जेंट बनाने के लिए कच्चे माल को खरीदने की डील के लिए एक ठेकेदार से 80 लाख रुपये की डिमांड की थी। जिसके बाद ठेकेदार ने इसकी शिकायत लोकायुक्त से की थी। शिकायत पर लोकायुक्त ने प्रशांत को रंगे हाथ पकड़ने के लिए योजना बनाई। अधिकारी ने बताया कि केएसडीएल के चेयरमैन और भाजपा विधायक मदल वीरुपक्षप्पा ओर से ये रकम ली गई है। ऐसे में रिश्वत लेने के इस मामले में पिता और पुत्र दोनों आरोपी हैं। >14

## विजय माल्या की याचिका खारिज

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। उच्चतम न्यायालय ने भगोड़े कारोबारी विजय माल्या की एक याचिका शुक्रवार को खारिज कर दी। यह याचिका आर्थिक अपराधी घोषित करने और संपत्ति जब्त करने के लिए मुंबई की एक अदालत में जारी कार्यवाही को चुनौती देने के लिए डाली गई थी। शीर्ष अदालत ने माल्या के वकील की इस दलील के बाद अभियोजन नहीं चलाने की याचिका खारिज कर दी है कि उन्हें इस मामले में याचिकाकर्ता से कोई निर्देश नहीं मिल रहा है। याचिकाकर्ता के वकील ने कहा था कि वह इस मामले में उन्हें कोई निर्देश नहीं दे रहा है। न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति राजेश बिंदल की पीठ ने कहा, इस बयान के मद्देनजर मुकदमा नहीं चलाने की याचिका खारिज की जाती है। शीर्ष अदालत ने माल्या की याचिका पर सात दिसंबर 2018 को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को नोटिस जारी किया था और मुंबई में धन शोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) की विशेष अदालत के समक्ष जांच एजेंसी की >14

# इसी वजह से लोकायुक्त लागू किया : बासवराज बोम्मई

बेंगलुरू, 3 मार्च (एजेंसियां)। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरू में भाजपा विधायक के बेटे के घर मिली अकूत दौलत मामले पर मुख्यमंत्री बासवराज बोम्मई का बयान सामने आया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मामले की निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच की जाएगी। यही हमारा उद्देश्य है कि दोषियों को सजा मिले। लोकायुक्त के पास मामले की पूरी जानकारी है कि यह पैसा किसका है और यह कहां से आया। जल्द ही सब खुलासा हो जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि लोकायुक्त ने विधायक के बेटे के ठिकानों पर छापेमारी की। यही कारण है कि हमने राज्य में फिर से लोकायुक्त की शुरूआत की है ताकि भ्रष्टाचार पर रोक लग सके।

कांग्रेस की सरकार में लोकायुक्त के बिना कई मामले रफा-दफा कर दिए गए। बता दें कि कर्नाटक के भाजपा विधायक मदल विरूपक्षप्पा के बेटे के घर से छापेमारी में छह करोड़ रुपये नकद बरामद किए गए हैं। दरअसल कर्नाटक लोकायुक्त की एंटी करप्शन विंग ने गुरुवार को भाजपा विधायक के बेटे को चालीस लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया था।

रिश्वत मांगने की शिकायत मिलने पर लोकायुक्त ने यह कार्रवाई की थी। कर्नाटक में इसी साल विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में बीजेपी विधायक के बेटे के घर से इतनी बड़ी मात्रा में नकदी का मिलना विपक्ष को सरकार पर हमलावर होने का मौका दे सकता है। मदल विरूपक्षप्पा कर्नाटक के देवनागरे जिले की चन्नागिरी सीट से विधायक हैं। साथ ही राज्य सरकार के कर्नाटक साबुन और डिटर्जेंट लिमिटेड (केएसडीएल) के अध्यक्ष भी हैं। इसी के तहत प्रसिद्ध मैसूर चंदन साबुन का निर्माण किया जाता है। वहीं आरोपी बेटा कर्नाटक एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विसेज के 2008 बैच के अधिकारी हैं। >14

# मेरे फोन की जासूसी हो रही थी, मुझे अधिकारियों ने बताया था

## कैंब्रिज विश्वविद्यालय में छात्रों से बोले कांग्रेस सांसद राहुल गांधी

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी लंदन दौरे पर हैं। उन्होंने शुक्रवार को कैंब्रिज विश्वविद्यालय में संबोधन दिया। अपने व्याख्यान के दौरान शुक्रवार को राहुल गांधी ने कहा कि लोकतंत्र के लिए जरूरी संस्थागत ढांचा बाधित होता जा रहा है और भारतीय लोकतंत्र के बुनियादी ढांचे पर हमला हो रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार उनकी जासूसी करने के लिए पेगासस का इस्तेमाल कर रही है। राहुल गांधी, जो कैंब्रिज जज बिजनेस स्कूल के विजिटिंग फेलो हैं। उन्होंने '21वीं सदी में सुनने के लिए सीखना' विषय पर विश्वविद्यालय में छात्रों को व्याख्यान दिया। कांग्रेस सांसद ने कहा, भारतीय लोकतंत्र पर हमला हो रहा है। हम लोकतंत्र पर हमले का बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं।

राहुल गांधी ने विश्वविद्यालय के छात्रों से कहा, मेरे फोन पर पेगासस था। बड़ी संख्या में राजनेताओं के फोन पर पेगासस था। मुझे फोन पर बात करते समय सावधान रहने के लिए कहा गया था।

अपने व्याख्यान में राहुल गांधी ने सरकार पर मीडिया और न्यायपालिका को नियंत्रित करने, निगरानी करने, डराने-धमकाने, अल्पसंख्यकों, दलितों और आदिवासियों पर हमले करने का आरोप लगाया। राहुल गांधी ब्रिटेन के एक सप्ताह के दौरे पर हैं और कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में बिग डेटा एंड डेमोक्रेसी और भारत-चीन संबंधों पर बंद कमरे में कुछ सत्र में हिस्सा लेने वाले हैं। बता दें कि राहुल गांधी इंडियन ओवरसीज कांग्रेस (आईओसी) यूके चैप्टर के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करेंगे और लंदन में भारतीय प्रवासी सम्मेलन को भी संबोधित किया।

राहुल गांधी से पूछा गया कि क्या आप नरेंद्र मोदी की उन अच्छी नीतियों के बारे में बता सकते हैं जो भारत के हित में हैं? इसके जवाब में राहुल ने कहा, भारत राज्यों का संघ है भारत में धार्मिक विविधता है। भारत में सिख, मुस्लिम, ईसाई सभी हैं, लेकिन मोदी इन्हें दूसरे दर्जे का नागरिक समझते हैं।

## मनीष सिसोदिया ने ट्रायल कोर्ट में जमानत याचिका दाखिल की

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। दिल्ली शराब नीति केस में गिरफ्तार पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने शुक्रवार को निचली अदालत में जमानत याचिका दाखिल की है। इससे पहले उन्होंने जमानत के लिए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने उनकी याचिका खारिज करते हुए हाईकोर्ट जाने को कहा था। बता दें कि सिसोदिया की सीबीआई हिरासत 4 मार्च (शनिवार) को खत्म हो रही है। शनिवार दोपहर 2 बजे उन्हें सीबीआई की अदालत में पेश किया जाएगा।

सीबीआई ने सिसोदिया को 26 फरवरी को दिल्ली शराब नीति केस में गिरफ्तार किया था। 27 फरवरी को सिसोदिया को कोर्ट में पेश किया गया, कोर्ट ने उन्हें 4 मार्च तक की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। सिसोदिया की गिरफ्तारी के खिलाफ कांग्रेस नेता और वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने मंगलवार सुबह फौरन सुनवाई के लिए याचिका लगाई थी, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया था। >14

# दुनिया के सामने अनेक चुनौतियां : मोदी

## जी-20 के फॉरेन मिनिस्टर्स की मीटिंग

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। जी-20 देशों के विदेश मंत्रियों की बैठक दिल्ली में खत्म हो गई। इसमें यूएस, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्रांस समेत दुनिया की 20 बड़ी इकोनॉमीज के प्रतिनिधि शामिल हुए। मीटिंग के इनॉगरल सेशन में पीएम मोदी ने कहा, कई साल प्रगति करने के बाद अब हमारे सामने कई चैलेंज हैं। कई विकासशील देश इस समय फूड और एनर्जी सिक्योरिटी के लिए ऐसे कर्ज तले दबे हैं, जिन्हें वे संभाल नहीं पा रहे। अमीर देशों ने जो ग्लोबल वॉर्मिंग की है, उससे सबसे ज्यादा प्रभावित गरीब देश ही हैं।

मीटिंग के बाद भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। कहा, ये ग्लोबलाइजेशन का वक्त है और इससे कोई देश अलग नहीं रह सकता। हर चुनौती का मिलकर सामना करना होगा। यही बात हमारे प्रधानमंत्री ने भी कही है।

**प्रेस कॉन्फ्रेंस के 2 अहम बयान....**

भारत के विदेश मंत्री जयशंकर : मैं मानता हूं कि चीन के साथ रिश्तों में दिक्कत है। उनके फॉरेन मिनिस्टर से सभी मुद्दों पर बातचीत हुई है। इसमें सीमा विवाद भी शामिल है। जी-20 के फॉरेन मिनिस्टर्स ने पहली बार काउंटर नार्कोटिक्स पर मिलकर काम करने का वादा किया है।

**रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव :** यूक्रेन से जारी जंग की वजह से रूस नहीं बल्कि वेस्टर्न वर्ल्ड अलग-थलग पड़ा है। भारत और रूस के रिश्ते बहुत खास हैं। रूस-यूक्रेन जंग पर भारत के रुख की हम तारीफ करते हैं। कुछ देशों पर अमेरिका प्रेशर डाल रहा है कि वो रूस के खिलाफ यूएन में वोटिंग करें। ये देश दबाव में नहीं आए, क्योंकि वो पश्चिमी देशों का खेल समझते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने बहुत जिम्मेदार रवैया अपनाया है। हमने यूएन चार्टर के मुताबिक ही काम किया है। यूएन सिक्योरिटी काउंसिल में जल्द से जल्द सुधार होने चाहिए।

**मोदी ने कहा, ग्लोबल गवर्नेंस फेल हुई**

हम ऐसे समय में मिल रहे हैं जब दुनिया में गहरे विभाजन हो चुके हैं। पिछले कुछ साल में हमने आर्थिक संकट, जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद और युद्ध देखे हैं। इससे साफ हो गया है कि ग्लोबल गवर्नेंस फेल हो चुकी है। दुनिया के अहम मुद्दों को संभालने के लिए बनी संस्थाएं सबसे बड़ी चुनौतियों को पूरा करने में फेल हुई हैं।

**जयशंकर बोले, एकमत न हों, तो भी मिलकर काम करें :**

इनॉगरल सेशन में जयशंकर ने कहा, जी-20 देशों पर असाधारण जिम्मेदारी है। हम पहली बार वैश्विक संकट के बीच एक साथ आए थे और आज एक बार फिर कई संकटों का सामना कर रहे हैं, जैसे- कोरोना महामारी, रूस-यूक्रेन जंग, क्लाइमेट चेंज। जरूरी नहीं की इन मुद्दों पर हम एकमत हों लेकिन हमें साथ मिलकर हल निकालना होगा।

करीब पांच महीने बाद रूस और अमेरिका के अलावा चीन के फॉरेन मिनिस्टर्स एक ही प्लेटफॉर्म पर मौजूद थे। मीटिंग से एक दिन पहले यानी बुधवार को भारत के विदेश सचिव विनय क्वात्रा ने उसी बात को दोहराया जो कुछ महीने पहले ग्लोबल हेडलाइन बनी थी। प्रधानमंत्री मोदी ने तब रूस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन से कहा था, यह वक्त जंग का नहीं, बातचीत का है। अब तक कम से कम तीन मौके ऐसे आए, जब अमेरिका ने ओपन फोरम से कहा कि भारत को जंग रोकने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल करना चाहिए। >14

# संगमा ने पेश किया मेघालय में सरकार बनाने का दावा

## शपथ समारोह में शामिल हो सकते हैं पीएम मोदी-शाह

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। मेघालय में नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) प्रमुख और मुख्यमंत्री कोनराड संगमा ने चुनाव में जीत के अगले ही दिन यानी शुक्रवार को राज्यपाल से मुलाकात की और सरकार बनाने का दावा पेश कर दिया। मीडिया से बातचीत में संगमा ने कहा कि भाजपा ने हमें अपना औपचारिक समर्थन दिया है। भाजपा के अलावा अन्य राजनीतिक दलों ने भी अपना समर्थन दिया है। हमारे पास सरकार बनाने के लिए पर्याप्त संख्या है।

**शपथ समारोह में पहुंच सकते हैं पीएम मोदी-शाह :**

संगमा ने बताया कि उनके शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह भी पहुंचेंगे। उन्होंने कहा, हमें सूचित किया गया है कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और शायद पीएम शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होंगे। हम पीएमओ से पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहे हैं। गुरुवार को मेघालय चुनाव के नतीजे आए। इसमें कोनराड संगमा की नेशनल पीपुल्स पार्टी (एनपीपी) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। सूबे में विधानसभा की कुल 60 सीटें हैं। हालांकि, चुनाव 59 सीटों पर ही हुए हैं। एक सीट पर एक प्रत्याशी के निधन के चलते चुनाव रद्द हो गया था।

## पवन खेड़ा की अंतरिम जमानत 17 मार्च तक बढ़ी

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा की अंतरिम जमानत 17 मार्च की बढ़ा दी है। 28 फरवरी को असम और उत्तर प्रदेश सरकार ने अपना जवाब दाखिल करने के लिए कोर्ट से समय मांगा था। जिसके बाद सीजेआई चंद्रचूड़ ने 3 मार्च तक का समय दिया था।

पवन खेड़ा पर यूपी-असम में पीएम मोदी पर विवादित बयान पर 3 एफआईआर दर्ज की गई हैं। विवादित बयान देने पर 23 फरवरी को असम पुलिस ने खेड़ा को दिल्ली एयरपोर्ट से गिरफ्तार कर लिया था। कांग्रेस के 85वें राष्ट्रीय महाधिवेशन में मीडिया से चर्चा करते हुए कांग्रेस संचार विभाग के चेयरमैन पवन खेड़ा ने खुलकर इस पर बात की। उन्होंने कहा कि भाजपा हिंदुत्व के मुद्दे को लेकर हर बार मैदान में उतरती है लेकिन वो देश के असली मुद्दे को भुला देती है। ये देश का मुद्दा नहीं है इसलिए ये हमारा भी मुद्दा नहीं है।

# कांग्रेसी हारे तो हारे लेकिन ऐसे हारे हैं कि दूरबीन लेकर भी नहीं दिख रहे : शाह

बेंगलुरू, 3 मार्च (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि देश की 130 करोड़ की जनता पीएम नरेंद्र मोदी की लंबी आयु के लिए प्रार्थना कर रही है। उन्होंने एक जनसभा में कहा कि कांग्रेस के पास विजय का कोई सूत्र नहीं बचा है। राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है। ये लोग नारे लगा रहे कि मोदी तेरी कब्र खुदेगी और आप के लोग कहते हैं कि मोदी तुम मर जाओ।

शाह ने कहा कि ये जेडीएस को जो भी सीटें मिलती हैं वो लेकर कांग्रेस की गोदी में बैठ जाते हैं। शाह ने कहा कि मैं सिद्धारमैया से पूछना चाहता हूं कि आपने क्या किया था? आपने सिर्फ दिल्ली के एक परिवार के लिए एटीएम बनकर भ्रष्टाचार का पैसा दिल्ली पहुंचाने का काम किया था। जेडीएस और कांग्रेस दोनों ही परिवारवादी पार्टियां हैं। ये कभी कर्नाटक का कल्याण नहीं कर सकती।

केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि आज यहां से विजय संकल्प यात्रा शूरू हो रही है। ये विजय संकल्प यात्रा हमारे नेता को मुख्यमंत्री बनने का संकल्प नहीं है बल्कि ये विजय संकल्प यात्रा कर्नाटक के गरीब से गरीब लोगों के कल्याण करने के संकल्प को लेकर है। शाह ने कहा कि आपकी उपस्थिति बता रही है कि कर्नाटक में बीजेपी की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने वाली है। कल ही त्रिपुरा, नागालैंड, मेघालय तीनों जगहों में कांग्रेस का सूपड़ा साफ हो गया। हारे तो हारे लेकिन ऐसे हारे हैं कि दूरबीन लेकर भी नहीं दिख रहें।

## मालदीव के विदेश मंत्री बोले

## आपात स्थिति में सबसे आगे रहा भारत, आज हर कोई कर रहा सम्मान

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। मालदीव के विदेश मंत्री अब्दुल्ला शाहिद ने शुक्रवार को कहा कि मालदीव किसी प्रतिस्पर्धी खेल का मैदान नहीं है। उन्होंने कहा भारत के साथ हमारे बहुत अच्छे संबंध हैं। प्रधानमंत्री मोदी राष्ट्रपति सोलिह के उद्घाटन समारोह के लिए वहां पहुंचे थे। राष्ट्रपति सोलिह दिसंबर में राजकीय यात्रा पर दिल्ली में थे। तबसे हम देख रहे हैं कि बहुत उच्च स्तरीय दौरे हो रहे हैं।

**इतने बेहतर कभी नहीं रहे मालदीव-भारत के बीच संबंध :**

शाहिद ने कहा, दोनों नेता नियमित रूप से संपर्क में हैं और दोनों देशों के नेतृत्व में भरोसा बहुत अच्छा है। विदेश मंत्री जयशंकर और मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि हम प्रतिबद्धताओं को पूरा करें और हम इसे पूरा करने में सक्षम हैं। मालदीव-भारत के बीच संबंध इससे बेहतर कभी नहीं रहे।

**भारत तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, हर कोई कर रहा सम्मान :**

उन्होंने आगे कहा, भारत आज सबसे बड़ी आबादी और सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। यह जी-20 का अध्यक्ष है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके नेतृत्व के बारे में बात की जा रही है और हर कोई इसका सम्मान कर रहा है। हम बहुत खुश हैं कि हमारे पास एक पड़ोसी है जिसकी 'पड़ोस पहले' की नीति (नेबर्स फर्स्ट पॉलिसी) है। मालदीव के विदेश मंत्री ने कहा, भारत समय की कसौटी पर खरा दोस्त (टाइम टेस्टेड फ्रेंड) है। मालदीव में हर आपात स्थिति में भारत सबसे आगे रहा है। उन्होंने कहा, 1988 में हमला, 2004 में सुनामी, 2015 का माले संकट और कोरोना महामारी के दौरान भारत ने जिस उदारता के साथ हम तक पहुंच बनाई, वह अद्भुत थी।

# बद्दी जा रही बस को ट्राले ने मारी टक्कर

## आठ की मौके पर मौत, कई घायल

अंबाला (हरियाणा), 3 मार्च (एजेंसियां)। अंबाला में शुक्रवार तड़के एक भीषण हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई। हादसा तड़के करीब साढ़े चार से पांच बजे के बीच राष्ट्रीय राजमार्ग 344 चंडीगढ़ यमुनानगर पर स्थित गांव ककड़ माजरा के नजदीक हुआ। बताया जा रहा है कि हादसा उस समय हुआ जब बरेली उत्तर प्रदेश से बद्दी हिमाचल प्रदेश जा रही एक डबल डेकर बस शुक्रवार अलसुबह गांव ककड़ माजरा के नजदीक सड़क किनारे खड़ी थी और पीछे से आ रहे एक ट्राले ने उसे टक्कर मार दी। ट्राला टक्कर लगने के बाद हाइवे पर बने डिवाइडर को पार कर दूसरी तरह पलट गया। हादसा इतना दर्दनाक था कि हर तरफ चीख-पुकार मच गई। आनन-फानन में बस में सवार लोगों को निकाला गया और कुछ को शहजादपुर सीएचसी व कुछ को पंचकूला सरकारी अस्पताल में भेजा गया। हादसे में आठ लोगों की मौत हो गई। जिनमें महिलाएं व एक बच्चा भी बताया जा रहा है जिसकी उम्र लगभग दो से तीन साल बताई जा रही है। सूचना मिलते ही डीएसपी नारायणगढ़ अर्शदीप सिंह थाना प्रभारी शहजादपुर बीरभान पुलिस दल के साथ मौके पर पहुंचे। हादसे के बाद हाइवे के दोनों और जाम लग गया। बड़ी क्रेन बुलाकर दोनों वाहनों को सड़क से हटाया गया लगभग दो घंटे के बाद यातायात सुचारू हुआ। बताया जा रहा है कि गुरुवार शाम के लगभग पांच बजे के करीब बरेली से लगभग 70 सवारियों को लेकर बस बद्दी के लिए चली थी और जैसे ही आज सुबह लगभग पांच बजे के करीब बस जब ककड़ माजरा के नजदीक पहुंची तभी यह हादसा हुआ है।

# ममता को घेरने के लिए लेफ्ट-कांग्रेस-बीजेपी एक साथ: पंचायत चुनाव की तैयारी शुरू

## बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष बोले- ये लोकल गठजोड़

कोलकाता, 3 मार्च (एजेंसियां)। अगर आरएसएस एक फीसदी भी हमें सपोर्ट करे, तो हम लाल आतंक से लड़ने में कामयाब होंगे'। यह बात ममता बनर्जी ने साल 2003 में कही थी। तब वे पश्चिम बंगाल में विपक्ष में हुआ करती थीं और वामपंथियों से लड़ रही थीं, जिनकी बंगाल में तूती बोलती थी। उस समय ममता एनडीए का हिस्सा थीं। यह वही वक्त था, जब आरएसएस नेता तरुण विजय ने ममता बनर्जी को मंच पर भाषण देने के लिए बुलाया था तो उन्हें 'बंगाल की दुर्गा' कहकर पुकारा था। 2011 में ममता बनर्जी ने सीपीएम के 34 साल का राज खत्म कर दिया था। तब से वे बंगाल की सत्ता में हैं। 20 साल पहले जिस आरएसएस से वे लाल आतंक खत्म करने के लिए मदद मांग रही थीं, वही आरएसएस और बीजेपी की अब सीपीएम के लोग मदद कर रहे हैं, बंगाल से ममता बनर्जी को हटाने के लिए। पश्चिम बंगाल में अप्रैल-मई में पंचायत चुनाव हो सकते हैं। मामला अभी कोर्ट में है, इसलिए तारीख तय नहीं हो पा रही। कोर्ट के आदेश के बाद ही तय होगा कि चुनाव कब होंगे। टीएमसी से लेकर बीजेपी और सीपीएम तक ने ग्राउंड पर चुनावों की तैयारी शुरू कर दी है। इसकी वजह है कि पंचायत चुनाव अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों में बड़ा असर डालेंगे।

**'लोकल लेवल पर गठबंधन, वजह टीएमसी समर्थकों की गुंडागर्दी'**

लगातार तीन विधानसभा चुनाव में करारी हार के बाद वामपंथी बीजेपी के साथ गठजोड़ कर टीएमसी को हराने की तैयारी में हैं। बीजेपी भी ममता को हराने के लिए वामपंथियों का साथ लेने से परहेज नहीं कर रही। सिर्फ कम्युनिस्ट ही नहीं, बल्कि कई जगह तो कांग्रेस भी बीजेपी के साथ है। मैंने बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष सुकांत मजूमदार से पूछा कि पंचायत चुनावों में आप वामपंथियों और कांग्रेस के साथ मिलकर टीएमसी से लड़ रहे हैं तो वो बोले 'ऐसे समझौते लोकल लेवल पर हो रहे हैं। गांव के नेता आपस में मिलकर तय कर लेते हैं कि किसे जिताना है। टीएमसी की गुंडागर्दी इतनी बढ़ गई है कि कई जगह समझौते किए जा रहे हैं।' पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अधीर रंजन चौधरी भी यही बात कहते हैं। उनका कहना है कि 'हो सकता है लोकल लेवल पर इस तरह का गठबंधन हो। लोकल लेवल पर हमारा कंट्रोल नहीं होता। लोग आपस में बात करके फैसला कर लेते हैं। बंगाल में तानाशाही इतनी बढ़ गई है कि लोग टीएमसी को हटाने के लिए कोई भी रास्ता अपनाने को तैयार हैं।'

**2018 की तरह हिंसा हुई तो ममता को नुकसान होगा**

पश्चिम बंगाल के सीनियर जर्नलिस्ट स्निगधेंदु भट्टाचार्य कहते हैं, 'बंगाल में पार्टी सिंबॉल पर पंचायत इलेक्शन होते हैं। इस बार टीएमसी मुसीबत में है, क्योंकि सरकार पर भ्रष्टाचार के तमाम आरोप लगे हैं। टीचर्स रिक्रूटमेंट से लेकर कोयला और गो-तस्करी का मामला भी चल रहा है। इसलिए उसके खिलाफ माहौल बना हुआ है।' वहीं अगर हिंसा होती है तो टीएमसी को नुकसान होना तय है। 2018 में जिन इलाकों में हिंसा हुई थी, वहां टीएमसी चुनाव तो जीत गई थी, लेकिन लोकसभा चुनाव में उसे हार मिली थी, क्योंकि लोकसभा चुनाव में सेंट्रल एजेंसियां तैनात होती हैं और लोकल लेवल पर गड़बड़ी का आशंका कम हो जाती है। पंचायत इलेक्शन में सब कुछ राज्य सरकार के हाथ में होता है। इसलिए कई बार बूथ कैप्चर करने तक के मामले सामने आते हैं। देसी बमों से हमला होना तो बंगाल में आम बात है। ऐसे में इस बार भी यदि 2018 की तरह हिंसा हुई तो राज्य सरकार के 2024 और ज्यादा कठिन हो जाएगा।

**टीएमसी नहीं, बीजेपी - वामपंथियों में गठजोड़**

पश्चिम बंगाल के विधानसभा चुनाव में एक नारा वायरल हुआ था कि 'दिल्ली में दादा और बंगाल में दीदी'। मैंने बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष से पूछा कि 'क्या आप पंचायत चुनाव में टीएमसी को वॉकओवर देने जा रहे हैं और इसके बदले में ममता बनर्जी लोकसभा में आपको मदद करेंगी तो वो बोले, 'वो हमें लोकसभा में क्या मदद कर पाएंगी। ये सब खबरें बकवास हैं।' प्रोफेसर डॉ. विश्वनाथ चक्रवर्ती कहते हैं, 'आरएसएस के साथ ममता बनर्जी के संबंध बहुत अच्छे हैं, क्योंकि ममता ने बंगाल से आरएसएस के दुश्मन रहे वामपंथियों की सत्ता को उखाड़ा था। इसलिए आरएसएस उन्हें बेवजह डिस्टर्ब नहीं करना चाहता।मोदी के लिए भी यह फायदेमंद है कि वे 2024 तक ममता को डिस्टर्ब न करें।'

# शिवराज सरकार की लाडली बहना योजना के लिए अब नहीं होगी आय प्रमाण पत्र की जरूरत

भोपाल, 3 मार्च (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश की शिवराज सरकार की लाडली बहना योजना को लेकर आवेदन 5 मार्च से भरना शुरू कर दिए जाएंगे. इसके पहले सरकार ने लाडली बीमा योजना की पात्रता को लेकर एक गाइडलाइन जारी की है. हालांकि विदिशा कलेक्टर उमाशंकर भार्गव ने सोशल मीडिया के माध्यम से स्पष्ट कर दिया है कि केवल आधार और समग्र आईडी से ही काम चल जाएगा. बहनों को आय और निवास प्रमाण पत्र की कोई आवश्यकता नहीं लगेगी. मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की लाडली बहना योजना की घोषणा के बाद कांग्रेस भी पसोपेश में है. लाडली बहना योजना के जरिए सरकार एक करोड़ परिवारों तक एक हजार रुपये प्रति माह पहुंचाएगी. इस योजना को लेकर बजट में भी 8000 करोड़ रुपए की स्वीकृति हो चुकी है. लाडली बहना योजना को लेकर सरकार की ओर से कई शर्तें भी जारी की गई, इसमें मध्य प्रदेश का निवासी होना अति आवश्यक है.

**नहीं होगी आय प्रमाण पत्र की जरूरत**

इसके अलावा यह भी कहा गया है कि बहना की आय साल भर में ढाई लाख से अधिक नहीं होना चाहिए. इसके अलावा 5 एकड़ से अधिक जमीन भी नहीं होना चाहिए. दूसरी तरफ विदिशा कलेक्टर उमाशंकर भार्गव का सोशल मीडिया पर एक संदेश तेजी से वायरल हो रहा है, इसमें कलेक्टर ने यह बताया है की लाडली बहना योजना का लाभ लेने के लिए स्थानीय निवासी और आय प्रमाण पत्र की कोई आवश्यकता नहीं है. समग्र आईडी और आधार के माध्यम से ही दस्तावेजों की पूर्ति हो जाएगी.

**जून माह से खाते में आने लगेगी राशि**

5 मार्च से लाडली बहना योजना के फार्म पूर्व मध्य प्रदेश के सभी जिलों में भराए जाएंगे. इसके बाद जून माह से खाते में राशि आना शुरू हो जाएगी. सरकार को उम्मीद है कि इस योजना के जरिए एक बार फिर बीजेपी की सत्ता में वापसी होगी. मध्य प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री और वरिष्ठ विधायक पारस जैन इस बात को स्पष्ट कर चुके हैं कि लाडली बहना योजना सरकार के लिए संजीवनी का काम करेगी. सरकार इस योजना के माध्यम से घर-घर में अपने पेठ जमाएगी. इस बार बीजेपी ने मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव को लेकर 204 क नारा दिया है.

## बाल सुधार गृह से नाबालिग फरार, हत्या के मामले में है आरोपी

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। दिल्ली के पॉश सिविल लाइंस इलाके में पिछले वर्ष एक मई को हुई नामी बिल्डर राम किशोर अग्रवाल की हत्या और लूट में शामिल एक नाबालिग आरोपी, बाल सुधार गृह से फरार हो गया है. पुलिस सूत्रों के मुताबिक, आरोपी हत्या के मामले में जुवेनाइल होम में था और उसकी उम्र अब 16 साल से अधिक है. पकड़े जाने के बाद उसे मजनू का टीला स्थित बाल सुधार गृह में रखा गया था. यहां से वह कुछ दिन पहले कटीले तार लगी दीवार फांदकर भाग निकला. प्रशासन ने नाबालिग के भागने की सूचना पुलिस को दी, जिसके बाद पुलिस उसकी तलाश में जुट गई है.

# आरएसएस चीफ मोहन भागवत बोले

## जो गलत है वो ग्रंथ में अलग से डाला गया , दोबारा हो समीक्षा

नागपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने नागपुर में कहा कि च्वॉइस हमारा है और हिंदू धर्म च्वॉइस सिखाने वाला धर्म है। उन्होंने कहा कि यह संतुलन देने वाला धर्म है। भागवत ने कहा, हमारा धर्म विज्ञान के अनुसार चलता है और विज्ञान को इंसान के लिए लाभकारी होने के लिए उस धर्म की आवश्यकता है, इसलिए विज्ञान सामने लाना हमारी परंपराओं में है।

**'हमारे पूर्वज परंपरा से चलते आए'**

भागवत ने कहा, दुनिया के हर विषय में हमारे पास हमारे पूर्वजों का किया कुछ न कुछ है, वो परंपरा से चलते आए। पहले हमारे यहां ग्रंथ नहीं थे, मौखिक परंपरा से चलता आ रहा था। बाद में ग्रंथ इधर-उधर हो गए और कुछ स्वार्थी लोगों ने ग्रंथ में कुछ-कुछ घुसाया जो गलत है। उन ग्रंथों, परंपराओं के ज्ञान की फिर एक बार समीक्षा जरूरी है। 'ज्ञान की हमारी संस्कृति विखंडित हो गई' उन्होंने कहा, हमारे पास परंपरागत रूप से जो है, उसके बारे में हर व्यक्ति के पास कम से कम मूलभूत जानकारी होनी चाहिए। इसे शिक्षा प्रणाली और लोगों के बीच आपसी बातचीत से हासिल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक दृष्टि से भारत में चीजों को देखने का वैज्ञानिक नजरिया रहा है, लेकिन आक्रमणों के कारण हमारी व्यवस्था नष्ट हो गई और ज्ञान की हमारी संस्कृति विखंडित हो गई।

**'ज्ञान चाहने वाले को ज्ञान ही दिया जाए'**

आरएसएस चीफ ने आगे कहा कि ज्ञान चाहने वाले को ज्ञान ही दिया जाए। ज्ञान समाज के हर वर्ग तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि अन्य लोग बिना अनुमति ज्ञान लेना चाहते हैं, तो ऐसे में जरूरी है कि हमें कम से कम यह पता हो कि हमारी परंपरा में कौन-कौन सी बीतें निहित हैं। भागवत ने कहा कि ग्रंथों परंपराओं के ज्ञान की फिर एक बार समीक्षा वक्त की मांग है।

## विधानसभा में 58 साल बाद अदालत

# 6 पुलिसकर्मियों को सजा

## एक दिन लॉकअप में बंद रहेंगे, 18 साल पहले लाठीचार्ज करके भाजपा विधायक का पैर तोड़ा था

लखनऊ, 3 मार्च (एजेंसियां)। यूपी विधानसभा में 58 साल बाद शुक्रवार को अदालत लगी। कटघरे में 6 पुलिसकर्मी पेश हुए। विशेषाधिकार हनन और सदन की अवमानना के दोषी इन सभी पुलिसकर्मियों को विधानसभा अध्यक्ष ने एक दिन की सजा सुनाई है। सजा 3 मार्च रात 12 बजे तक की होगी। इस दौरान सभी पुलिसकर्मियों को विधानसभा में बनी सेल के लॉकअप में रखा जाएगा। सजा पर फैसला होने के बाद मार्शल सभी पुलिसकर्मियों को सदन से लॉकअप में ले गए। इससे पहले विधानसभा में 1964 में अदालत लगी थी। शुक्रवार को सदन में लगी अदालत के दौरान सतीश महाना ने सभी दलों के नेताओं से इस पर उनका पक्ष पूछा। ज्यादातर ने अध्यक्ष को निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया। फिर दोषी पुलिसकर्मियों को अपनी सफाई में बोलने का मौका दिया। इसमें तत्कालीन सीओ अब्दुल समद ने सदन से माफी मांगी। कहा कि ऐसी गलती दोबारा नहीं होगी। इससे पहले अखिलेश से जब सदन के बाहर इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने सिर्फ इतना कहा- यह गलत परंपरा है। विशेषाधिकार हनन और सदन की अवमानना का यह मामला 2004 का है। तब सपा की सरकार थी, मुलायम सिंह मुख्यमंत्री थे। कानपुर में बिजली कटौती के विरोध में सतीश महाना (जो अब विधानसभा अध्यक्ष हैं) धरने पर बैठे थे। उनके साथ तब के स्थानीय भाजपा विधायक लिल विश्नोई और कार्यकर्ता थे। सुनवाई की प्रक्रिया पूरी होने के बाद 17 साल पहले सभी पुलिसकर्मियों को दोषी ठहराया जा चुका था।

## भगोड़े कारोबारी विजय माल्या को एससी से झटका, वकील ने कहा- वह लंबे अरसे से उनके संपर्क में नहीं हैं

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। भगोड़े कारोबारी विजय माल्या की याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दी है. साल 2018 में दाखिल इस याचिका में माल्या ने खुद को 'भगोड़ा' घोषित करने को लेकर मुंबई की कोर्ट में चल रही कार्रवाई को चुनौती दी थी. माल्या के वकील ने कोर्ट को बताया कि वह लंबे अरसे से उनके संपर्क में नहीं हैं, इसलिए जिरह नहीं कर सकते. इससे पहले भी माल्या के कुछ मुकदमे इसी आधार पर खारिज हुए हैं. इस मामले में भी 2019 में ही मुंबई की ईडी कोर्ट उसे 'भगोड़ा' घोषित कर चुकी है. 2018 में दाखिल याचिका बिना जिरह के अब तक लंबित थी. सुप्रीम कोर्ट ने उसे शुक्रवार (3 मार्च) को खारिज कर दिया.

# देश में बढ़ रहा है कोरोना का ग्राफ

## 283 नए मामले आए सामने

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। दुनिया लगभग बीते तीन सालों से कोविड-19 महामारी से जूझ रही है। जिसने अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान पहुंचाया है। वर्तमान में भी कोविड वायरस बना हुआ है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने आज सुबह 8 बजे कोरोना के नए आंकड़े जारी किए हैं। जिसके मुताबिक भारत में कोरोना वायरस संक्रमण के 283 नए मामले सामने आए हैं। जबकि कोरोना वायरस के सक्रिय मामले बढ़कर 2,525 के पास पहुंच गए है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी किए गए बीते दिन के आंकड़ों के मुताबिक देश में कोविड के सक्रिय मामलों की संख्या 2,439 थी, जबकि 01 मार्च को इनकी संख्या 2,335 दर्ज की गई थी। तो वहीं सक्रिय मामले आज बढ़ कर 2,525 के पास पहुंच गए है। जबकि 1 मार्च को 268 नए मामले सामने आए थे, जबकि 28 फरवरी को 240 नए मामले मिले थे। इन आकंड़ो से यह स्पष्ट हो रहा है कि कोविड के मामले में फिर से इजाफा होने लगा है। कोरोना वायरस से मरने वालों की संख्या 5 लाख 30 हजार 772 के आसपास पहुंच गई है। तो वहीं केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने यह भी कहा कि कोविड के कुल मामले की संख्या 4.46 करोड़ (4,46,87,162) दर्ज की गई है। तो वहीं राष्ट्रीय रिकवरी दर 98.80 प्रतिशत दर्ज की गई है।

# राहुल गांधी पर सिंधिया का तंज, कहा

## तीन राज्यों के नतीजों को देखकर कांग्रेस का कौन सा लुक बाकी है

ग्वालियर, 3 मार्च (एजेंसियां)। दो दिवसीय प्रवास पर ग्वालियर आए केंद्रीय नागरिक उड्डयन एवं इस्पात मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने राहुल गांधी के विदेश में जाते ही बदले हुए लुक पर निशाना साधते हुए कहा कि लुक और परिचय की बात में नहीं करूंगा। मैं यही कहूंगा कि तीन राज्यों में जो चुनाव के नतीजे आ रहे हैं, उससे कांग्रेस का क्या लुक बाकी है। सिंधिया ने शहर में स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के अंतर्गत हो रहे कार्यों का निरीक्षण किया, वहीं उन्होंने स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के अंतर्गत हो रहे विकास कार्यों के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को धन्यवाद दिया है। राज्य सरकार के बजट को भी सिंधिया ने जनता के हित में बताया है। ग्वालियर के जलालपुर हाईवे पर बन रहे आईएसबीटी का जायजा लिया। महाराज बाड़े पर बन रही मल्टीलेवल पार्किंग पेडस्ट्रियन जोन के साथ गोरखी के डिजिटल म्यूजियम का निरीक्षण करने के साथ ही आर्ट्स एंड क्राफ्ट सेंटर बनाने की योजना के बारे में जानकारी दी। सिंधिया ने हाल ही में बंद हुई सौ साल पुरानी शासकीय प्रेस का भी निरीक्षण किया। सिंधिया ने खासतौर पर प्रेस की ऐतिहासिक स्मृतियों को सहेज कर रखने में अपनी रुचि जाहिर की। सिंधिया ने खुद सौ साल पुरानी पंचिंग मशीन का डिसक्रिप्शन दिया, उन्होंने शासकीय प्रेस में रखी सौ वर्ष से ज्यादा पुरानी मशीनों का म्यूजियम बनाने की बात कही। वहीं, उन्होंने शासकीय प्रेस के ड्रेनेज सिस्टम और निर्माण के विषय में जानकारी दी, सिंधिया ने थीम रोड के निरीक्षण के दौरान घटिया निर्माण और प्रोजेक्ट में देरी के चलते नाराजगी भी जाहिर की।

वहीं, बजट पर सिंधिया ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए एक लाख दो हजार करोड़ रुपये का बजट प्रावधान रखा गया है। शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिकता के आधार पर 250 सीएम राइज स्कूल और 50 मेडिकल कॉलेज का प्रावधान इस बजट में है, अटल एक्सप्रेस वे के जरिए नर्मदा के किनारे लॉजिस्टिक हब बनेगा। कृषि के क्षेत्र में भी बजट के आवंटन में बढ़ोतरी हुई है, किसानों को सस्ती बिजली देने के लिए 13 हजार करोड़ रुपये और दो हजार करोड़ रुपये फसल बीमा योजना के लिए रखा गया है, चार हजार नागरिकों से पूछ कर ये बजट बनाया गया है।

# कांग्रेस की रैली में 500-500 रुपये में जुटाई जा रही भीड़! सिद्धारमैया

तिरुवनंतपुरम, 3 मार्च (एजेंसियां)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सिद्धारमैया का एक कथित वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसमें वह पार्टी नेताओं से भीड़ जुटाने के लिए लोगों को 500 रुपये देकर रैलियों में ले जाने के लिए कह रहे हैं. हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि वीडियो कब का है. ऐसा लगता है कि जब पूर्व मुख्यमंत्री मई में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी की चल रही "प्रजा ध्वनि" बस यात्रा में बेलगावी में थे, तब रिकॉर्ड किया गया था. वीडियो में, सिद्धारमैया को केपीसीसी के कार्यकारी अध्यक्ष सतीश जरकीहोली, विधायक लक्ष्मी हेब्बलकर और एमएलसी चन्नाराज हट्टीहोली के साथ बातचीत करते देखा जा सकता है.

**हमें पैसे देने की कोई जरूरत नहीं: कांग्रेस**

वीडियो पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार ने कहा कि यह सच नहीं है, हम किसी को प्रोत्साहित नहीं कर रहे हैं, हमें पैसे देने की कोई जरूरत नहीं है. कांग्रेस में ऐसी प्रथा नहीं है.

**पैसे देकर भीड़ जुटाना कांग्रेस की परंपरा**

वहीं बेलगावी में मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने कहा कि पैसे देना और लोगों को लाना कांग्रेस की परंपरा रही है, इसमें कुछ भी नया या आश्चर्यजनक नहीं है. यह उनकी परंपरा है और लोग इसके बारे में जानते हैं. कांग्रेस इस तरह की चीजों में लिप्त रही है और अब यह सामने आ गया है.

**मेरी लाश भी बीजेपी और आरएसएस के साथ नहीं जाएगी**

बता दें कि कांग्रेस नेता और कर्नाटक के पूर्व सीएम सिद्धारमैया ने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और जनता दल-सेक्युलर (जेडी-एस) पर निशाना साधते हुए कहा था कि इन पार्टियों के पास कोई विचारधारा नहीं है. वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर भी उन्होंने जमकर हमला बोला था. पूर्व सीएम ने कहा कि अगर यह लोग (बीजेपी) मुझे राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री भी बना दें, तब भी मैं इनके साथ नहीं जाऊंगा. यहां तक कि मेरी लाश भी बीजेपी और आरएसएस के साथ नहीं जाएगी.

# चंडीगढ़ मनाली एनएच पर पलटी बस

## युवती की मौत, दिल्ली के 37 छात्र घायल

बिलासपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। बिलासपुर के जबली के पास चंडीगढ़ मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग पर हरियाणा नंबर की बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हादसे में एक युवती की मौत हो गई। जिसकी पहचान कौशांगी आर्या के तौर पर हुई है। वहीं एक गंभीर घायल श्वेता गोपीनाथ को पीजीआई रेफर किया गया है। घायलों का उपचार बिलासपुर अस्पताल में चल रहा है। बस में छात्रों समेत 41 लोग सवार थे। घायल छात्र दिल्ली के कमला नेहरू और जीजस एंड मेरी कॉलेज के विद्यार्थी हैं। जोकि शैक्षणिक भ्रमण पर जा रहे थे। करीब 37 विद्यार्थी घायल हैं। पुलिस के मुताबिक बस की तेज रफ्तार के कारण हादसा हुआ है। डीसी आबिद हुसैन सादिक घायलों को देखने अस्पताल पहुंचे हैं। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने बिलासपुर जिला के कुनाला में हुए निजी बस हादसे पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। इस दुर्घटना में एक युवती की मृत्यु तथा 37 अन्य लोग घायल हुए हैं। मुख्यमंत्री ने जिला प्रशासन को घायलों के समुचित उपचार एवं प्रभावितों को तुरंत राहत प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। सीएम ने दुर्घटना में मृतक युवती के परिजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की है।

## 'पिता की गंदी हरकतों के बारे में मां को बताया कुछ नहीं हो पाया' तो नाबालिग ने की आत्महत्या

पालघर, 3 मार्च (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के पालघर में एक लड़की ने आत्महत्या की है. पालघर के वसई तहसील में रहने वाली 14 साल की नाबालिग लड़की ने एक सुसाइड नोट भी छोड़ा है. लड़की ने अपनी खुदकुशी की वजह अपने पिता को बताया है. उसने अपने सुसाइड नोट में पिता पर यौन शोषण का आरोप लगाया है. पीड़िता ने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या की है. पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी. उन्होंने बताया कि पुलिस को एक सुसाइड नोट बरामद हुआ, जिसमें किशोरी ने अपने पिता पर उसका यौन शोषण करने का आरोप लगाया है. अधिकारी के मुताबिक, किशोरी ने अपने घर पर तीन दिन पहले खुदकुशी कर ली थी. उसके पास से एक सुसाइड नोट बरामद हुआ था. संबंधित पुलिस अधिकारी के मुताबिक, किशोरी के शव को पोस्टमार्टम के लिए सरकारी अस्पताल भेजा गया था और मामले में दुर्घटनावश मौत का मामला दर्ज किया गया था.

# नशे में चढ़ा रफ्तार का जुनून

## बिल्डर के बेटे ने दंपति पर चढ़ाई बीएमडब्ल्यू

अहमदाबाद, 3 मार्च (एजेंसियां)। शराब के नशे में धुत एक बीएमडब्ल्यू चालक ने सोला इलाके में बाजार से घर लौट रहे एक दंपत्ति को रौंद दिया. वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी करीब एक किमी आगे जाकर कार को लावारिश छोड़ दिया और खुद मौके से फरार हो गया. वारदात बुधवार की रात करीब साढ़े नौ बजे बीआर पार्क के पास की है. सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने बुरी तरह से जख्मी दंपत्ति को अस्पताल पहुंचाया है. पुलिस ने कार बरामद करने के साथ ही आरोपी की पहचान कर ली है. हालांकि अभी तक आरोपी की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है. पुलिस के मुताबिक आरोपी शहर के एक प्रतिष्ठित बिल्डर का बेटा सत्यम शर्मा है. पुलिस उसकी तलाश कर रही है. पुलिस ने आरोपी की कार को जब्त कर लिया है. उधर, पीड़ित दंपत्ति ने पुलिस में आरोपी सत्यम शर्मा के खिलाफ पुलिस में लापरवाही से गाड़ी चलाने, नशे की हालत में गाड़ी चलाने व तेज रफ्तार में गाड़ी चलाते हुए दूसरे लोगों को टक्कर मारने की धाराओं में नामजद केस दर्ज कराया है।

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

# मेरा हैदराबाद

सुविचार

धन दौलत और शोहरत आपको कभी खुशहाल नहीं बना सकते...



## रसोई गैस कीमतों में बढ़ोत्तरी को लेकर बीआरएस का प्रदर्शन जारी

### सड़क पर लकड़ी जलाकर मंत्रियों, सांसदों ने खाना बनाया, महिलाओं ने खाली सिलेंडरों के साथ किया विरोध प्रदर्शन

रसोई गैसे बढ दाम के विरोध में जुबली बस स्टेशन पर विरोध प्रदर्शन करते हुए मंत्री तलसानी श्रीनिवास यादव। साथ में हैं बोर्ड के पूर्व उपाध्यक्ष महेश्वर रेड्डी, श्रीनिवास, नागेश, पार्षद नलिनी किरन व अन्य।

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना की सत्तारूढ़ भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) ने रसोई गैस की कीमतों में बढ़ोतरी के खिलाफ राज्य भर में विरोध प्रदर्शन शुक्रवार को लगातार दूसरे दिन भी जारी रखा। मंत्रियों, सांसदों, राज्य के विधायकों औरबीआरएस नेताओं ने विभिन्न स्थानों पर विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव के आह्वान पर सभी विधानसभा क्षेत्रों के मुख्यालयों में विरोध प्रदर्शन आयोजित किए गए। पोस्टर लेकर और भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुए, प्रदर्शनकारियों ने या तो धरना दिया या रैलियां निकालीं। उन्होंने विरोध के निशान के रूप में जलाऊ लकड़ी पर खाना भी बनाया।

सत्तारूढ़ पार्टी ने हैदराबाद में टैंक बंड में अंबेडकर प्रतिमा के पास भारी विरोध प्रदर्शन किया। राज्य के गृह मंत्री मोहम्मद महमूद अली ने स्थानीय विधायक दानम नागेंदर द्वारा आयोजित विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। केंद्र से बढ़ोतरी वापस लेने की मांग को लेकर बड़ी संख्या में महिलाओं ने खाली सिलेंडरों के साथ विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। परिवहन मंत्री पी. अजय कुमार ने खम्मम में एक विशाल विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया। उन्होंने एलपीजी की कीमतों में एक और बढ़ोतरी के साथ आम आदमी पर और बोझ डालने के लिए केंद्र की मोदी सरकार की आलोचना की। खम्मम जिले के तल्लाडा में विधायक सांद्रा वेंकट वीरैया ने विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया। उन्होंने प्रतीकात्मक विरोध के रूप में अपने सिर पर जलाऊ लकड़ी ढोई। कुछ स्थानों पर अभिनव विरोध देखा गया क्योंकि प्रदर्शनकारियों ने "सिलेंडरों को लटका दिया" या "अंतिम संस्कार" किया।

सिकंदराबाद के जुबली बस स्टेशन पर विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए,पशुपालन मंत्री तलसानी श्रीनिवास यादव ने मांग की कि मोदी सरकार को कीमतों पर लगाम लगाने में विफल रहने के कारण पद छोड़ देना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अंबानी और अडानी को बचाने के लिए एलपीजी के दाम बढ़ा रही है।' यादव ने दावा किया कि बीजेपी 2024 का चुनाव हार जाएगी।

## नलगोंडा जिले में टीबी के मामले बढ़े

नलगोंडा, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। नलगोंडा जिले में 2021 की तुलना में 2022 में क्षय रोग (टीबी) के मामलों में 47 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2021 में, 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों में 109 टीबी के मामले दर्ज किए गए, जबकि 2022 में यह संख्या 183 थी, जो कि 63 प्रतिशत की वृद्धि है। वयस्कों में टीबी के मामले भी 2021 में 1,871 से बढ़कर 2022 में 2,732 हो गए, जिसमें 26 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। आधिकारिक आंकड़े बताते हैं कि 18 साल से ऊपर के लोगों की तुलना में बच्चों और किशोरों में टीबी के मामले तेजी से बढ़े हैं।

18 साल से कम उम्र के लोगों में लड़कों की तुलना में लड़कियां अधिक टीबी से प्रभावित हो रही थीं। लेकिन, 2021 और 2022 में महिलाओं की तुलना में 18 वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों में टीबी के मामले अधिक थे।

कई टीबी मरीज निजी अस्पतालों में इलाज करा रहे हैं, जिसकी जानकारी जिला टीबी कंट्रोल यूनिट को नहीं दी गई।

## हैदराबाद में रहने वाले सभी राज्यों की संस्कृति व परंपराओं से जुड़े लोगों का सम्मान : केसीआर

### कर्नाटक साहित्य मंदिर जीर्णोद्धार के लिए 5 करोड़ स्वीकृत

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने स्पष्ट किया कि राज्य सरकार अन्य सभी राज्यों और क्षेत्रों के लोगों की साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मान करती है, जो दशकों से हैदराबाद में बसे हुए हैं। सीएम केसीआर ने कहा कि सरकार हैदराबाद के जीवन के तरीके को संरक्षित करने के अपने प्रयासों को जारी रखे हुए है, जो विभिन्न समुदायों के निवास के साथ गंगा जमुना तहज़ीब का प्रतीक है।

सीएम केसीआर ने कन्नडियों के लिए हैदराबाद में साहित्य वेदिका को पुनर्स्थापित करने का फैसला किया। मुख्यमंत्री ने यह फैसला अंबरपेट विधायक कलेरू वेंकटेश और हैदराबाद के साथ-साथ राज्य भर में रहने वाले कर्नाटक निवासियों के अनुरोध पर लिया। सीएम केसीआर ने हैदराबाद के काचीगुडा में 'कर्नाटक साहित्य मंदिर' के जीर्णोद्धार के लिए 5 करोड़ रुपये मंजूर किए। मुख्यमंत्री ने स्थानीय विधायक और अधिकारियों को इस संबंध में कार्रवाई करने का आदेश दिया। सीएम केसीआर ने वेंकटेश को बुनियादी ढांचे को विकसित करने और शैत्य मंदिर में सभागार को डिजाइन करने का सुझाव दिया ताकि इसका उपयोग साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ सामुदायिक जरूरतों के लिए किया जा सके। विधायक कलेरू वेंकटेश ने प्रगति भवन में सीएम केसीआर से मुलाकात की और मुख्यमंत्री को उनके अनुरोध पर 5 करोड़ रुपये मंजूर करने के लिए धन्यवाद दिया।

## सार्वजनिक सुरक्षा और अन्य प्रशासनिक मुद्दों पर सीपी ने की बैठक

### गिरफ्तारी के अभाव में लंबित सभी अपराधों की समीक्षा की

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। नगर पुलिस आयुक्त सीवी आनंद ने सार्वजनिक सुरक्षा और अन्य प्रशासनिक मुद्दों से संबंधित कई महत्वपूर्ण मामलों पर चर्चा करने के लिए सभी अतिरिक्त डीसीपी और उससे ऊपर के रैंक के अधिकारियों के साथ एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। गिरफ्तारी के अभाव में लंबित सभी अपराधों की समीक्षा की गई। जांच, एफएसएल रिपोर्ट, चार्जशीट और डीसीपी को उन पर विशेष रूप से ध्यान देने को कहा गया। हैदराबाद सिटी पुलिस के पुनर्गठन और आवश्यक नए आवास, कई सीसीटीवी परियोजनाओं, कैमरों की कार्य स्थिति और नए कैमरे लगाने के लिए प्रत्येक थानेदार और डीसीपी के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाने पर चर्चा हुई। डी-कैम (ड्रोन और कैमरा रखरखाव संगठन) नामक एक नया विंग अब सभी सीसीटीवी कैमरा और ड्रोन मरम्मत, परियोजनाओं, निष्पादन से निपटने के लिए स्थापित किया गया है, जिसका नेतृत्व अतिरिक्त डीसीपी/एसीपी रैंक के अधिकारी द्वारा किया जाएगा।

सीपी ने कहा कि सीसीटीवी कवरेज की कमी वाले ग्रे स्पॉट की पहचान करने और मौजूदा कैमरों की कार्यशील स्थिति की जांच करने के लिए पूरे शहर में एक स्वतंत्र थर्ड पार्टी ऑडिट किया जाएगा। सीपी ने अपराध की रोकथाम और पहचान में सीसीटीवी के महत्व पर जनता को जागरूक करने को कहा। सीपी आनंद ने ऑनलाइन एम्यूजमेंट लाइसेंस सिस्टम को मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया पर संतोष जताया, जिसे पिछले कुछ हफ्तों में 1183 से ज्यादा आवेदन मिले हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, आईटी सेल को जनता की सुविधा के लिए शस्त्र लाइसेंस जारी करने जैसी अधिक पुलिस सेवाओं को ऑनलाइन लाने का काम सौंपा गया था।

होली, शब-ए-बारात, रमजान, श्रीराम नवमी और हनुमान जयंती जैसे त्योहारों से पहले - सीपी आनंद ने सांप्रदायिक और उपद्रवी तत्वों पर नकेल कसने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि अधिक युवाओं के साथ नई शांति समितियां स्थापित की जानी चाहिए। उन्होंने अपने प्रतिनिधियों को फिटकॉप कार्यक्रम के माध्यम से स्वास्थ्य और कल्याण की दिशा में और अधिक कार्यक्रम शुरू करने और बल के शहीद नायकों के घरों का समर्थन करने के लिए, हाल ही में एक युवा और फिट कांस्टेबल की मौत के आलोक में पीसीआर शिक्षा की आवश्यकता का निर्देश दिया। इसके अलावा, बैठक में गश्त और ब्लू कोल्ट्स के प्रदर्शन, नाइट राउंड सिस्टम के प्रभावी कामकाज, 2023 की कार्य योजनाओं की प्रगति के बारे में विस्तार से बताया गया। बैठक के दौरान एचसीएससी गतिविधियों, ई-ऑफिस कार्यान्वयन और अन्य मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक में अतिरिक्त सीपी कानून-व्यवस्था विक्रम सिंह मान, अतिरिक्त एसीपी ट्रैफिक जी सुधीर बाबू, अतिरिक्त सीपी क्राइम एआर श्रीनिवास, बी.परिमाला हाना नूतन आईपीएस जेटीसीपी एडमिन, एम.श्रीनिवासुलु जेटीसीपी कार मुख्यालय हैदराबाद और अन्य डीसीपी बैठक में शामिल रहे।

## जी-20 शिखर सम्मेलन की तैयारी पर समीक्षा बैठक

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। जी-20 शिखर सम्मेलन की तैयारी बैठक आज साइबराबाद पुलिस आयुक्तालय में आयोजित की गई। इस बैठक में मुख्य रूप से जी20 शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के आवास, परिवहन, अभिगम नियंत्रण, जांच, होटल सेवाओं और अन्य तकनीकी पहलुओं पर चर्चा की गई। बैठक में चर्चा की गई कि जब भी प्रतिनिधि आएंगे, उन्हें ट्रैफिक से कोआर्डिनेट किया जाएगा और एस्कॉर्ट पायलट मुहैया कराया जाएगा। पुलिस नियंत्रित पहुंच बिंदु जहां सेट किया गया है और प्रतिनिधियों और अन्य लोगों को उनके आईडी कार्ड के आधार पर अनुमति देता है।

वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थलों पर ही खड़ा करना चाहिए। समिट आवर्स के दौरान ट्रैफिक पलों पर नजर रखी जाए। सीपी साइबराबाद ने मैदान पर आयोजकों और पुलिस के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित किया। शमशाबाद हवाई अड्डे पर प्रतिनिधियों के आगमन स्थलों की निगरानी एलएंडओ और ट्रैफिक पुलिस द्वारा की जाएगी ताकि सभा स्थल तक सुचारू रूप से जाना सुनिश्चित किया जा सके। होटल के कर्मचारियों के चरित्र और पूर्ववृत्त के सत्यापन के बारे में और कार्यक्रम स्थल पर चर्चा की। सभी मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई और संबंधित अधिकारियों को आगामी जी20 शिखर सम्मेलन के लिए कार्य योजना तैयार करने का निर्देश दिया गया। बैठक में साइबराबाद पुलिस आयुक्त स्टीफन रवींद्र, संयुक्त सीपी अविनाश मोहंती, साइबराबाद ट्रैफिक जेटीसीपी नारायण नाइक, डीसीपी ट्रैफिक हर्षवर्धन, डीसीपी (प्रशासन) योगेश गौतम, डीसीपी माधापुर शिल्पावल्ली , शमशाबाद डीसीपी नारायण रेड्डी, एडीसीपी सीएसडब्ल्यू वेंकट रेड्डी, एडीसीपी एसबी रवि कुमार,एडीसीपी माधापुर एन नरसिम्हा रेड्डी, माधापुर एसीपी रघुनंदन राव, पीएसआईओसी एसीपी रविंदर, मधापुर जोन कानून व्यवस्था एवं यातायात निरीक्षकों ने भाग लिया।

## मां के डांटने पर किशोरी ने जीवन लीला समाप्त कर ली

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। रामंतापुर में एक 19 वर्षीय लड़की ने आत्महत्या कर ली, जब उसकी मां ने कथित तौर पर उसे पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित न करने के लिए डांटा था। पुलिस के मुताबिक, उप्पल के इंदिरानगर रामंतापुर की रहने वाली जी. अनुषा पिछले दो महीने से नीट परीक्षा की तैयारी कर रही थी। हालाँकि, वह कथित तौर पर पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं दिखा रही थी, जिसके बाद उसकी माँ ने कथित तौर पर उसे डांटा। बुधवार की सुबह करीब साढ़े पांच बजे किशोरी घर से निकली और लापता हो गई। परिजनों ने उप्पल थाने में शिकायत की, जिसके बाद पुलिस ने उसकी तलाश शुरू कर दी है।

गुरुवार को अनुषा का शव रामंतापुर झील में मिला। शव को बाहर निकाल लिया गया और बाद में पोस्टमार्टम के लिए गांधी अस्पताल की मोर्चरी में रख दिया गया। मामला दर्ज है।

## अखिल भारतीय सार्वजनिक परिवहन निगम कबड्डी टूर्नामेंट शुरू

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के उपनगर हकीमपेट स्थित ट्रांसपोर्ट एकेडमी में गुरुवार को ऑल इंडिया पब्लिक ट्रांसपोर्ट टूर्नामेंट-2023 का आगाज हो गया। तीन दिवसीय टूर्नामेंट का उद्घाटन एपीएसआरटीसी के एमडी द्वारका तिरुमाला राव ने टीएसआरटीसी के एमडी वीसी सज्जनार और के साथ किया। बाद में उन्होंने महाराष्ट्र आरटीसी और तेलंगाना आरटीसी टीमों के बीच कबड्डी मैच देखा। पूर्व में आयोजित कार्यक्रम में एपीएसआरटीसी के एमडी द्वारका तिरुमाला राव आईपीएस ने कहा कि यह सराहनीय है कि केंद्र सरकार की संस्था एसोसिएशन ऑफ स्टेट रोड ट्रांसपोर्ट अंडरटेकिंग्स (एएसआरटीयू) ने कबड्डी टूर्नामेंट का आयोजन किया। उन्होंने कहा कि आरटीसी कर्मचारी कर्तव्य के निर्वहन में समर्पित सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। खाने की अच्छी आदतें स्थापित करें। अन्यथा स्वास्थ्य संबंधी समस्या उत्पन्न होने की कोई संभावना नहीं है। इसलिए आरटीसी कर्मचारियों को अपने दैनिक जीवन में और सुधार करने की जरूरत है। स्वास्थ्य के लिए योग और ध्यान करना चाहिए। आपको किताबें पढ़नी चाहिए।" द्वारका तिरुमाला राव ने सुझाव दिया। वह याद रखना चाहते थे कि अगर सोचने का तरीका अच्छा है, तो स्वास्थ्य भी अच्छा है। "खेलों में जीतना महत्वपूर्ण नहीं है। प्रतियोगिताओं में, प्रत्येक एथलीट को सर्वश्रेष्ठ परिणाम के लिए प्रयास करना चाहिए। उनकी क्षमता का सर्वश्रेष्ठ। खेल का आनंद लेना चाहिए। लक्ष्य तक पहुंचने के लिए यात्रा बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि देश में किसी अन्य आरटीसी के पास टीएसआरटीसी की हकीमपेट ट्रांसपोर्ट अकादमी जैसी सुविधाएं नहीं हैं। टीएसआरटीसी के एमडी वीसी सज्जनार ने इस कबड्डी टूर्नामेंट की मेजबानी करने और उद्घाटन के लिए मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि "खेलों में जीत को समान रूप से देखा जाना चाहिए। खेल शारीरिक और मानसिक शांति प्रदान करते हैं।

## नदियों को आपस में जोड़ने की बैठक में छत्तीसगढ़ को आमंत्रित करे एनडब्ल्यूडीए : तेलंगाना

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना सरकार ने राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी (एनडब्ल्यूडीए) से अपील की है कि वह हैदराबाद में 6 मार्च को होने वाली नदियों को आपस में जोड़ने के लिए होने वाली टास्क फोर्स की बैठक में छत्तीसगढ़ को आमंत्रित करे, क्योंकि प्रस्तावित गोदावरी-कावेरी नदी जोड़ो परियोजना के लिए उसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण है। एनडब्ल्यूडीए के निदेशक भूपाल सिंह तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मध्य प्रदेश और अन्य राज्यों के सचिवों के साथ नदी संपर्क से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करेंगे। तेलंगाना के मुख्य अभियंता सी मुरलीधर ने शुक्रवार को एनडब्ल्यूडीए को पत्र लिखकर बैठक में छत्तीसगढ़ को आमंत्रित करने को कहा है। मुरलीधर ने अपने पत्र में कहा है कि चूंकि गोदावरी (इंचमपल्ली)-कावेरी (ग्रैंड एनीकट) लिंक के प्रस्ताव में छत्तीसगढ़ के 141 टीएमसी के अप्रयुक्त हिस्से का हस्तांतरण शामिल है, इसलिए उक्त बैठक के लिए छत्तीसगढ़ की उपस्थिति अनिवार्य है।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय जल आयोग तेलंगाना की परियोजनाओं के लिए पानी की उपलब्धता का आकलन करते समय उप-बेसिन में पुनर्जीवित प्रवाह की उपलब्धता को स्वीकार नहीं कर रहा है, लेकिन एसएसपी के बीच जल संतुलन का आकलन करते समय एनडब्ल्यूडीए ऐसे वापसी प्रवाह (217 टीएमसी) पर भरोसा कर रहा है।

## टीएस एमसेट 2023 में कोई अंग्रेजी संस्करण का पेपर नहीं

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना स्टेट इंजीनियरिंग, एग्रीकल्चर एंड मेडिकल कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (टीएस एमसेट)-2023 में कोई विशेष अंग्रेजी माध्यम का प्रश्न पत्र नहीं होगा, जो 7 से 11 मई तक आयोजित किया जाएगा। छात्रों को प्रश्न पत्र का माध्यम अंग्रेजी और तेलुगु तथा अंग्रेजी-उर्दू के बीच चुनना होगा।

जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी (जेएनटीयू), हैदराबाद, जो परीक्षा आयोजित कर रहा है, ने इस साल विशेष अंग्रेजी संस्करण के प्रश्न पत्र को हटाने का फैसला किया है।

बड़ी संख्या में उम्मीदवार पंजीकरण करते हैं, प्रवेश परीक्षा हर साल पांच दिनों में फैले कई सत्रों में आयोजित की जाती है और एक उम्मीदवार केवल एक सत्र में उपस्थित होने के लिए पात्र होता है। कई सत्रों में आयोजित परीक्षा के साथ, उम्मीदवार प्रत्येक सत्र में प्रश्नपत्र की कठिनाई की तुलना कर सकते हैं।

विभिन्न सत्रों में प्रश्नपत्रों के कठिनाई स्तरों में इस तरह के किसी भी बदलाव को खत्म करने के लिए, विश्वविद्यालय ने एक सामान्यीकरण प्रक्रिया अपनाई है। सामान्यीकरण की प्रक्रिया के कारण आसान सत्र के अंक मामूली रूप से कम हो सकते हैं और कठिन सत्र के अंक वैश्विक स्तर पर मामूली बढ़ सकते हैं। यह प्रत्येक सत्र में छात्रों के औसत प्रदर्शन पर निर्भर करता है। हालांकि, अधिकारियों के अनुसार, विशेष अंग्रेजी संस्करण के प्रश्न पत्र के साथ ईएएमसीईटी के लिए उपस्थित होने वाले शहरी क्षेत्रों के उम्मीदवार प्रत्येक सत्र में सामान्यीकरण के बाद उच्च समग्र औसत स्कोर कर रहे थे। यह कारक द्विभाषी भाषाओं यानी अंग्रेजी और तेलुगु और अंग्रेजी उर्दू में उपस्थित होने वाले उम्मीदवारों के स्कोर को प्रभावित कर रहा है क्योंकि उनका औसत शहरी छात्रों की तुलना में कम है। यह पैटर्न पिछले तीन एमसेट्स में देखा गया था, जिसके कारण विश्वविद्यालय को विशेष अंग्रेजी संस्करण के प्रश्न पत्र को हटाने के लिए प्रेरित किया गया था।

## साइबर जालसाजों ने केमिकल कंपनी से 7.5 लाख रुपये की ठगी की

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। साइबर जालसाजों ने अंबरपेट में एक रासायनिक निर्माण कंपनी को फंसाया और 7.5 लाख रुपये की ठगी की। बागअंबरपेट की एक रासायनिक कंपनी एबीआर ऑर्गेनिक्स लिमिटेड ने एक चीनी कंपनी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे और उनके बीच व्यापारिक बातचीत और लेनदेन हुआ है।

दोनों कंपनियों के प्रबंधन ने केवल ई-मेल के जरिए एक-दूसरे से संपर्क किया। पुलिस सूत्रों ने कहा कि जालसाजों ने चीनी कंपनी के समान एक फर्जी ई-मेल आईडी बनाई और हाल ही में पीड़ित कंपनी को एक मेल भेजा कि उनका बैंक खाता बदल दिया गया है और भविष्य के वित्तीय लेनदेन इसके माध्यम से किए जाएंगे। कुछ दिन पहले कारोबारी सौदे के तहत जालसाजों ने एबीआर कंपनी से नए बैंक खाते में 7.50 लाख रुपये भेजने को कहा, जो हो गया। हालांकि, आखिरकार कंपनी को ठगे जाने का एहसास हुआ और उसने हैदराबाद साइबर क्राइम पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

**भारत सरकार-रेल मंत्रालय**

भारतीय रेलवे सिग्नल इंजीनियरिंग और दूरसंचार संस्थान (इंडियन रेल्वेज इंस्टिट्यूट आफ सिग्नल इंजीनियरींग एंड टेलिकम्युनिकेशन्स), तारनाका रोड, सिकंदराबाद-500017(इंडिया)

PUB/0223

**रुचि की अभिव्यक्ति (इओआय) सूचना**
**सं. सीओइ/इरिसेट/01/23, दि. 02/03/2023**

रेल मंत्रालय के अधीन कार्यरत सेंटर आफ एक्सेलेंस(सीओइ) राष्ट्रीय एटीपी प्रणाली कवच के साथ मूविंग ब्लॉक का उपयोग करते हुए हेडवे सुधार के लिए कार्यात्मक आवश्यकता विनिर्देश(एफआरएस), तकनीकी विनिर्देश, डिजाइन, उत्पाद प्रोटोटाइप के विकास सहित क्षेत्रीय परीक्षणों और स्वतंत्र सुरक्षा मूल्यांकनकर्ता प्रमाणीकरण(इंडिपेंडेंट सेफ्टी एस्सेस्सर सर्टिफिकेशन) के विकास के लिए परिप्रेक्ष्य सहयोगियों से प्रतिक्रिया मांगती है।

इओआय दस्तावेज डाउनलोड करने के लिए **वेबसाइट्स:**https://iriset.railnet.gov.in
https://iriset.indianrailways.gov.in

**रुचि की अभिव्यक्ति(इओआय) की पूर्व बैठक** दि. 17.03.23 के 15.00 बजे
**प्रतिक्रिया प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि व समयः** 03.04.23 के 15.00 बजे

ओएसडी/सीओइ/इरिसेट

A0327

**केन्द्रीय विद्यालय ओ एफ मेदक एद्दुमैलारम**
**जिला संगारेड्डी तेलंगाना -502205**
**साक्षात्कार**

**योग्य और इच्छुक उम्मीदवार** 06.03.2023 (सोमवार) रिपोर्टिंग टाइम सुबह 08.30 बजे **को केन्द्रीय विद्यालय ओ एफ मेदक में** PGT (भौतिक विज्ञान/ रसायन विज्ञान/ जीवविज्ञान/ गणित/ अंग्रेज़ी/ हिंदी/ संगणक विज्ञान) , TGT (अंग्रेज़ी/ हिंदी/ गणित/ विज्ञान/ सामाजिकविज्ञान/संस्कृत/कार्य अनुभव) , PRT, PRT (संगीत), कंप्यूटर प्रशिक्षक, विशेष शिक्षक, खेल प्रशिक्षक, काउंसलर और नर्स के पदों के लिए सत्र 2023-24 के लिए अनुबंध के आधार पर विशुद्ध रूप से शिक्षकों की नियुक्ति के लिए साक्षात्कार में भाग ले सकते हैं।

साक्षात्कार/योग्यता/मासिक वेतनमान और बायो-डाटा पंजीकरण फार्म विद्यालय की वेबसाइट https://medakof.kvs.ac.in पर उपलब्ध हैं।

Sd/-
प्राचार्या /PRINCIPAL

## 'मुरादाबाद का नाम नहीं बदलने देंगे'

### वीएचपी की मांग पर भड़के सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क

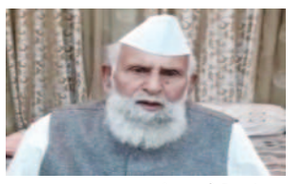

मुरादाबाद, 3 मार्च (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश में नाम बदलने की सियासत के बीच अब मुरादाबाद का नाम भी बदलने जाने की मांग की जाने लगी है, जिसे लेकर सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क की प्रतिक्रिया सामने आई है. यूपी की संभल सीट सपा सांसद शफीकुर्रहमान ने कहा कि वो मुरादाबाद का नाम नहीं बदलने देंगे. उन्होंने कहा कि अगर इसके लिए कानून के तहत जो भी प्रावधान होंगे उन्हें अपनाया जाएगा. समाजवादी पार्टी के सांसद शफीकुर्रहमान बर्क अक्सर अपने बयानों को लेकर सुर्खियों में रहते हैं. इस बीच पत्रकारों ने जब उनसे मुरादाबाद का नाम बदलने की मांग पर सवाल किया तो इसके जवाब में उन्होंने कहा कि 2024 के चुनाव आ रहे हैं. इसलिए बीजेपी अभी से माहौल खराब करना चाहती है. एक बार फिर से हिन्दू मुसलमान करना चाहती है. बर्क ने पूछा कि किसी शहर का नाम बदल कर क्या हो जाएगा. क्या हिन्दुस्तान बदल जाएगा? सपा सांसद ने कहा कि मुरादाबाद का नाम नहीं बदला जाना चाहिए. हम इसका नाम नहीं बदलने देंगे. इसके लिए जो भी कानूनी रास्ता होगा उसे अपनाया जाएगा. बर्क ने कहा कि बुलडोजर चलाना या किसी शहर का नाम बदल देना ये कोई तरीका नहीं है. दरअसल विश्व हिन्दू परिषद ने ट्विटर के जरिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को लेटर लिखकर मुरादाबाद का नाम बदलकर पीतांबरपुर करने की मांग की है. जिसे लेकर एक बार फिर से प्रदेश की सियासत गर्म होने लगी है. शफीकुर्रहमान बर्क ने इससे पहले प्रदेश की कानून व्यवस्था को लेकर भी योगी सरकार पर निशाना साधा था. उन्होंने कहा कि देश के सभी लोग अमन चैन से रहना चाहते हैं. लोगों की जिंदगी महफूज है तो निज़ाम ठीक है और जिंदगी महफूज नहीं है तो निज़ाम ठीक नहीं है. उन्होंने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा कि इस सरकार में मर्डर हो रहे हैं, मॉब लिंचिंग हो रही हैं और बेटियां के साथ जुल्म हो रहा है. खासकर मुसलमानों के साथ ज्यादा जुल्म हो रहा है.

# सुधाकर को लेकर बढ़ी कड़वाहट

## जदयू को भरोसा- नहीं सुधरे सुधाकर तो दिखाया जाएगा बाहर का रास्ता

पटना, 3 मार्च (एजेंसियां)। पूर्व कृषि मंत्री सुधाकर सिंह राजद के गले की फांस बन गए हैं। जदयू बार-बार इशारा कर रहा है कि इस फांस को गले से निकाल फेंकिए, लेकिन राजद नेतृत्व सुधाकर के खिलाफ ठोस कार्रवाई करने से बच रहा है। इसी का परिणाम है कि जदयू के एक धड़े को लगने लगा है कि सुधाकर को राजद के नीति निर्धारकों का समर्थन प्राप्त है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार तुरंत नाराजगी जाहिर नहीं करते हैं, लेकिन यह नाराजगी उनके सहयोगियों के चेहरे पर झलकने लगती है। नीतीश कैबिनेट के पूर्व मंत्री और जदयू के प्रवक्ता नीरज कुमार कहते हैं कि सुधाकर का शरीर राजद में और आत्मा भाजपा में है।

**विपक्ष सुधाकर की नीति को देता वरीयता**

विधानसभा के बजट सत्र में नीरज के आरोपों की कुछ हद तक पुष्टि भी हुई। विपक्ष के नेता विजय कुमार सिन्हा जब कभी कृषि नीति की चर्चा करते हैं, यह जरूर जोड़ते हैं कि सरकार इस मामले में पूर्व मंत्री सुधाकर सिंह की सलाह को वरीयता दे।

**नीतीश की खुलकर आलोचना कर रहे हैं सुधाकर**

पूरे कृषि विभाग को भ्रष्टाचारी बताकर कैबिनेट से अलग हुए सुधाकर सिंह का विचार अब भी नहीं बदला है। वे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की खुलकर आलोचना कर रहे हैं। अगले वित्तीय वर्ष के लिए प्रस्तावित चौथे कृषि रोड मैप को पहले की तरह फालतू बता रहे हैं। नीतीश ने एक समारोह में अंग्रेजी बोलने के लिए एक किसान प्रतिनिधि को फटकार लगाई थी। सुधाकर ने कहा, 'मुख्यमंत्री को यह पसंद नहीं है कि किसान का बेटा अंग्रेजी बोले।' राजद ने सुधाकर सिंह के बारे में कुछ बोलना छोड़ दिया है, लेकिन वह इस आशंका से मुक्त नहीं हो रहा है कि सुधाकर महागठबंधन में दरार का कारण न बन जाएं।

**ऐसा ही था भाजपा से अलगाव का कारण**

भाजपा से नीतीश कुमार के अलगाव का कारण लगभग ऐसा ही था। तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा से सदन के भीतर मुख्यमंत्री की तीखी बातचीत हुई थी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. संजय जायसवाल सरकार पर आक्रामक थे। पहले नीतीश के सहयोगियों ने सिन्हा और जायसवाल को सतर्क किया। विवाद नहीं रुका तो नीतीश ने राजग से अलग होने का निर्णय लिया। हालांकि, सुधाकर का मामला उस हद तक जाएगा, यह नहीं लगता है। जदयू को भरोसा है कि सुधाकर नहीं सुधरते हैं तो उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया जाएगा।

## पुलिस के साथ मीटिंग में ही मौलाना ने दे डाली दंगे की धमकी

### बोले- अगर मस्जिद पर रंग डाला तो...

मुरादाबाद, 3 मार्च (एजेंसियां)। मुरादाबाद में मुस्लिम समुदाय के लोगों के साथ पुलिस की बैठक में एक मौलाना ने खुलेआम दंगे की धमकी दे दी। मौलाना ने कह दिया कि होली में अगर किसी ने जबरदस्ती रंग लगाने की कोशिश की तो शहर में दंगा-फसाद हो जाएगा। मुरादाबाद में बिलारी के इमाम ने होली को लेकर पुलिस के साथ हो रही मीटिंग में भड़काऊ बयान दिया। सीएम के आदेश के बाद मुरादाबाद में पुलिस प्रशासन थाने में मुस्लिम समुदाय के साथ बैठक कर रहा था। होली पर हुड़दंगियों पर कैसे काबू किया जाए, इस पर बात हो रही थी। बैठक में पुलिस प्रशासन के साथ-साथ शहर के जाने माने लोग मौजूद थे। सभी अपनी बात रख रहे थे लेकिन तभी बिलारी के इमाम सदाकत हुसैन ने पुलिस के सामने धमकी दे डाली। उन्होंने कहा कि किसी को होली खेलने पर मजबूर न करें। होली पर अगर शरारत हुई तो शहर में दंगा-फसाद हो जागा।

**सदाकत हुसैन रजवी ने बयान में क्या कहा**

बिलारी के शहर ईमाम सदाकत हुसैन रजवी ने जो कहा उसे सुनकर सब हक्के वक्के रहे गए। शहर ईमाम ने बैठक में पुलिस व प्रशासन के सामने ही खुलेआम माईक से ऊंची आवाज में कहा,

**इमाम सदाकत हुसैन ने बयान पर दी सफाई**

शहर ईमाम के भाषण का ये वीडियो वायरल हुआ तो कुछ ही देर बाद ईमान सदाकत हुसैन का बयान से संबंधित एक वीडियो और आया जिसमें ईमाम सदाकत हुसैन बोल रहे हैं मेरा ऐसा मकसद नहीं था कि किसी भी धर्म के विरुद्ध बोला जाए या उसको आहत किया जाए। फिलहाल पुलिस प्रशासन ईमाम के इस गैर जिम्मेदाराना बयान पर कुछ बोलने को तैयार नहीं है। देखते ही देखते मौलाना का धमकी वाला ये वीडियो वायरल हो गया। मामले ने तूल पकड़ा तो इमाम सदाकत हुसैन ने सफाई दी। वीडियो में बयान जारी कर कहा कहा- उनका मकसद किसी भी धर्म के त्योहार पर बयान देकर ठेस पहुंचाना नहीं था।

# सीएम योगी आदित्यनाथ का पाक को लेकर बड़ा दावा

## जो भारत का हिस्सा था आज रोटी के लाले हैं

लखनऊ, 3 मार्च (एजेंसियां)। यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने पिछली सरकारों पर निशाना साधते हुए कहा कि साल 2017 से पहले उत्तर प्रदेश के नौजवानों के सामने 'पहचान का संकट' था और सूबे में माफिया तत्वों की 'समानांतर सरकार' चलती थी. योगी ने विधान परिषद में वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिये प्रस्तुत बजट पर चर्चा का जवाब देते हुए विपक्ष पर निशाना साधा और कहा "साल 2017 से पहले उत्तर प्रदेश के नौजवानों के सामने पहचान का संकट था. किसान बदहाल था, आत्महत्या कर रहा था और गरीब भुखमरी का शिकार था, महिलाएं सुरक्षित नहीं थीं. संगठित अपराध में लिप्त माफियाओं की समानांतर सरकार चलती थी. प्रदेश में हर

तरह का माफिया हावी हो गया था." योगी आदित्यनाथ ने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के लिए सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों ने 16 देशों की यात्रा की. पहली बार यूपी की टीम इसके लिए विदेश गई. आज प्रदेश का कोई जिला ऐसा नहीं है जहां निवेश का कोई प्रस्ताव नहीं हो. यह इन्वेस्टर्स समिट की सबसे बड़ी सफलता है.

**शकुनि को पालेंगे तो सत्यानाश होना ही है- योगी**

सीएम ने कहा कि साल 1947 से पहले जो पाकिस्तान भारत का हिस्सा था आज वहां रोटी के लाले पड़ रहे हैं लेकिन भारत प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आज वैश्विक नेतृत्व की क्षमता का प्रदर्शन कर रहा है, पूरी दुनिया उसे लेकर अभिभूत है. हर भारतवासी को इस पर गौरव की अनुभूति करनी चाहिए और उत्तर प्रदेश अपनी भूमिका में भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में कैसे योगदान कर सकता है, यह बजट उसी का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई देता है. उन्होंने कहा, "कहीं संगठित अपराध को संचालित करने वाला माफिया था, कहीं भू-माफिया था, कहीं खनन माफिया, कहीं पशु माफिया तो कहीं वन माफिया थे,

लेकिन पिछले छह सालों के अंदर जिस उत्तर प्रदेश के नौजवानों के सामने पहचान का संकट खड़ा हुआ था, आज उसी प्रदेश का नौजवान देश और दुनिया में सम्मान की निगाहों से देखा जाता है."आदित्यनाथ ने किसी का नाम लिये बगैर कहा, "एक बड़े विद्वान ने कहा है कि समस्या का समाधान इस पर निर्भर करता है कि आपका सलाहकार कौन है. दुर्योधन का सलाहकार शकुनि था और अर्जुन के कृष्ण थे. परिणाम सबके सामने है. शकुनि को पालेंगे तो सत्यानाश होना ही है. यह दृश्य अगर विपक्ष समझ पाएगा तो उसे संभवतः कुछ सद्बुद्धि आ जाये."

## तहसील में युवक ने केरोसिन डालकर की आत्मदाह की कोशिश, लेखपाल पर उत्पीड़न का आरोप

बदायूं, 3 मार्च (एजेंसियां)। बदायूं जिले में एक और पीड़ित ने लेखपाल से परेशान होकर केरोसिन डालकर आत्मदाह की कोशिश की। यह मामला बिसौली तहसील का है। शुक्रवार दोपहर करीब तीन बजे ग्राम दबथरा निवासी 28 वर्षीय युवक दिनेश ने अपने ऊपर केरोसिन उड़ेल लिया। उसे देखकर तमाम लोग दौड़ पड़े। उन्होंने बमुश्किल युवक के हाथ से केरोसिन भरी केन छीन ली। वह आग लगा पाता, उससे पहले लोगों ने उसे बचा लिया। इसकी सूचना पर एसडीएम ज्योति शर्मा भी वहां पहुंच गईं। वह युवक को अपने कार्यालय ले गईं। बताया जा रहा है कि युवक जमीन के मामले में लेखपाल से परेशान था। उसने लेखपाल पर उत्पीड़न का आरोप लगाया है।

## गुड्डू मुस्लिम गोली नहीं, बम मारकर ही करता है हत्या

### धनंजय सिंह से लेकर मुख्तार अंसारी तक के लिए कर चुका काम

प्रयागराज, 3 मार्च (एजेंसियां)। प्रयागराज के उमेश पाल हत्याकांड में बुलडोजर एक्शन का आज तीसरा दिन है. अब अतीक अहमद के इस खास गुर्गे के घर को बुलडोजर से तोड़ा जाएगा. हत्याकांड से जुड़े एक सीसीटीवी फुटेज में गुड्डू मुस्लिम बम फेंकते कैद हुआ है. अतीक से पहले उत्तर प्रदेश के दूसरे माफिया गुर्गों के साथ रह चुके गुड्डू की खासियत है कि वह गोली नहीं, बम मारकर ही हत्या की वारदातों को अंजाम देता है. उत्तर प्रदेश के माफिया डॉन धनंजय सिंह, अभय सिंह से लेकर मुख्तार अंसारी तक के लिए गुड्डू मुस्लिम ने काम किया है. बीते 10 साल से वह अतीक अहमद की गैंग में शामिल है. प्रयागराज में अतीक अहमद के लिए रेलवे के स्क्रैप और प्रॉपर्टी डीलिंग का काम कुख्यात गुड्डू मुस्लिम ही संभालता रहा था. बता दें कि गुड्डू मुस्लिम का राजधानी लखनऊ में भी कनेक्शन रहा है. लखनऊ के चर्चित पीटर गोम्स हत्याकांड में भी उसका नाम आया था. पुलिस ने हिरासत में लेकर पूछताछ की थी. दरअसल, लखनऊ के ला मार्टिनियर कॉलेज में बॉयज हॉस्टल के वॉर्डन और स्पोर्ट्स टीचर पीटर गोम्स की गोलियों से भूनकर हत्या कर दी गई थी. इस मामले में गुड्डू मुस्लिम का नाम सामने आया था. यही नहीं, लखनऊ के ही नाका इलाके में बम मारकर हुई एक हत्या में भी गुड्डू मुस्लिम को जेल भेजा गया था. गौरतलब है कि प्रयागराज के बहुचर्चित राजू पाल हत्याकांड के मुख्य गवाह उमेश पाल और उनके सुरक्षाकर्मी संदीप निषाद की शुक्रवार शाम गोली मारकर हत्या कर दी गई. इस मामले में उमेश पाल की पत्नी ने धूमनगंज थाने में बाहुबली अतीक अहमद के परिवार के खिलाफ केस दर्ज कराया गया है. उल्लेखनीय है कि राजू पाल बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) के विधायक थे और साल 2005 में उनकी हत्या कर दी गई थी. उमेश पाल उस हत्याकांड के मुख्य गवाह थे. राजू पाल की हत्या में मुख्य आरोपी माफिया अतीक अहमद गुजरात की जेल में बंद है.

## तेजस एक्सप्रेस में विदेशी महिला से छेड़छाड़ आरोपी रेलवे कांस्टेबल गिरफ्तार

लखनऊ, 3 मार्च (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के कानपुर में तेज एक्सप्रेस में यात्रा करने के दौरान एक विदेशी महिला के साथ छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। आरोप है कि महिला के साथ भारतीय रेलवे में तैनात एक कांस्टेबल ने बदसलूकी। घटना के सामने आने के बाद पुलिस ने आरोपी कांस्टेबल को गिरफ्तार कर लिया है और उससे पूछताछ कर रही है। दरअसल , घटना उस समय हुई जब तेजस एक्सप्रेस लखनऊ से दिल्ली जा रही थी। इस दौरान स्विट्जरलैंड की रहने वाली महिला के साथ रेलवे में तैनात जवान ने छेड़छाड़ की, इसके बाद महिला ने इसकी शिकायत राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) से की। आरोपी की पहचान सिपाही जितेंद्र सिंह के रूप में हुई है जो कि ट्रेनों में यात्रियों की सुरक्षा के लिए सेंट्रल स्टेशन आरपीएफ में तैनात था। जानकारी के अनुसार, स्विस नागरिक महिला अपने मंगेतर के साथ ट्रेन में सफर कर रही थी। जब महिला ट्रेन में टॉयलेट के लिए गई तो आरोपी सिपाही भी उसके पीछे गया और महिला के टॉयलेट से बाहर निकलने पर उसके साथ अनुचित तरीके से बात की। महिला का आरोप है कि जवान ने उसके साथ अश्लील बातें की और उसे शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने की कोशिश की। इस दौरान जवान ने स्विस महिला के साथ सेल्फी लेने की कोशिश भी की। महिला ने घटना के बारे में अपने मंगेतर को बताते हुए इसकी शिकायत पुलिस से की। सूचना मिलने के बाद पुलिस ने आरोपी कांस्टेबल को गिरफ्तार कर लिया है। घटना के सामने आने के बाद ट्रेन में सुरक्षा और बढ़ा दी गई है।

## बीजेपी का ये दांव चला तो 2019 से भी खराब हालत में पहुंच जाएगी सपा

# अखिलेश यादव की बढ़ेगी मुसीबत

लखनऊ, 3 मार्च (एजेंसियां)। बीजेपी ने 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव की तैयारी बड़े जोर शोर से करना शुरू कर दिया है. बीजेपी इस बार यूपी में हारी हुई 14 सीटों को जीतने के लिए खास प्रयास कर रही है. इस सिलसिले में राष्ट्रीय महामंत्री सुनील ने यूपी के लखनऊ में पदाधिकारियों से जायजा लिया.लभारतीय जनता पार्टी प्रदेश मुख्यालय में गुरूवार को लोकसभा प्रवास योजना बैठक संपन्न हुई. प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता और राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल व प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह की उपस्थिति में आयोजित बैठक में प्रदेश के 14 लोकसभा क्षेत्रों के लिए तय कलस्टर की समीक्षा व आगामी कार्ययोजना पर चर्चा हुई. बैठक में लोकसभा संयोजक, लोकसभा प्रभारी, लोकसभा विस्तारकों सहित लोकसभा प्रवास योजना की प्रदेश टोली के सदस्य सम्मिलित हुए. राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल ने कहा कि विगत लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को उत्तर प्रदेश में जिन लोकसभा सीटों पर सफलता नहीं मिल सकी, ऐसी 14 सीटों पर लोकसभा प्रभारी और संयोजकों के प्रवास के तहत क्षेत्र में नियमित संपर्क व संवाद स्थापित करने की तय कार्ययोजना पर काम करना है. कलस्टर के तहत सभी लोकसभा क्षेत्रों में विधानसभावार समीक्षा करना और प्रत्येक कमजोर बूथ की मजबूती के लिए प्रभावी कार्ययोजना तैयार करना है. केन्द्रीय मंत्रियों के प्रवास पूर्ण हो चुके हैं. प्रवास के अगले चरण में केन्द्रीय मंत्रियों के साथ बूथ विजय की कार्ययोजना पर माइक्रो मैनेजमेंट के साथ कार्य करना है.

**12 लोकसभा सीटें बीजेपी 2014 में जीत चुकी है**

प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि 2019 के लोकसभा चुनाव में विपक्ष के एक साथ लामबंद होने के बावजूद उत्तर प्रदेश में बीजेपी को 50 फीसदी से ज्यादा वोट प्राप्त हुए थे. 2024 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकारों के कार्य, कार्यकताओं का परिश्रम, सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास की नीति से बीजेपी प्रदेश में 80 सीटें जीतने का लक्ष्य पूर्ण करेगी. पिछले चुनाव में हमें जहां सफलता नहीं मिल सकी थी, वहां भी जीत का परचम फहराना है. उन्होंने कहा कि 14 लोकसभा सीटों में से 12 लोकसभा सीटें वह हैं, जिन्हें बीजेपी 2014 के लोकसभा चुनाव में जीत चुकी है.

## '8 मार्च को उड़ा देंगे गया एयरपोर्ट', गुमनाम चिट्ठी से हड़कंप, 21 लोगों का लिखा है नाम-पता

गया, 3 मार्च (एजेंसियां)। बिहार के गया इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर ड्रोन से हमले की धमकी मिली है. गया एयरपोर्ट के निदेशक बंगजीत शाहा को एक गुमनाम पत्र मिला है जिसमें बिहार के 21 लोगों का नाम-पता दर्ज है जिन्हें धमकी दी गई है. इस पत्र को देर शाम एयरपोर्ट निदेशक ने एसएसपी आशीष भारती को उपलब्ध कराया है. इस पत्र के मिलने के बाद हड़कंप मच गया है. गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा के निदेशक बंगजीत शाहा ने इस मामले में बताया है कि दो मार्च को उन्हें पत्र मिला था जिसमें गया इंटरनेशनल एयरपोर्ट और अन्य स्थानों के संबंध में धमकी देने दी गई है.

## जेल से रिहा हुए तीन आरोपी, भावुक हुए परिवार वाले कहा- होली से पहले आईं त्योहारों की खुशियां

अलीगढ़, 3 मार्च (एजेंसियां)। हाथरस सामूहिक दुष्कर्म और हत्या मामले में तीन आरोपियों को शुक्रवार को अलीगढ़ की जेल से रिहा किया गया। जेलर पी. के. सिंह ने बताया, हमने चार में तीन आरोपियों को आज सुबह 8 बजे रिहा किया है। इन्होंने लिखित में पत्र दिया था जिसके बाद इनकी रिहाई आज की गई है। दो साल से जो चेहरे मुरझाए थे, वे आज खिले दिखाई दे रहे थे। बरी किए गए बूलगढ़ी के तीनों युवकों के घर होली से पहले ही त्योहार की खुशियां आ गईं। कोर्ट का फैसला आते ही स्वजन भावुक हो गए। बोले, न्याय की उम्मीद थी। न्याय मिला है। अब बेटे घर आएंगे। दुष्कर्म का कलंक हटा है। यह अधिक खुशी की बात है। संदीप को दोषी माना है। इस फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाएंगे। गुरुवार की दोपहर एक बजकर 12 मिनट पर कोर्ट

ने फैसला सुनाया। संदीप को दोषी माना, उम्रकैद की सजा हुई है। बरी किए गए रामू, लवकुश, रवि के स्वजन की खुशी का ठिकाना न रहा। गांव के अन्य लोग भी इसे सही बता रहे थे। कोर्ट से बरी हुए 35 वर्षीय रामू के दो बच्चे हैं। इनमें आठ वर्षीय सोना और चार साल का रोहित है। रामू को जब जेल भेजा गया तब दोनों बच्चे घर में खेलते थे, लेकिन अब बेटा स्कूल जाने लगा है। रामू के बरी होने की खबर पर पिता राकेश के चेहरे में खुशी के अलग ही भाव थे। 40 वर्षीय रवि के तीन बच्चे हैं। इनमें 12 वर्षीय मानवी, आठ वर्षीय शेखर और छह वर्षीय चीका है। लवकुश अविवाहित है। इसके बरी होने की जानकारी से पिता रामवीर सिंह और मां मुन्नीदेवी के चेहरे का भाव बता रहा था कि आज का दिन उनके लिए खास है। रामसिंह चौकीदारी करते हैं। फैसला आने के बाद गांव में अनेक लोग उनके घर पहुंच गए। खुशी जताई, लेकिन गांव के लोगों को कसक इस बात की है कि संदीप को आजीवन कारावास की सजा हो गई। स्वजन को उम्मीद है कि उसे भी देर से सही, मगर इंसाफ जरूर मिलेगा।

## बेटी फोन पर बात करती थी, पिता ने मार डाला:पीट-पीटकर हत्या करके शव हिंडन नदी में फेंका

बागपत, 3 मार्च (एजेंसियां)। बागपत में ऑनर किलिंग की वारदात हुई है। यहां होमगार्ड पिता ने 16 साल की बेटी की पीट-पीटकर हत्या कर दी। हत्या के बाद पिता ने अपने भाई को घर बुलाया। उसके साथ शव बोरे में पैक किया। घर से 5 किमी दूर हिंडन नदी में फेंक दिया। हत्या की यह वारदात 10 दिन पुरानी यानी 23 फरवरी की है। एक अज्ञात युवक की कॉल के बाद पुलिस ने इस मामले की तफ्तीश शुरू की। पिता को घर से उठाकर थाने ले गई। सख्ती से पूछताछ की। पिता टूट गया और हत्या की बात कबूल ली। उसने बताया कि बेटी को किसी लड़के से फोन पर बात करते हुए देख लिया था। गुस्से में उसको इतना मारा कि उसकी मौत हो गई। पिता के कबूलनामे के बाद गुरुवार को लड़की का शव नदी से बरामद किया गया।

## नीतीश कुमार को फिर लगा झटका! उपेंद्र कुशवाहा के बाद पूर्व सांसद मीना सिंह ने किया जदयू छोड़ने का ऐलान

पटना, 3 मार्च (एजेंसियां)। इस वक्त बिहार के सियासी गलियारे से बड़ी खबर सामने आ रही है. दरअसल आरा से पूर्व सांसद और भोजपुर की कद्दावर जदयू नेता मीना सिंह ने जनता दल यूनाइटेड (जदयू ) को छोड़ने का ऐलान कर दिया है. उन्होंने आरोप लगाया है कि उन्होंने पार्टी को मजबूत बनाने में ईमानदारी से पूरा योगदान दिया, जहां भी पार्टी को जिस तरह से भी ज़रूरत पड़ी वो मजबूती से खड़ी रहीं. लेकिन, पार्टी लगातार उनको नजरअंदाज करती रही. उन्होंने कहा कि अब उनके लिए जदयू में काम करना बेहद मुश्किल है, क्योंकि अब जेडीयू अपनी नीतियों और सिद्धांतों से भटक चुकी है. मीना सिंह ने कहा कि पार्टी में पुराने और समर्पित लोगो के लिए कोई जगह नहीं है ऐसे में उनके जैसे नेता और कार्यकर्ता के लिए पार्टी में रहने का कोई मतलब नहीं है और मैं भारी मन से जदयू छोड़ने का एलान करती हूं. दरअसल मीना सिंह आरा से जदयू की सांसद रह चुकी है और उनके पति स्वर्गीय अजीत सिंह भी जदयू की टिकट पर काराकाट से सांसद रह चुके थे, जिन्हें जदयू का तब महत्वपूर्ण नेता माना जाता था. वह नीतीश कुमार के भी बेहद करीबी माने जाते थे. लेकिन उनके असामयिक निधन के बाद उनकी पत्नी मीना सिंह सक्रिय राजनीति में आई और जदयू के टिकट पर आरा से सांसद चुनी गई थीं.

**क्या होगा मीना सिंह का अगला कदम?**

मीना सिंह का परिवार बिहार के प्रमुख हस्तियों में से एक माना जाता है. वह सहकारिता किंग तपेश्वर सिंह की बहू है, जिनका बिहार के सहकारिता जगत में काफी नाम रहा है. ऐसे में मीना सिंह के जदयू से अलग होने से जदयू को बड़ा झटका लग सकता है. मीना सिंह का दावा है कि उनके साथ हजारों समर्थक भी जदयू से इस्तीफा देंगे. मीना सिंह का अगला कदम क्या होगा और किस पार्टी में जाएंगी. इस बारे में फ़िलहाल तो कुछ नहीं बोला है. लेकिन, माना जा रहा है कि आने वाले समय में बीजेपी के साथ उनकी नज़दीकिया बढ़ सकती है.

**कई नेता जा चुके हैं उपेंद्र कुशवाहा के साथ**

मीना सिंह के बेटे विशाल सिंह भी राजनीति में एक जाना माना चेहरा हैं. हाल में ही उन्हें एनसीसीएफ का चेयरमैन बनाया गया है. माना जा रहा है कि विशाल सिंह कि नज़र आरा लोकसभा सीट पर हैं और उनकी बीजेपी के नेताओ से भी बेहतर संबंध है. वहीं जदयू से अलग होने के बाद उपेन्द्र कुशवाहा ने भी जदयू को झटका दिया है. जदयू के कई नेता जदयू से अलग होकर उनकी पार्टी आरएलडी का दामन थाम लिया है, जिनके प्रमुख नाम हैं राम लक्षण सिंह कुशवाहा, जदयू अनुसूचित जाति के जिलाध्यक्ष चंद्रिका पासवान, जदयू के जिला सचिव संजीर आलम मंसूरी, बथनाहा प्रखंड जदयू अध्यक्ष रामलगन सिंह, बाजपट्टी की पूर्व प्रत्याशी रेखा गुप्ता भी जेडीयू में शामिल हो गयी हैं. वहीं कई पंचायतों के जदयू अध्यक्ष भी उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी में शामिल हो गए. वहीं इस बारे में उपेन्द्र कुशवाहा ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि यह तो शुरुआत है,

# शरद पवार के शातिर दांवों को राजनीति के विद्वान भी न समझ पाए

मुंबई, 3 मार्च (एजेंसियां)। नवंबर, 2019 की सुबह सात बजे, महाराष्ट्र के राजभवन में शपथ ग्रहण समारोह हुआ और किसी को इस बात की कानों कान खबर नहीं हुई. शपथ लेने वालों में बीजेपी के देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार शामिल थे. इस बड़े उलटफेर के बाद सभी को लगा कि एनसीपी ने बीजेपी के साथ मिलकर महाराष्ट्र में सरकार बना ली है. लेकिन कोई नहीं जानता था कि राजनीति के धुरंधर शरद पवार के एक इशारे से पूरी बाजी ही पलट जाएगी. हाल ही में महाराष्ट्र बीजेपी के कद्दावर नेता देवेंद्र फडणवीस ने अपने एक बयान में खुलासा किया कि इस पूरे खेल की सक्रिप्ट राजनीति के चाणक्य और एनसीपी सुप्रीमो शरद पवार ने लिखी थी. उन्होंने बताया कि साल 2019 में महाराष्ट्र में एनसीपी चीफ शरद पवार के भतीजे अजित पवार की बगावत, उनका देवेंद्र फडणवीस के साथ मिलकर सरकार बनाना, खुद उपमुख्यमंत्री और फडणवीस को मुख्यमंत्री बनना, फिर इस्तीफा देना और उद्धव ठाकरे का मुख्यमंत्री बनाना, सब कुछ सक्रिप्टेड था.

**शरद पवार ने इस दावे पर क्या कहा**

एनसीपी चीफ शरद पवार ने फडणवीस के इस दावे पर कहा कि भारतीय जनता पार्टी ने उनके भतीजे और एनसीपी के नेता अजित पवार के साथ सरकार बनाई थी. इसका फायदा ये हुआ की इस फैसले से साल 2019 में महाराष्ट्र में राष्ट्रपति शासन खत्म हो गया. पवार का इस तरह का बयान देना राजनीतिक चतुराई से भरा है, लेकिन इससे एक बात तो जरूर समझ आता है कि उनको सबकुछ पता था.

**साल 2019 में क्या हुआ था?**

साल 2019 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने 105 सीटों पर जीत दर्ज की थी, इस चुनाव के नतीजे 24 अक्टूबर, 2019 को घोषित किए गए थे. वहीं बीजेपी के साथ गठबंधन में रही शिवसेना ने 56 सीट अपने नाम किया था. उस वक्त बीजेपी और शिवसेना की गठबंधन के पास सरकार बनाने के लिए पर्याप्त सीट थे लेकिन इसके बाद भी दोनों सहयोगी दलों के बीच मुख्यमंत्री का पद किसे मिलेगा इस पर विवाद शुरू हो गया. इस विवाद के परिणामस्वरूप शिवसेना ने कांग्रेस और राकांपा के साथ मिलकर सरकार बनाने के लिए बातचीत शुरू कर दी. वहीं राज्य का सीएम कौन बनेगा इसपर कोई नतीजा नहीं निकलने पर राज्यपाल ने चुनाव परिणाम आने के 19वें दिन राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर दी और केंद्र सरकार ने 12 नवंबर को राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया. किसी भी राज्य में राष्ट्रपति शासन लग जाने से वह कितना लंबा खिंच सकता है. इसे शरद पवार बखूबी समझते थे. इसलिए पवार ने कांग्रेस, शिवसेना और राकंपा की महाविकास अघाड़ी का गठन होने और इन तीनों के बीच सत्ता की शर्तें निर्धारित होने तक राष्ट्रपति शासन हटाने का ऐसा तरीका निकाला जिसके बारे में किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी.

बीजेपी ने विकल्प तलाशना शुरू किया दरअसल, शिवसेना से बात नहीं बन पाने पर बीजेपी ने भी विकल्प तलाशना शुरू कर दिया था. उस वक्त एनसीपी

के अजीत पवार ने दावा किया कि उनके साथ 40-50 विधायक हैं और गठबंधन के लिए बीजेपी तुरंत तैयार हो गई. रातभर चक्र घूमे. अगली सुबह राष्ट्रपति शासन उठा लिया गया. राज्यपाल ने सुबह लगभग सात बजे फडणवीस-अजीत को शपथ दिला दी. लेकिन, अजीत पवार 15 विधायकों से ज्यादा नहीं जुटा पाए. परिणाम स्वरूप यह सरकार भी 80 घंटे में गिर गई और अजीत पवार एक बार फिर अपने चाचा यानी शरद पवार के पास लौट आए. इस बीच शिवसेना ने कांग्रेस और राकांपा के साथ गठबंधन कर सत्ता में आने की बातचीत जारी रखी और शरद पवार ने घोषणा किया कि सबकी सहमति के साथ उद्धव ठाकरे को नई सरकार का नेतृत्व करने के लिए चुना लिया गया है. उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली और राज्य के सीएम बन गए. बाद में साल 2022 में शिवसेना दो भागों में बंट गई और बीजेपी के सहयोग से एकनाथ शिंदे मुख्यमंत्री बने और देवेंद्र फडणवीस के उपमुख्यमंत्री.

**शरद पवार को लेकर ये कहावत मशहूर**

सियासी गलियारे में शरद पवार को लेकर चर्चा रहती है कि जब उन्हें दिल्ली जाना होता है तो अहमदाबाद का टिकट कटाते हैं और कोलकाता की फ्लाइट पकड़ते हैं. आसान भाषा में समझे तो राजनीति में उनका अगला कदम क्या होगा इसके बारे में किसी को पता नहीं होता.

**क्यों महाराष्ट्र की राजनीति के चाणक्य हैं पवार**

महाराष्ट्र पॉलिटिक्स में मराठा क्षत्रप शरद गोविंद राव पवार ऐसे नेता हैं जिन्होंने पिछले पचास साल से लगातार यहां की राजनीति में अपनी अहमियत बरकरार रखी है. नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के नेता शरद पवार की शख्सियत इतनी बड़ी है कि कहा जाता है कि महाराष्ट्र की पूरी राजनीति उनके इर्द गिर्द घूमती है. इससे फर्क नहीं पड़ता कि वो सत्ता में हैं या नहीं पवार की पावर पॉलिटिक्स हर पार्टी समझती है.

**जब पवार ने किया सबको हैरान**

**1. पीएम मोदी से मिले और उद्धव को समर्थन दे दिया:** साल था 2019. महाराष्ट्र चुनाव के बाद शिवसेना ने बीजेपी से बगावत कर दी. किसी भी पार्टी के पास सरकार बनाने के लिए पूर्ण बहुमत नहीं थी. इसी बीच शरद पवार दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिले. सियासी अटकलें तेज हो गई कि एनसीपी और बीजेपी मिलकर महाराष्ट्र में सरकार बनाएगी. केंद्र में भी एनसीपी बीजेपी की सहयोगी बन सकती है. मगर, पवार तो पवार थे. मुलाकात के बाद बाहर आए और पत्रकारों से कहा कि किसानों के मुद्दे पर मिलने गया था. मैं सोनिया गांधी के साथ मिलकर शिवसेना को सपोर्ट करूंगा. शिवसेना को मुख्यमंत्री का पद मिलेगा. पवार के बयान से दिल्ली से लेकर महाराष्ट्र तक सियासी हलचल मच गई.

**2. महाराष्ट्र में जब बचा ली बीजेपी की सरकार:** साल था 2014. महाराष्ट्र चुनाव के बाद बीजेपी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी. पार्टी को 122 सीटों पर जीत मिली, लेकिन सरकार बनाने से चूक गई. शिवसेना पहले से खफा थी और सरकार को समर्थन देने से इनकार कर दिया. बीजेपी ने देवेंद्र फडणवीस के नाम को आगे किया और सरकार बना ली. विश्वासमत से पहले शरद पवार ने बीजेपी को बाहर से समर्थन देने का ऐलान कर दिया. पवार की पार्टी के पास उस वक्त 41 सीटें थी. शरद पवार के इस दांव से शिवसेना उस वक्त बीजेपी से ज्यादा मोलभाव नहीं कर पाई.

**3. अब उद्धव को भी नहीं समझ आ रहा पवार का दांव:** मुख्यमंत्री बनने की चाहत में उद्धव ठाकरे ने एनसीपी और कांग्रेस से गठबंधन तो कर लिया, लेकिन पिछले 4 साल में महाराष्ट्र की सियासत काफी बदल गई है. शिवसेना का विभाजन हो गया है. उद्धव हाथ से पार्टी और सरकार दोनों जा चुकी है. कोकण, ठाणे और मुंबई के करीब 56 सीटों पर शिवसेना और एनसीपी के बीच लड़ाई होती थी, अब उद्धव एनसीपी के साथ हैं. ऐसे में कितनी सीटें मिलेगी, यह उद्धव को भी नहीं समझ आ रहा है. दूसरी ओर बीएमसी का चुनाव भी है. उद्धव यहां भी मोलभाव की स्थिति में नहीं है. पवार के एक त्याग वाले दांव से उद्धव चित हो चुके हैं.

**जब पीएम बनने से चूके पवार**

साल था 1991. राजीव गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस को सरकार बनाने के लिए बहुमत मिल चुका था. सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री बनने से इनकार कर दिया. इसके बाद नामों को लेकर अटकलें तेज होने लगी. कांग्रेस में उस वक्त दो गुट सबसे ज्यादा हावी था. उत्तर भारत गुट और महाराष्ट्र गुट. उत्तर भारत गुट में नेता थे- अर्जुन सिंह, शंकर दयाल शर्मा, मोतीलाल बोरा और अहमद पटेल. महाराष्ट्र गुट में यशवंत राव चव्हाण, विलास राव देशमुख और शरद पवार का नाम था. इसी बीच एक अंग्रेजी अखबार ने खबर छापी कि शरद पवार प्रधानमंत्री बन सकते हैं. खबर छपते ही कांग्रेस का उत्तर भारत गुट सक्रिय हो गया. पहले शंकर दयाल शर्मा के नाम का प्रस्ताव भेजा गया, लेकिन शर्मा प्रधानमंत्री बनने से खुद इनकार कर दिए. इसके बाद दक्षिण भारत से आने वाले पीवी नरसिम्हा राव के नाम का प्रस्ताव रखा गया. पवार इसी तरह रेस से बाहर हो गए और प्रधानमंत्री बनने से चूक गए.

**कैसा रहा उनका राजनीतिक सफर**

पिछले पचास साल से महाराष्ट्र की राजनीति में अपनी धाक जमाए शरद पवार इसी राज्य में तीन बार मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ले चुके हैं. इसके अलावा मनमोहन सिंह की कैबिनेट में साल 2004 से 2014 तक वह कृषि मंत्री भी रहे. पवार केंद्र में रक्षा मंत्री के तौर पर भी काम कर चुके हैं. राजनीति में अपनी चाल का लेकर मशहूप शरद पवार का राजनीतिक और व्यवहारिक आचरण भी काफी अच्छा रहा है. यही कारण है कि उनके रिश्ते सत्ता पक्ष से लेकर विपक्ष तक, सबसे हमेशा अच्छे रहे हैं. साल 2017 में उन्हें देश के दूसरे सबसे बड़े सम्मानित सिविलियन पुरस्कार से भी 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया जा चुका है. उस वक्त मोदी सरकार सत्ता में थी.

**27 साल की उम्र में बने थे विधायक**

शरद पवार ने राजनीति में कदम रखने के बाद से ही सूझबूझ से आगे बढ़ना शुरू किया था. यही कारण है कि महज 27 साल की उम्र में ही वो एमएलए चुने गए थे. इसके बाद शरद पवार ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा. वह लगातार बुलंदियों को छूते रहे. इमरजेंसी के बाद इंदिरा गांधी से बगावत कर उन्होंने कांग्रेस छोड़ दिया था और साल 1978 में जनता पार्टी के साथ मिलकर उन्होंने महाराष्ट्र में सरकार का गठन किया और राज्य के सीएम भी बने. साल 1980 में जब इंदिरा की सरकार वापस आई तो शरद पवार की सरकार बर्खास्त कर दी गई. लेकिन साल 1983 में उन्होंने कांग्रेस पार्टी सोशलिस्ट का गठन कर प्रदेश की राजनीति में अपनी मजबूत पकड़ बरकरार रखी. उस साल हुए लोकसभा चुनाव में शरद ने पहली बार बारामती से चुनाव जीता था. हालांकि 1985 में हुए विधानसभा चुनाव में उनकी पार्टी ने 54 सीटों पर अपनी जीत दर्ज की और एक बार फिर प्रदेश की राजनीति में उनकी वापसी हुई. शरद पवार ने लोकसभा से इस्तीफा दिया और विधानसभा में विपक्ष का नेतृत्व किया. साल 1987 में एक बार फिर वह कांग्रेस में वापस आ गए और राजीव गांधी के नेतृत्व में आस्था जता कर उनके करीब हो गए. शरद पवार को साल 1988 में शंकर राव चव्हाण की जगह सीएम की कुर्सी मिली जबकि चव्हाण को साल 1988 में केंद्र में वित्त मंत्री बनाया गया.

## पत्नी से कानूनी लड़ाई कर हासिल की बच्चे की कस्टडी

### अब उसी मासूम को सिगरेट से दागा

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। दक्षिण दिल्ली के नेब सराय थाना इलाके में 7 वर्ष के बच्चे को सिगरेट से दागने का मामला सामने आया है। मेडिकल जांच में बच्चे को सिगरेट से जलाने की पुष्टि हो गई है। नेब सराय थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामला बच्चे के पिता उसकी बुआ, बुआ की लड़की समेत अन्य लोगों के खिलाफ दर्ज किया गया है । हालांकि इस मामले में शुक्रवार सुबह तक किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई थी। दक्षिण जिला पुलिस अधिकारियों के अनुसार नेब सराय में रहने वाली दंपती के बीच विवाद चल रहा है। दोनों अलग रहते हैं। हाल ही में हाईकोर्ट के आदेश के बाद 7 वर्ष के बच्चे की कस्टडी उसके पिता को दे दी गई थी। बच्चा पिता के पास रह रहा था। अब बच्चे की मां ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है कि उसके बेटे को उसकी ननद की लड़की ने सिगरेट से दागा है। मां के आरोपों के बाद पुलिस ने अस्पताल में बच्चे की मेडिकल जांच कराई। जांच में उसके हाथ में सिगरेट जलाने के निशान पाए गए हैं। आरोप है कि बच्चे को दिसंबर महीने में सिगरेट से जलाया गया था।

## पत्नी ने काट डाला पति का प्राइवेट पार्ट

### फिर जो किया वो जानकर रह जाएंगे दंग

सिंगरौली, 3 मार्च (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के सिंगरौली जिले से एक चौंकाने वाली घटना सामने आ रही है यहाँ उर्ती गांव में हुए एक व्यक्ति के मर्डर केस का पुलिस ने खुलासा कर दिया। पत्नी ने ही अपने पति को मौत के घाट उतारा था। अपराधी महिला को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा दिया है। गांव के बीरेंद्र गुर्जर का पिछली 21 फरवरी को शव बरामद हुआ था। मृतक के गले और गुप्तांग पर चोट के निशान थे। कोतवाली थाना प्रभारी अरुण पांडेय ने बताया कि मृतक की पत्नी कंचन गुर्जर ने थाने में शिकायत देकर अज्ञात के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। तभी से पुलिस इस हत्या का खुलासा करने में जुटी हुई थी। इस बीच, पुलिस ने मृतक के कई नजदीकी रिश्तेदारों सहित जिस किसी पर शक हुआ, उनसे पूछताछ कर गहनता से तहकीकात की। इसके चलते मृतक की पत्नी भी पुलिस के शक के घेरे में आ गई। पुलिस ने जब महिला को हिरासत में लेकर उससे सख्ती से पूछताछ की तो पूरे घटनाक्रम का खुलासा हो गया। मृतक बीरेंद्र गुर्जर की पत्नी कंचन ने क़त्ल का खुलासा करते हुए पुलिस को बताया कि उसका पति नशे का आदी था। नशे की स्थिति में वह उसे बहुत प्रताड़ित करता था।

## मनसे नेता संदीप देशपांडे पर जानलेवा हमला, शिवाजी पार्क में मॉर्निंग वॉक पर निकले थे

मुंबई, 3 मार्च (एजेंसियां)। मुंबई से बड़ी खबर आ रही है। यहां शुक्रवार तड़के सुबह महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के नेता और पूर्व पार्षद संदीप देशपांडे जानलेवा हमला हो गया। चार अज्ञात हमलावरों ने उनपर हमला किया। संदीप को मुंबई के हिंदुजा अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत गंभीर बताई जा रही है। संदीप देशपांडे पर उस दौरान हमला हुआ जब वह सुबह शिवाजी पार्क के इलाके में मॉर्निंग वॉक पर निकले थे।

## इंदौर में मेडिकल कॉलेज के बाहर पेड़ पर लटका मिला युवक की शव

इंदौर, 3 मार्च (एजेंसियां)। इंदौर के महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज परिसर के बाहर लगे पेड़ पर शुक्रवार सुबह लोगों ने एक युवक का लटका देखा। उसने आत्महत्या की, या किसी ने उसे मारकर लटकाया है। पुलिस इसकी जांच कर रही है। मृतक कौन है, इसकी शिनाख्त भी नहीं हो पाई है। मेडिकल कॉलेज परिसर के बाहर लगे पेड़ एक युवक का को लटका देखा। उसने कथाई कलर की बनियान पहन रखी थी और खुद की टी-शर्ट से बने फांसी के फंदे पर युवक लटका हुआ था। उसकी उम्र ३० से ३५ के बीच की है। पेड़ पर इस तरह लटके शव को देखने के लिए लोगों की भीड़ लग गई। इसके बाद लोगों ने पुलिस कंट्रोल रुम को इसकी सूचना दी और संयोगितागंज थाने के पुलिस जवान मौके पर पहुंचे। युवक का शव पेड़ पर काफी ऊंचाई पर लटका हुआ था। उसे निकालना भी पुलिस जवानों के लिए मुश्किल था। पुलिस ने शव को निकालने के लिए एक क्रेन बुलाई और उस पर चढ़कर युवक का शव पेड़ से नीचे उतारा और पोस्टमार्टम के लिए एमवाय अस्पताल पहुंचाया। युवक के पास से ऐसे कोई पहचान पत्र या अन्य दस्तावेज नहीं मिले, जिससे उसकी शिनाख्त हो सके। पुलिस आसपास के जिलों में गुमशुदा लोगों की जानकारी निकाल रही है।

## मैं 17 साल की, मेरी शादी रुकवाओ पानीपत की नाबालिग ने किया फोन

### बोली- छोटी बहन को करनी है लव-मैरिज, इसलिए मेरा विवाह करा रहे

पानीपत, 3 मार्च (एजेंसियां)। हरियाणा के पानीपत जिले के इसराना उपमंडल में बाल विवाह होने से 27 दिन पहले किशोरी ने अपनी शादी की सूचना बाल विवाह निषेध अधिकारी को दी। जिससे पर त्वरित काम करते हुए टीम ने इस विवाह को रुकवाया। साथ ही कोर्ट में याचिका डाल दी। जिस पर कोर्ट ने भी लड़की के बालिग होने तक शादी न करने की कड़ी हिदायत दी है। हालांकि किशोरी के सूचना देने पर मां-बाप ने उसके साथ मारपीट भी की। शादी इसलिए की जा रही थी क्योंकि किशोरी की 16 वर्षीय छोटी बहन ने लव मैरिज करनी है। जिसके चलते परिजन पहले बड़ी के हाथ पीले करना चाहते थे। इसी वजह लड़की के मां-बाप उसका जबरदस्ती बाल विवाह कर रहे थे। बड़ी लड़की की 12वीं की परीक्षा चल रही है।

**महिला पुलिसकर्मी ने भी लड़की को धमकाया**

जानकारी देते हुए बाल विवाह निषेध अधिकारी रजनी गुप्ता ने बताया कि मामला पानीपत के इसराना उपमंडल के एक गांव का है। उनके पास करीब 20 दिन पहले एक लड़की का फोन आया। उसने बताया कि उसकी उम्र 17 साल की है व 12वीं कक्षा की छात्रा है। उसके मां-बाप जबरदस्ती उसकी शादी कर रहे हैं। सूचना मिलने पर मौके पर इसराना थाना पुलिस को भेजकर यह रिश्ता रुकवाया।

**पुलिस के जाने के बाद मां-बाप ने लड़की को पीटा**

पुलिस के जाने के बाद मां-बाप ने उसकी पिटाई भी की। अगले दिन लड़की स्कूल के बहाने घर से निकली और महिला थाने में पहुंचकर बाल विवाह निषेध अधिकारी को लिखित शिकायत दी। शिकायत पर काम करते हुए टीम ने परिजनों को 20 फरवरी को कार्यालय बुलाया। जहां लड़की की मां पेश हुई और बताया कि उन्होंने 14 फरवरी को बेटी का रिश्ता तय किया है। मगर अब वह उसके 18 वर्ष उम्र होने तक उसका विवाह नहीं करेंगे।

**कोर्ट के आदेश- बालिग होने पर भी बिना मर्जी के नहीं होगी शादी**

घर जाने के बाद मां ने फिर से बेटी की तैयारियां शुरू कर दी उसने 29 मार्च को शादी की तारीख फिक्स करते हुए कहा कि अब वह यहां से उसे मामा के घर ले जाएंगे, जहां उसकी शादी करवा देंगे। जिसकी सूचना लड़की ने फिर से अधिकारी को दी सूचना मिलने पर फिर से लड़की के परिजनों और लड़का पक्ष को कार्यालय में बुलाया गया। साथ ही मामले में एक याचिका कोर्ट में भी डाली गई। कोर्ट ने दोनों पक्षों को कड़े शब्दों में आदेश दिए की लड़की की 18 वर्ष से कम उम्र में शादी करना कानूनन जुर्म है, इसलिए वे लड़की की शादी नहीं कर सकते। इतना ही नहीं कोर्ट ने यह भी कहा कि 18 वर्ष के बाद भी लड़की की मर्जी से ही उसकी शादी की जा सकती है।

**लड़की को भेजा गया शेल्टर होम**

दोनों पक्षों ने कोर्ट में वह अधिकारी के समक्ष फिर से लिखित बयान दिया कि वह लड़की के बालिग होने तक उसकी शादी नहीं करेंगे। इसके अलावा लड़की ने अपने बयानों में बताया कि उसके परिजन भले ही लिखित आश्वस्त कर रहे हैं कि वे शादी नहीं करेंगे। मगर फिर भी वे उसकी शादी कर देंगे। जिसके चलते लड़की को बाल कल्याण समिति को सुपुर्द कर शेल्टर होम भिजवाया गया।

## गजब हाल: पूर्व मंत्री याकूब की सील फैक्टरी पर बैंक ने दिया नौ करोड़ का लोन

**हर कोई हैरान, जानें पूरा मामला**

मेरठ, 3 मार्च (एजेंसियां)। मेरठ में पूर्व मंत्री याकूब कुरैशी पर गैंगस्टर 14 (ए) के तहत करोड़ों रुपये की संपत्ति को जब्त करने की कार्रवाई अटक गई है। एसएसपी रोहित सिंह सजवाण का कहना है कि अलफहीम मीटेक्स कंपनी में याकूब सहित उनके कई रिश्तेदार साझेदार हैं, जो गैंगस्टर के मुकदमे में नामजद नहीं हैं। इसलिए संपत्ति के हिस्सों के बारे में पता किया जा रहा है। पुलिस की जांच में सामने आया कि याकूब की सील पड़ी फैक्टरी को बैंक ने बिना जांच के ही नौ करोड़ रुपये का ऋण दिया है। बैंक अधिकारियों से भी पुलिस ने जवाब मांगा है। एसपी सिटी पीयूष सिंह के मुताबिक, 2019 में याकूब कुरैशी की फैक्टरी पर मेरठ विकास प्राधिकरण ने सील लगा दी थी। इसके बावजूद बैंक ने 2021-22 में याकूब कुरैशी की अलफहीम मीटेक्स कंपनी को 20 करोड़ रुपये का ऋण पास कर दिया था। इसमें नौ करोड़ रुपये बैंक से लिए जा चुके हैं। इसकी जानकारी पर पुलिस ने जांच की। इसमें बैंक की भूमिका पर सवाल उठे। बृहस्पतिवार को एसपी सिटी ने अपने कार्यालय में बैंक के अधिकारियों को बुलाकर इस बारे में जानकारी मांगी। पूछा गया कि सील पड़ी फैक्टरी पर कैसे ऋण पास हो गया। बैंक के अधिकारियों ने तीन दिन में जवाब देने समय मांगा है। वहीं, कोर्ट के आदेश से याकूब की फैक्टरी में रखा 58 फीसदी मीट रिलीज किया गया है, जबकि 42 फीसदी मीट को नष्ट करने के आदेश दिए गए हैं। बताया गया कि याकूब और उसके दोनों बेटे अभी जेल में बंद हैं।

**साझेदारी में फंसी कार्रवाई**

31 मार्च 2022 को याकूब की फैक्टरी में अवैध तरीके से मीट पैकिंग का भंडाफोड़ करके पुलिस ने याकूब, उनकी पत्नी संजीदा बेगम व दोनों बेटे इमरान, फिरोज सहित 17 लोग नामजद हुए थे। इसके बाद गैंगस्टर में याकूब परिवार नामजद हुआ। पुलिस ने याकूब की करोड़ों की संपत्ति जब्त करने के लिए चिह्नित की। स्कूल, हॉस्पिटल, 33 गाड़ी, दो मकान, देहात में भूमि और कई प्लाट की जानकारी पुलिस ने प्राधिकरण, जिला पंचायत, नगर निगम सहित अन्य विभागों से जुटा ली थी। वहीं गैंगस्टर के तहत जब्तीकरण की कार्रवाई से पहले विधिक राय ली गई। इसमें पता चला कि याकूब की फैक्टरी और भूमि पर कई साझेदार हैं। इसके चलते कार्रवाई अटक गई है। अब पुलिस याकूब की संपत्ति का हिस्सा अलग से निकालने में जुटी है।

## राज्यपाल के अभिभाषण में 'मेरी सरकार' कहने पर कांग्रेस का हंगामा, सदन से किया वॉकआउट

चंडीगढ़, 3 मार्च (एजेंसियां)। पंजाब विधानसभा का बजट सत्र राज्यपाल के अभिभाषण के साथ शुरू हुआ। राज्यपाल ने सरकार की उपलब्धियां गिनाईं और सरकार के प्रस्तावित कार्यों की भी जानकारी दी। अभिभाषण के दौरान मेरी सरकार शब्द इस्तेमाल करने पर कांग्रेस ने हंगामा किया। नेता प्रतिपक्ष प्रताप बाजवा ने राज्यपाल से कहा कि जब सरकार आपका सम्मान ही नहीं करती तो आप अब मेरी सरकार न कहें। इस पर मुख्यमंत्री भगवंत मान ने एतराज जताया। इसी दौरान राज्यपाल भी अभिभाषण पढ़ते हुए मेरी सरकार की जगह केवल सरकार शब्द का इस्तेमाल करने लगे। इस बीच सदन में पक्ष और विपक्ष के सदस्यों के बीच हंगामा शुरू हो गया। मुख्यमंत्री ने राज्यपाल से नियमों का हवाला देते हुए मेरी सरकार शब्द के इस्तेमाल का आग्रह किया, जिसके बाद राज्यपाल ने फिर से मेरी सरकार शब्द का उपयोग शुरू कर दिया। इस पर नाराज कांग्रेसी विधायक नारेबाजी करते हुए सदन से वॉकआउट कर गए। राज्यपाल ने प्रिंसिपल के सिंगापुर जाने का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उम्मीद है मेरे सवालों का सरकार जवाब देगी। अभिभाषण के दौरान राज्यपाल ने सदस्यों को नसीहत दी। उन्होंने कहा कि पंजाब की विधानसभा आदर्श है। सत्र के दौरान किसी तरह असंसदीय भाषा का प्रयोग न

हो। माननीय सदस्यों के बीच मतभेद हो सकता है लेकिन सदन के बीच अंतर्विरोध न हो। राज्यपाल ने 11:09 बजे अपना अभिभाषण 'वाहे गुरु जी दा खालसा, वाहे गुरु जी की फतेह के उद्घोष के साथ खत्म किया। मुख्यमंत्री भगवंत मान और राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित के बीच चल रही तनातनी के बीच सत्र के हंगामेदार होने के आसार हैं। विपक्ष ने सरकार को कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर घेरने की पूरी तैयारी कर ली है। बनवारी लाल पुरोहित ने अपने अभिभाषण में भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति अपनाने पर पंजाब सरकार की सराहना की। राज्यपाल ने कहा कि राज्य से भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए मेरी सरकार ने एंटी करप्शन एक्शन लाइन नम्बर 95012-00200 शुरू किया। विजिलेंस ब्यूरो ने 16 मार्च 2022 से 28 फरवरी 2023 की अवधि के दौरान 06 गजेटिड अधिकारियों, 79 नॉन गजेटिड अफसरों और 22 निजी व्यक्तियों के खिलाफ 83 ट्रैप मामले दर्ज किए, जो रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़े गए। 50 विजिलेंस जांचों का निपटारा कर दिया गया है। वहीं राज्यपाल ने सदन में पंजाब सरकार द्वारा शुरू की आम आदमी क्लिनिक योजना की तारीफ की। राज्यपाल ने कहा कि राज्य के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में 504 आम आदमी क्लिनिक संचालित किए जा रहे हैं, जहां लोग मुफ्त ओपीडी सुविधा का लांच उठा रहे हैं और मुफ्त डायग्नोस्टिक जांच हो रही है। उन्होंने कहा कि मैं गर्व से घोषणा करता हूँ कि हमारा राज्य एचएमआईएस डाटा के अनुसार 99.24% संस्थागत सुपुर्दगी के साथ 3 सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले राज्यों में से एक है। वहीं मंत्री ब्रह्म शंकर जिम्पा ने कहा कि अमृतपाल के मुद्दे पर सरकार करीब से नजर रख रही है। कांग्रेस के पास कोई मुद्दा नहीं था। इसलिए कांग्रेस ने वॉकआउट किया। एक साल में सरकार ने अच्छा काम किया है। अमृतपाल के मुद्दे पर उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री करीब से इस मामले को देख रहे हैं। मुख्यमंत्री की केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात हुई है। लोगों को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।

**सरकार को मिले 41,043 करोड़ रुपये के निवेश के साथ 2295 प्रोपोजल**

भगवंत मान सरकार को अपने शासनकाल के दौरान लगभग 41,043 करोड़ रुपये के प्रस्तावित निवेश के साथ 2295 निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जिससे लगभग 2,50,585 युवाओं को रोजगार मिलेगा। यह बात राज्यपाल ने बजट सत्र के दौरान अपने अभिभाषण में कहीं। उन्होंने कहा कि इस अवधि के दौरान प्राप्त कुछ प्रमुख परियोजनाओं में टाटा स्टील लिमिटेड 26 करोड रुपए, सनाथन पोलिकॉट प्राइवेट लिमिटेड 1600 करोड़ रुपये, नाभा पावर लिमिटेड 641 करोड रुपए, मैक्स

स्वतंत्र वार्ता

शनिवार, 4 मार्च- 2023

# पूर्वोत्तर में विकास की जीत

यह पहली बार हुआ है कि पूरे पूर्वोत्तर के राज्य नगालैंड, त्रिपुरा और मेघालय के चुनाव परिणामों ने देश का ध्यान अपनी ओर खींचा है। इसके पहले तो इन राज्यों को छोटा राज्य कह कर नजरंदाज किया जाता रहा है। यही वजह रही कि वहां के चुनाव पार्टियों की बजाय चेहरों पर लडी जाती रही हैं। मतदाता भी अपने हितैषी उम्मीदवार को पहचान कर उसे ही वोट देते रहे हैं। लेकिन इस बार पार्टियों के आधार पर वहां जीत-हार का आकलन किया जा रहा है और वहां के तीन राज्यों- त्रिपुरा, नगालैंड और मेघालय- के चुनाव नतीजे बता रहे हैं कि आगामी अन्य विधानसभा चुनावों का परिणाम क्या आने वाला है। इसके अलावा इन परिणामों का असर अगले साल होने वाले आम चुनाव पर भी पडना तय है। भाजपा ने अपनी रणनीति का तानाबाना बुनते हुए जो गठबंधन किया उसका असर त्रिपुरा और नगालैंड में मिली जीत में स्पष्ट दिख रहा है। भाजपा और उसके सहयोगी दल स्पष्ट बहुमत पा चुके हैं, जबकि मेघालय में त्रिशंकु विधानसभा की स्थिति है। त्रिपुरा में भाजपा ने प्रस्ताव रखा है कि अगर टिपरा मोथा उसका समर्थन करती है, तो सरकार बनने के बाद वह उसकी सारी मांगें मान लेगी। फिर भी यह सब भविष्य की बातें हैं। चुनावी राजनीति में पल-पल में आस्थाएं बदलती रहती हैं। सबकुछ परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। पूर्वोत्तर राज्यों की राजनीति दूसरे राज्यों की अपेक्षा थोड़ी भिन्न है। वहां कई स्थानीय मुद्दे जटिल हैं, जिनके आधार पर दलों का आपसी गठजोड़ तय किया जाता है। देखा जाए तो चाहे जो भी चुनाव हों सब सीटों का ही खेल होता है। जिसके पास सरकार बनाने लायक उम्मीदवार जीत जाते हैं, सरकार उसी की बनती है। लेकिन पार्टियों की स्थिति का आकलन तो उन्हें मिले मतों के आधार पर ही होता है। इस लिहाज से देखा जाए तो भाजपा गठबंधन को त्रिपुरा और नगालैंड में विजय मिली है, लेकिन आंकड़ों के मुताबिक उसे पहले की तुलना में कम सीटें मिली हैं और मत फीसद भी गिरा है। पर इस दृष्टि से देखें तो कांग्रेस की स्थिति भी बेहतर नहीं कही जा सकती, उसके मत फीसद में कुछ बढ़ोतरी जरूर दर्ज हुई है, लेकिन परिणाम तो निराशाजनक ही रहे। कयास लग रहे थे कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का वहां के चुनावों पर असर पड़ेगा और कांग्रेस को उसका लाभ मिलेगा, मगर सब उल्टा हो गया। वहां वाम दलों की पकड़ मजबूत हुआ करती थी और करीब पच्चीस साल तक सत्ता में रहे, मगर वे भी अपनी खोई जमीन वापस लेने में कामयाब नहीं हो पाए। पूर्वोत्तर के लोगों की बहुत पुरानी शिकायत रही है कि उनकी तरफ केंद्र की सरकारें ध्यान नहीं देतीं। उनके राज्यों में विकास परियोजनाओं की कोई रूपरेखा भी नहीं बनाई जाती। उनके सीमा और पहचान संबंधी विवादों के निपटारे की गंभीरता से कोशिश नहीं की जाती। इन्हीं समस्याओं पर अध्ययन कर भाजपा ने पूर्वोत्तर पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया। बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर जोर दिया गया। राज्यों की सीमा संबंधी विवादों को सुलझाने का प्रयास किया गया। इसके नतीजे प्रकट रूप में दिखने भी लगे हैं। इसका असर स्वाभाविक रूप से वहां के लोगों के मन पर पड़ा दिखाई दे रहा है। जबकि इन राज्यों के लोगों की वैचारिक पृष्ठभूमि भाजपा के सिद्धांतों से सीधे-सीधे मेल नहीं खाती, मगर विकास का मुद्दा उन्हें भाजपा से जोड़ता है। इससे एक बार फिर यह स्पष्ट हुआ है कि आम लोग वैचारिक और सैद्धांतिक मुद्दों के बजाय विकास के मुद्दों को अधिक तरजीह देते हैं। अगर केवल सिद्धांत प्रभावित करते, तो त्रिपुरा में भाजपा की वापसी संभव न हो पाती। मगर उसके सामने यह चुनौती तो है ही कि पूर्वोत्तर में अपनी पकड़ मजबूत बनाने के लिए उसे स्थानीय समस्याओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करना होगा। साथ ही आने वाले विधानसभा चुनाव के राज्यों पर एक बार फिर से फोकस करना जरूरी हो गया है।

# समाज सुधार में महिलाओं का योगदान किसी से कम नहीं



मुख्तार खान

समाज के विकास और उत्थान में महिलाओं और पुरुषों का समान योगदान रहा है। अक्सर पुरुषों के योगदान की चर्चा होती है, लेकिन महिलाओं द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों की उतनी चर्चा नहीं की जाती। महिला दिवस के अवसर पर हम आज दो ऐसी ही महान नारियों के जीवन और कार्य के बारे में जानेंगे, जिन्होंने आज से पौने दो सौ वर्ष पहले स्त्री और दलितों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया। ये दो महिलाएँ सावित्री बाई फुले और फातिमा शेख अपने समय की क्रांतिकारी महिलाएं थीं। दोनों ने एक साथ मिलकर शिक्षा और समाज सुधार के लिये कार्य किया। सावित्री बाई फुले के योगदान से तो हम परिचित हैं। लेकिन फातिमा शेख के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। सावित्री बाई के पत्रों द्वारा हमें फातिमा शेख की जानकारी मिलती है। सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिल्हे में नायगांव नाम में हुआ था। 1840 में सावित्री बाई का विवाह जोतिबा फुले से हुआ। जोतिबा अपनी मौसेरी बहन सगुना बाई के साथ रहते थे। विवाह के बाद जोतिबा फुले ने अपनी पढ़ाई जारी रखी। खुद की पढाई के साथ साथ जोतिबा घर पर सावित्री बाई को भी पढ़ाने लगे। बहुत जल्द ही सावित्रीबाई ने मराठी व अंग्रेज़ी पढ़ना लिखना सीख लिया। इस के बाद सावित्री बाई ने स्कूली परीक्षा पास कर ली। सावत्रि बाई शिक्षा का महत्तव जान गयी थीं। सावित्रीबाई और जोतिबा चाहते थे कि उन्हीं की तरह समाज के पिछड़े वर्ग की महिलाओं को भी पढ़ने लिखने का अवसर मिले। उस समय दलित व पिछड़ी जातियों के लिए शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी । जोतिबा और सावित्रीबाई ने अपने मन में लडकियों के लिये विद्यालय खोलने का निश्चय कर लिया। लेकिन समस्या यह थी कि लड़कियों को पढ़ाने के लिए महिला अध्यापिका कहां से लाये? जहां चाह होती है वहां राह निकल ही आती है। इस महान कार्य की ज़िम्मेदारी सावित्री बाई ने संभाली। उन्होंने मिशनरी कॉलेज से टीचर ट्रेनिग का कोर्स पूरा किया। अब वे एक प्रशिक्षित अध्यापिका बन गयीं थीं। इस तरह जोतीबा और सावित्री बाई ने पूना में सन 1848 में पहले महिला विद्यालय की नीव रखी। महिलाओं के लिये विद्यालय चलाना आसान काम ना था। शुरुआत में अभिभावक अपनी लडकियों को विद्यालय में भेजने के लिए तैयार नहीं हुए। लोग लड़कियों को पढ़ाने के पक्ष में ही नहीं थे। अज्ञानतावश उन्होंने यह धारणा बना ली थी कि यदि लडकियों को पढ़ाया गया तो उनकी सात पीढियाँ नरक की भागीदार बन जायेगी। ऐसी स्थिति में लोगों को समझना बड़ा कठिन था। इसके बावजूद सावित्री बाई ने हिम्मत नहीं हारी। वे लोगो के घर-घर जाती,उन्हें प्यार से समझती। शिक्षा का महत्त्व बताती। उनके इस कार्य से प्रेरित होकर पूना की एक और साहसी महिला शिक्षिका फातिमा शेख सामने आयीं। फातिमा शेख के साथ आ जाने से सावित्री बाई का हौसला दुगुना हो गया। फातिमा शेख का सम्बंध एक सामान्य मुस्लिम परिवार से था। उनका जन्म 9 जनवरी 1831 को हुआ था। ।अपनी बिरादरी की वह पहली पढ़ी लिखी महिला थीं। फातिमा शेख बड़े भाई उस्मान शेख के साथ पूना में ही रहती थीं। उस्मान शेख महात्मा फुले के बचपन के मित्र थे। महात्मा फुले की तरह वे भी खुले विचारों के थे। उन्हीं के प्रयास से फातिमा भी पढ़ लिख पाई थीं। फातिमा शेख के साथ जुड़ जाने से लडकियों के स्कूल में जान आ गयी । अब लड़कियों के स्कूल का काम बड़े उत्साह के साथ चलने लगा। फातिमा और सावित्री बाई दोनों सवेरे जल्दी उठ जातीं। पहले अपने घर का काम पूरा करतीं। इसके बाद पूरा समय अपने स्कूल को देती। जोतिबा और उस्मान शेख का सहयोग भी इन्हें बराबर मिलता रहता। शुरुआत में विद्यालय में केवल छह ही लड़कियां थीं। धीरे धीरे यह संख्या बढ़ने लगी। सब कुछ योजना अनुसार चल रहा था। लेकिन शहर के संभ्रांत वर्ग को लडकियों का यूं पढ़ना लिखना ठीक ना लगा। इस कार्य को शास्त्र विरोधी बताकर उन्होंने फुले परिवार का विरोध किया। इसके बावजूद सावित्री बाई अपने कार्य में जुटी रही। विरोध करने वालों ने जोतिबा के पिता गोविंदराव पर दबाव बनाया। गोविंदराव को सामाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी गयी। इस विरोध के चलते गोविन्दराव ने जोतिबा से विद्यालय बन्द करने या घर छोड़ देने की शर्त रखी। जोतिबा और सावित्री बाई किसी भी सूरत में अपना मिशन जारी रखना चाहते थे। पिता की बात उन्होंने नहीं मानी। अंत में उन्हें अपना घर छोड़कर जाना ही पड़ा। पूणे शहर में कोई उन्हें सहारा देने को तैयार नहीं था। सावित्री बाई को अपने घर से अधिक लडकियों के पढ़ाई की चिंता सताये जा रही थी। इधर संभ्रांत वर्ग ने फुले दंपति का सामजिक बहिष्कार कर रखा था। सामजिक बहिष्कार के डर से कोई उनकी सहयता के लिये आगे नहीं आया। फुले परिवार को धर्म विरोधी घोषित कर दिया गया था। ऐसी संकट की घड़ी में महात्मा फुले के बचपन के मित्र उस्मान शेख फरिश्ता बनकर सामने आये। उस्मान शेख ने अपना निजी बाड़ा फुले परिवार के लिये खोल दिया। शेख परिवार ने सावित्री बाई और जोतिबा को सहारा ही नहीं दिया बल्कि अपने घर का एक हिस्सा स्कूल चलाने के लिये भी दे दिया। इस तरह लड़कियों का विद्यालय अब फातिमा शेख के घर से ही चलने लगा। उस्मान शेख और फातिमा को भी अपने समाज के भीतर लगातार विरोध झेलना पड़ रहा था। सावित्री बाई की तरह ही फातिमा शेख को भी बुरा-भला कहा जाता। उन पर ताने कसे जाते, गालियां दी जाती। उन पर कीचड़, गोबर फेंका जाता, उनके कपड़े गंदे हो जाया करते। दोनों महिलाएं चुपचाप ये यातनाएँ सहती रहीं। फातिमा शेख और सावित्री बाई दोनों बड़ी निडर और साहसी महिलाएँ थीं। दोनों ने हार नहीं मानी, वे दूनी लगन और मेहनत के साथ लड़कियों का भविष्य संवारने में जुटी रहीं। उन्होंने 1850 में उन्होंने 'द नेटिव फीमेल स्कूल। पुणे' नामी संस्था बनाई। इस संस्था के अंतर्गत पुणे शहर के आस पास 18 विद्यालय खोल गये। उस ज़माने में महिलाओं की तरह ही दलित बच्चों के लिये भी शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी। इस समस्या को दूर करने के लिये महात्मा फुले ने'सोसायटी फ़ॉर द प्रमोटिंग एजुकेशन ऑफ़ महार एन्ड मांग' नामक संस्था की स्थापना की इस तरह महिलाओं के साथ-साथ वंचित समाज के बच्चों के लिए भी विद्यालय की शुरुआत हुई। फातिमा शेख ऐसी पहली मुस्लिम महिला बनी जिसने मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा के साथ साथ बहुजन समाज की शिक्षा के लिए भी काम किया। फातिमा शेख के बारे में बहुत कम जानकारी प्राप्त है। सावित्री बाई के पत्रों से हमें उनकी जानकारी मिलती है। हम समझ सकते हैं, आज से दो सौ वर्ष पूर्व किसी मुस्लिम महिला का इस तरह घर की चार दीवारी से बाहर आकर समाज कार्य करना, कितने साहस का काम रहा होगा? फातिमा शेख ने सावित्री बाई के मिशन को आगे ही नहीं बढ़ाया ब्लकि संकट की घड़ी में सदा उनके साथ खड़ी रही। सावित्री बाई की अनुपस्थिति में स्कूल प्रशासन की सारी जिम्मेदारी फातिमा शेख ही संभाला करती थी। विद्यालय में छात्राओं की संख्या बढ़ने लगी। शिक्षा ग्रहण करने के बाद उनकी छात्राएँ भी अध्यापिका की भूमिका निभाने लगी। आगे चलकर सावित्री बाई ने अपने सामाजिक कार्य को और विस्तार दिया। उन दिनों समाज में बाल विवाह प्रथा का चलन आम था। बहुत सी लड़कियां छोटी उम्र में ही विधवा हो जाया करती। इसके अतिरिक्त ऐसी अविवाहित माताएँ जिन्हें समाज पूरी तरह से बहिष्कृत कर देता, ऐसी पीड़ित महिलाओं के सामने सिवाय आत्महत्या के कोई और मार्ग नहीं रहता। महात्मा फुले और सावित्री बाई ने ऐसी पीडित महिलाओं के लिये 28 जनवरी 1853 को 'बाल हत्या प्रतिबंधक गृह' नाम से एक आश्रम खोला। देश में महिलाओं के लिए इस तरह का यह पहला आश्रम था।

# नडेला से अजय बांगा तक सफल होते भारतवंशी



आर.के. सिन्हा

भारत के सात समंदर पार से भारतवंशियों के सफलता की खबरें-कहानियां लगातार भारतीय मीडिया की सुर्खियां बनने लगी हैं। आप गौर करें कि भारतवंशी सिर्फ सियासत में ही झंडे नहीं गाड़ रहे हैं। ये तो हम 1960 के दशक से सुन रहे हैं। तब पहली बार कैरिबियाई टापू देश गुयाना में छेदी जगन राष्ट्राध्यक्ष बने थे। उनके बाद न जाने कितने भारतवंशी गुयाना, त्रिनिडाड, फीजी, मारीशस, सूरीनाम में सर्वोच्च पदों पर पहुंचे। अब ब्रिटेन में भारतवंशी और इंफोसिस कंपनी के फाउंडर चेयरमेन एन.नारायणमूर्ति के दामाद श्रषि सुनक ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बन गए। अब बात सियासत से हटकर बिजनेस की करेंगे। आप जानते हैं कि बीते बीसेक सालों के दौरान इंदिरा नुई (पेप्सी), पराग अग्रवाल ( ट्वीटर), विक्रम पंडित ( सिटी बैंक), सुंदर पिचाई ( गूगल), सत्या नेडाला (माइक्रोसाफ्ट), शांतनु नारायण (एडोब), राजीव सूरी (नोकिया) जैसी प्रख्यात कंपनियों के भारतीय सीईओ बन गए। अब बिल्कुल हाल ही में अजय बांगा को अमेरिका के राष्ट्रपति जो बीडेन ने वर्ल्ड बैंक का अध्यक्ष मनोनीत कर दिया। बांगा की विश्व स्तर पर पहचान तब बनी थी, जब वे मास्टर कार्ड के सीईओ थे। दरअसल बिजनेस में अजय बांगा या उनके जैसे सैकड़ों भारतीय अमेरिका तथा यूरोप में अपनी इबारत इसलिए लिख रहे हैं, क्योंकि उन्हें अपने देश में बहुत ही स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला। श्रेष्ठ शिक्षा ग्रहण करने के चलते ही लाखों भारतीयों की हर साल तकदीर बदल रही है। भारत में एक से बढ़कर एक विश्व स्तर के शिक्षण संस्थान हैं। इसलिये कम से कम यह तो मत ही कहिये कि हमारे यहाँ की तमाम शिक्षण संस्थायें बकवास हैं I कुछ हो भी सकती हैं, जैसे कहीं भी हो सकती हैं, लेकिन सभी नहीं I अजय बांगा को ही लें। उनका वर्ल्ड बैंक का प्रमुख बनना तय है। सबको गर्व है कि एक भारतीय मूल के शख्स को इतनी अहम जिम्मेदारी मिलने जा रही है। उन्होंने राजधानी के सेंट स्टीफंस कॉलेज तथा आईआईएम, अहमदाबाद में पढ़ाई की थी। पर जिस संस्था ने सेंट स्टीफंस क़ॉलेज की नींव रखी थी उसे कितने लोग जानते हैं। उसकी बात करना भी जरूरी है। इसका नाम है दिल्ली ब्रदर्स सोसायटी। इससे गांधी जी के सहयोगी और स्वाधीनता सेनानी दीन बंधु सीएफ एंड्रयूज भी जुड़े हुए थे। वे सेंट स्टीफंस कॉलेज में अंग्रेजी पढ़ाते थे। वे दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी से 1914 में मिले थे। उन्हीं के प्रयासों से ही गांधी जी और कस्तूरबा गांधी पहली बार 12 अप्रैल-15 अप्रैल, 1915 को दिल्ली आए थे। वे ब्रिटिश नागरिक होते हुए भी भारत की आजादी के प्रबल पक्षधर थे। इससे अंदाजा लग जाएगा कि सेंट स्टीफंस क़ॉलेज को खोलने वाली संस्था का मूल चरित्र किस तरह का है। उसकी भारत को लेकर निष्ठा निर्विवाद है। बांगा ने इंडियन इंस्टीच्यूट आफ मैनेजमेंट (आईआईएम), अहमदाबाद से भी पढ़ाई की। भारत सरकार, गुजरात सरकार और औद्योगिक क्षेत्रों के सक्रिय सहयोग से एक स्वायत्त निकाय के रूप में 1961 में इसकी स्थापना हुई। चार दशकों में यह भारत के प्रमुख प्रबंधन संस्थान से एक उल्लेखनीय अंतरराष्ट्रीय मैनेजमेंट स्कूल के रूप में विकसित हुआ है। आईआईएम के विद्यार्थी सारी दुनिया में छाए हुए हैं। आईआईएम ने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के साथ प्रारंभिक सहयोग किया था। इस सहयोग ने संस्थान के शिक्षा के दृष्टिकोण को काफी प्रभावित किया। धीरे-धीरे, यह पूर्वी और पश्चिमी मूल्यों के सर्वोत्तम संगम के रूप में उभरा। आप गौर करें कि भारत या भारत से बाहर जाकर बड़ी कामयाबी हासिल करने वालों में आईआईटी में पढ़े छात्रों की तादाद बहुत अधिक है। एन. नारायणमूर्ति खुद आईआईटी कानपुर से हैं। पराग अग्रवाल पढ़े हैं आईआईटी, मुंबई में। इसने देश-दुनिया को चोटी के सीईओ से लेकर इंजीनियर दिए हैं। आप नए उद्यमियों जैसे सचिन बंसल और बिन्नी बंसल की चर्चा न करें ऐसा तो नहीं हो सकता। इन दोनों ने 2007 में फ्लिपकार्ट की स्थापना की थी। ये दोनों आईआईटी, दिल्ली में रहे। भारत में पहली आईआईटी की स्थापना कोलकाता के पास स्थित खड़गपुर में 1950 में हुई थी। भारत की संसद ने 15 सितंबर 1956 को आईआईटी एक्ट को मंज़ूरी देते हुए इसे ₹राष्ट्रीय महत्व के संस्थान₹ घोषित कर दिया। इसी तर्ज़ पर अन्य आईआईटी मुंबई ( 1958), मद्रास ( 1959), कानपुर ( 1959), तथा नई दिल्ली ( 1961) में स्थापित हुंई। फिर गुवाहाटी में आई आई टी की स्थापना हुई। सन 2001 में रुड़की स्थित रुड़की विश्वविद्यालय को भी आईआईटी का दर्जा दिया गया। तो बहुत साफ है कि दशकों पहले भारत से संसार के विभिन्न देशों में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तक बन रहे हैं। और अब भारत में ही शिक्षित नौजवान दुनिया के चोटी की कंपनियों के सीईओ बनाए जा रहे हैं। ये इसलिए हो रहा है, क्योंकि इन्हें श्रेष्ठ शिक्षा मिल रही है। पर हमें देश के तमाम कॉलेजों को सेंट स्टीफंस, आईआईटी और आईआईएम के स्तर के बनाने के बारे में विचार करना होगा। इन्हें आधुनिक सुविधाओँ से लैस करना होगा। पर सबसे अहम चुनौती यह रहेगी कि इन में बेहतरीन फैक्ल्टी की नियुक्ति हो। हमें उन अध्यापकों को प्रोत्साहित करना होगा जो अपने शिष्यों के प्रति समर्पण का भाव रखते हैं। अध्यापकों को अपने को लगातार अपने विषय की आधुनिकतम जानकारी से अपडेट रखना होगा। आमतौर पर हमारे यहां बहुत से अध्यापक एक बार स्थायी पर लगने के बाद कभी कुछ नया लिखते-पढ़ते नहीं हैं। हमें अपने स्कूलों को भी निरंतर सुधार करते रहना होगा संतोष की बात कि दिल्ली ब्रदर्स सोसायटी अब दिल्ली-सोनीपत सीमा पर एक स्कूल स्थापित करने जा रही है। यानी कॉलेज खोलने के बाद अब स्कूल खोला जा रहा है। इसका भी लक्ष्य सर्वश्रेष्ठ शिक्षा ही देना होगा जहां से जैसे मेधावी छात्र पढ़कर बेहतर नागरिक बनें। जिस संस्था का संबंध दीन बंधु सीएफ एंड्रयूज से है, वह तो श्रेष्ठ स्कूल ही खोलेगी। दरअसल हमारे यहां कई धूर्त तत्वों ने स्कूलों को कमाई का धंधा बनाया हुआ है। उनको कसने की जरूरत है। इनका शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं है। पर ये जुगाड़ करके स्कूलों के लिए जमीन हथियाने में सफल रहे। उसके बाद ये लूटपाट कर रहे हैं। इसी तरह से दिल्ली में अरविंद केजरीवाल सरकार ने स्कूलों में सुधार के नाम पर राजधानी वालों को बहुत ठगा है। हां, कुछ स्कूलों की इमारतें नई अवश्य बन गई हैं। इसके अलावा इनमें कहीं कोई सुधार नहीं हुआ।

# जन जन की आस्था के प्रतीक हैं खाटू के श्री श्याम

हमारे देश में बहुत से ऐसे धार्मिक स्थल हैं जो अपने चमत्कारों व वरदानों के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हीं मंदिरों में से एक है राजस्थान में शेखावाटी क्षेत्र के सीकर जिले का विश्व विख्यात प्रसिद्ध खाटू श्याम मंदिर। यहां फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को श्याम बाबा का विशाल वार्षिक मेला भरता है। जिसमें देश-विदेशों से आये करीबन 25 से 30 लाख श्रृद्धालु शामिल होते हैं। खाटू श्याम का मेला राजस्थान के बड़े मेलों में से एक है। इस मंदिर में भीम के पौत्र और घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक की श्याम यानी कृष्ण के रूप में पूजा की जाती है। इस मंदिर के लिए कहा जाता है कि जो भी इस मंदिर में जाता है उन्हें श्याम बाबा का नित नया रूप देखने को मिलता है। कई लोगों को तो इस विग्रह में कई बदलाव भी नजर आते है। कभी मोटा तो कभी दुबला। कभी हंसता हुआ तो कभी ऐसा तेज भरा कि नजरें भी नहीं टिक पातीं। श्याम बाबा का धड़ से अलग शीष और धनुष पर तीन वाण की छवि वाली मूर्ति यहां स्थापित की गईं। कहते हैं कि मन्दिर की स्थापना महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद स्वयं भगवान कृष्ण ने अपने हाथों की थी। श्याम बाबा की कहानी महाभारत काल से आरम्भ होती है। वे पहले बर्बरीक के नाम से जाने जाते थे तथा भीम के पुत्र घटोतकच और नाग कन्या अहिलवती के पुत्र थे। बाल्यकाल से ही वे बहुत वीर और महान योद्धा थे। उन्होने युद्ध कला अपनी मां से सीखी। भगवान शिव की घोर तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया और उनसे तीन अभेध्य बाण प्राप्त कर तीन बाणधारी के नाम से प्रसिद्ध हुये। अग्नि देव ने प्रसन्न होकर उन्हें धनुष प्रदान किया जो उन्हें तीनो लोकों में विजयी बनाने में समर्थ थे।

कौरवों और पाण्डवों के मध्य महाभारत युद्ध का समाचार बर्बरीक को प्राप्त हआ तो उनकी भी युद्ध में सम्मिलित होने की इच्छा जागृत हुयी। जब वे अपनी मां से आशीर्वाद प्राप्त करने पहुंचे तब मां को हारे हुये पक्ष का साथ देने का वचन दिया। महाभारत के युद्ध में भाग लेने के लिये वे अपने नीले रंग के घोडे पर सवार होकर धनुष व तीन बाणों के साथ कुरूक्षेत्र की रणभूमि की और अग्रसर हुये। भगवान कृष्ण ने ब्राह्मण वेश धारण कर बर्बरीक से परिचित होने के लिये उसे रोका और यह जानकर उनकी हंसी भी उड़ायी कि वह मात्र तीन बाण से युद्ध में सम्मिलित होने आया है। ऐसा सुनने पर बर्बरीक ने उत्तर दिया कि मात्र एक बाण शत्रु सेना को ध्वस्त करने के लिये पर्याप्त है और ऐसा करने के बाद बाण वापिस तरकस में ही आयेगा। यदि उन्होने तीनो बाणों को प्रयोग में ले लिया गया तो तीनो लोकों में हाहाकार मच जायेगा। इस पर कृष्ण ने उन्हें चुनौती दी की इस पीपल के पेड के सभी पत्रों को छेद कर दिखलाओ। जिसके नीचे दोनो खड़े थे। बर्बरीक ने चुनौती स्वीकार की और अपने तुणीर से एक बाण निकाला और ईश्वर को स्मरण कर बाण पेड़ के पत्तो की और चलाया। तीर ने क्षण भर में पेड के सभी पत्तों को भेद दिया और कृष्ण के पैर के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने लगा। क्योंकि एक पत्ता उन्होनें अपने पैर के नीचे छुपा लिया था। तब बर्बरीक ने कृष्ण से कहा कि आप अपने पैर को हटा लीजिये वर्ना ये आपके पैर को चोट पहुंचा देगा। कृष्ण ने बालक बर्बरीक से पूछा कि वह युद्ध में किस और से सम्मिलित होगा तो बर्बरीक ने अपनी मां को दिये वचन दोहराते हुये कहा कि वह युद्ध में निर्बल और हार की और अग्रसर पक्ष की तरफ से भाग लेगा। कृष्ण जानते थे कि युद्ध में हार तो कौरवों की ही निश्चित है।

अगर बर्बरीक ने उनका साथ दिया तो परिणाम उनके पक्ष में ही होगा। ब्राह्मण बने कृष्ण ने बालक बर्बरीक से दान की अभिलाषा व्यक्त की। इस पर वीर बर्बरीक ने उन्हें वचन दिया कि अगर वो उनकी अभिलाषा पूर्ण करने में समर्थ होगा तो अवश्य करेगा। कृष्ण ने उनसे शीश का दान मांगा। बालक बर्बरीक क्षण भर के लिये चकरा गया परन्तु उसने अपने वचन की दृढ़ता जतायी।

बालक बर्बरीक ने ब्राह्मण से अपने वास्तिवक रूप में आने की प्रार्थना की और कृष्ण के बारे में सुन कर बालक ने उनके विराट रूप के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की। तब कृष्ण ने उन्हें अपना विराट रूप दिखाया। उन्होने बर्बरीक को समझाया कि युद्ध आरम्भ होने से पहले युद्धभूमि की पूजा के लिये एक वीर क्षत्रिय के शीश के दान की आवश्यक्ता होती है। उन्होनें बर्बरीक को युद्ध में सबसे बड़े वीर की उपाधि से अलंकृत कर उनका शीश दान में मांगा। बर्बरीक ने उनसे प्रार्थना की कि वह अंत तक युद्ध देखना चाहता है। श्री कृष्ण ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। फाल्गुन माह की द्वादशी को उन्होनें अपने शीश का दान दिया। उनका सिर युद्धभूमि के समीप ही एक पहाड़ी पर सुशोभित किया गया जहां से बर्बरीक सम्पूर्ण युद्ध का जायजा ले सकते थे।

-रमेश सर्राफ धमोरा

# होली पर चंग,बांसुरी, धमाल फीके पडे



सुनील कुमार महला

होली इस बार सात मार्च को तो धुलंडी( रंग खेलने का दिन) आठ मार्च को है। वास्तव में,होली का त्योहार ऐसे समय में आता है जब वातावरण में एक नवीन ऊर्जा समाई होती है, प्रकृति अपने रंगों से निखर रही होती है, न सर्दी, न ही गर्मी। ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति का मन मयूर की भांति चहकने लगता है, महकने लगता है। होली पर हर तरफ रंगों की बरसात होती है, पर्यावरण की छटाओं में रंग ही रंग छा जाते हैं, घुल जाते हैं। रंगों की महक हमारे तन-मन को स्फूर्ति, आनंद, उल्लास व ऊर्जा से परिपूर्ण कर देती है। हमारे देश की संस्कृति के सभी पर्व ,त्योहार आदमी को आदमी से जोड़ते हैं, होली भी एक ऐसा ही त्योहार है जो हमारे रिश्तों को जोड़ता है, सहेजकर रखता है, हमें आपसी मजबूत बंधन में बांधता है। होली के रंग बिखरते हैं तो मन जुड़ते हैं, टूटते नहीं हैं। लेकिन अब विरले ही होली के त्योहार पर धमाल व राजस्थानी लोक गीत, स्वांग, हंसी ठिठौली सुनाई दिखाई देतीं हैं। समय, काल व परिस्थितियों के अनुसार होली के त्योहार को मनाने के तौर तरीकों में काफी आमूल चूल परिवर्तन देखने को मिले हैं। आपने महसूस किया होगा कि आजकल पहले की तरह गांवों, शहरों की गली मोहल्लों में हरे ओ भरदे मायरियो नरसिंह जी थारी नान्ही बाई गो भरदे मायरियो...!, एहे गांजो पीज्या रे सदा रा शिव भोला अमली रे...!, लिछमण क रे बाण लग्यो र शक्ति लिछमण क रे...!, हरे नित बरसो रे मेहवा म्हारे बागड़ म रे...! कोनी मानै ये यशोदा थारो बनवारी रे कोनी मानै ये...! लेहरो ल्यादै रै नणदी का बीरा लैरो ल्यादै रे..., चालो देखण न बाईजी थारो बीरो नाचै रे चालो देखण न...!, रूत आई रे पपीया तेरं बोलण गी रै रूत आई रे...! कठै सूं आई सूंठ...कठै सूं आयो जीरो...!, फागुन आयो रे रसिया...! ,सत राखो रे भाईड़ा...जग में दो दिन रहणो रे..सत राखो रे...! जैसी अनगिनत धमालें कम ही सुनने को मिलती हैं। पहले के जमाने में गांव की गली गली, कूचे कूचे में धमाल की धमक गूंजती थी। होली के त्योहार के आगमन से बीस पच्चीस दिन पहले यहां तक कि महीनों महीनों पहले ही धमाल गाने बजाने वाले डफ,चंग, बांसुरी से लैस नजर आने लगते थे, आपसी प्रेम, सद्भाव, भाईचारे की मिसाल देखने को मिलती थी। लेकिन आज कहीं कहीं ही इसकी झलक देखने सुनने को मिलती हैं और इसको भी गांव घरों के कुछ बुजुर्ग लोग ही आज तलक जिंदा रखे हुए हैं।

यह बहुत ही चिंतनीय है कि आज की युवा पीढ़ी को धमाल, चंग, डफ तक की जानकारी तक नहीं है। होली के रंग बिना चंग, बांसुरी, धमाल के फीके हैं। आज वसंत का संदेशवाहक यह त्योहार बेरंग, बेदम हो चला है, आज फाल्गुनी धमाल केवल वीडियो, कांपैक्ट डिस्क व टीवी, मोबाइल में बंद हो गई है। पहले गांवों में वसंत पंचमी से ही रंग आसमां में उड़ने लगते थे। रास,नृत्य, संगीत, हंसी ठिठौली में बड़ा ही आनंद समाया हुआ था। लोग एक दूसरे के गले मिलते थे, गालों पर गुलाल,अबीर नजर आता था, मन मयूर, पपीहा बनता था। खेतों में सरसों के साथ दिल भी खिलते थे।

# राजनीति और महाकवि दिनकर

उत्तर प्रदेश की विधान सभा में बजट सत्र के दौरान नेता सदन और प्रतिपक्ष के बीच जुबानी दंगल में राष्ट्रकवि दिनकर जी आ फंसे। जाति के मसले को लेकर उनकी मशहूर कृति रश्मिरथी की पंक्तियां पढ़ी गयीं। मगर पढ़ने का जो लहजा रहा वह क्षुब्ध करने वाला था। हिन्दी शब्दों का उच्चारण अशुद्ध था। नेता प्रतिपक्ष तो लगता है हिन्दी पढ़े ही नहीं हैं। एक तो हिन्दी आती नहीं दूसरे साहित्यिक हिन्दी और उस पर दिनकर की रश्मिरथी। निहायत भोंडापन।

जैसे बिच्छू का मंत्र न जानें और सर्प के बिल में ऊंगली डाल दे, ऐसा ही दृश्य था। भई दिखावे की ऐसी भी क्या तलब कि खुद की बेइज्जती गले आ पड़े।

अब तो यही लगता है कि वह समय व्यतीत हो गया जब बौद्धिक अच्छे पढ़े लिखे लोगों की राजनीति में अच्छी खासी उपस्थिति थी। अब जो अधकचरापन राजनीति में आ पसरा है उसमें बौद्धिकता और साहित्यिक समझ का लोप हो चुका है।

और जब इनके हाथों और जुबान पर कोई दिनकर, महादेवी, धूमिल, दुष्यंत कुमार आदि की कृति गाहे बगाहे आ जाती है तो उसकी छीछालेदर तय है। मगर बेहयाई देखिये कि हिन्दी ठीक से पढ़नी आये न आये वे महान रचनाकारों की कृतियों से उद्धरण देंगे जरुर। समझ में नहीं आता कि ऐसे भोंडेपन से वे साबित करना क्या चाहते हैं? कि उन्हें भी श्रेष्ठ साहित्य पढ़ने का चस्का है.. या फिर वे कुछ कम पढ़े लिखे नहीं हैं या फिर देखो कि मैंने एक महान लेखक को उद्धृत करके यह साबित कर दिया है कि मेरी और उनकी सोच यकसां है। मतलब मेरी विचारधारा का अनुमोदन उनकी कृति में है। चाहे जो भी हो मगर इतना तो साहित्य प्रेमियों पर रहम कीजिये कि जब आप किसी महान रचनाकार के लिखे को खुद ठीक से पढ़ नहीं सकते तो मत ही पढ़िये। यह मुझ जैसों को बहुत बुरा लगता है। इसमें भी तनिक अपमान नहीं है कि किसी और से प्रश्नगत उद्धृत अंश पढ़ा दीजिये। इसमें कम से कम आपकी आनपढ़ता की पोल पट्टी नहीं खुलेगी, इज्जत सलामत रहेगी। और यह कोई देखा देखी का मामला भी नहीं है कि प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री जी अपने संबोधन में माने जाने कवि लेखकों की उक्तियां उद्धृत करते हैं तो आप भी करे हीं। जब वैसी क्षमता और शऊर न हो तो कृपा करके महान रचनाकारों को तो बख्श ही दीजिये। यह उनके प्रशंसकों को बेहद खराब लगता है। और आपकी भी छवि निखरने के बजाय धूमिल होती है।

-डॉ अरविन्द मिश्रा

# होली से पहले शनि प्रदोष व्रत

**शनि प्रदोष व्रत 2023 मुहूर्त -पंचांग के अनुसार फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की शनि त्रयोदशी तिथि 04 मार्च 2023, शुक्रवार के दिन प्रातःकाल 11 बजकर 43 से प्रारंभ होकर 05 फरवरी 2023 को दोपहर 02 बजकर 07 बजे समाप्त होगी।प्रदोष व्रत में शिव पूजा शाम के समय की जाती है, इसलिए शनि प्रदोष व्रत 4 मार्च को मान्य होगा।**

प्रत्येक माह की त्रयोदशी तिथि के दिन प्रदोष व्रत रखा जाता है। ये तिथि भगवान शिव को समर्पित है।त्रयोदशी तिथि सप्ताह के जिस वार को होती है, प्रदोष व्रत उस नाम से जाना जाता है।जैसे सोमवार को आने वाला प्रदोष सोम प्रदोष कहलाता है. कहते हैं शिव को प्रसन्न करने के लिए सोम प्रदोष और शनि प्रदोष व्रत का विशेष महत्व है। मान्यता है कि प्रदोष व्रत रखने वालों को हर दोष, रोग, दुख खत्म होते हैं और अच्छे दिनों की शुरुआत होने लग जाती है।इस साल फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष में आने वाला प्रदोष व्रत कब है आइए जानते हैं। फाल्गुन माह के दूसरे प्रदोष व्रत की डेट, मुहूर्त और पूजा विधि.

**फाल्गुन प्रदोष व्रत 2023 डेट-** फाल्गुन महीने के शुक्ल पक्ष में आने वाला प्रदोष व्रत 4 मार्च 2023, शनिवार को है।ये शनि प्रदोष व्रत होगा।फाल्गुन का ये दूसरा शनि प्रदोष व्रत है। इससे पहले महाशिवरात्रि के दिन शनि प्रदोष व्रत का संयोग बना था।शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से साधक को शिव और शनि देव दोनों का आशीर्वाद मिलता है।पुत्र प्राप्ति के लिए कामना के लिए शनि प्रदोष व्रत शुभ फलदायी माना गया है.

**शनि प्रदोष व्रत उपाय**

**आर्थिक तंगी -** मान्यता है कि प्रदोष काल में शिव जी साक्षात शिवलिंग में वास करते हैं, इसीलिए प्रदोष व्रत में इस समय शिव का स्मरण करके उनका पूजन किया जाए तो हर मनोकामना पूरी होती है। शनि प्रदोष वाले दिन शाम को 108 बार महामृत्युंजय मंत्र का जाप करते हुए शिवलिंग का जलाभिषेक करें।कहते हैं इस उपाय से आर्थिक तंगी दूर होती है।

**व्यापार और नौकरी में तरक्की -** कुंडली में शनि दोष की वजह से व्यापार और नौकरी में समस्याओं का सामना कर रहे हैं तो शनि प्रदोष व्रत वाले दिन एक मुठ्ठी काली उड़द के दाने उलटे हाथ से अपने ऊपर से 7 बार घुमाएं और फिर इन्हें काले कौवे को खिला दें।कहते हैं ये उपाय तरक्की के रास्ते खोल देता है।

**संतान संबंधी उपाय -** शनि प्रदोष व्रत के दिन पीपल और बेल पत्र के पेड़ को सीचे।मान्यता है कि इस दिन बेल के पेड़ के घी का दीपक लगाकर शिव चालीसा का पाठ करने से शिव हर पीड़ा से आपकी रक्षा करते हैं।संतान पर कभी संकट नहीं आता।

# ऑफिस का काम करते समय अपना लें ये उपाय

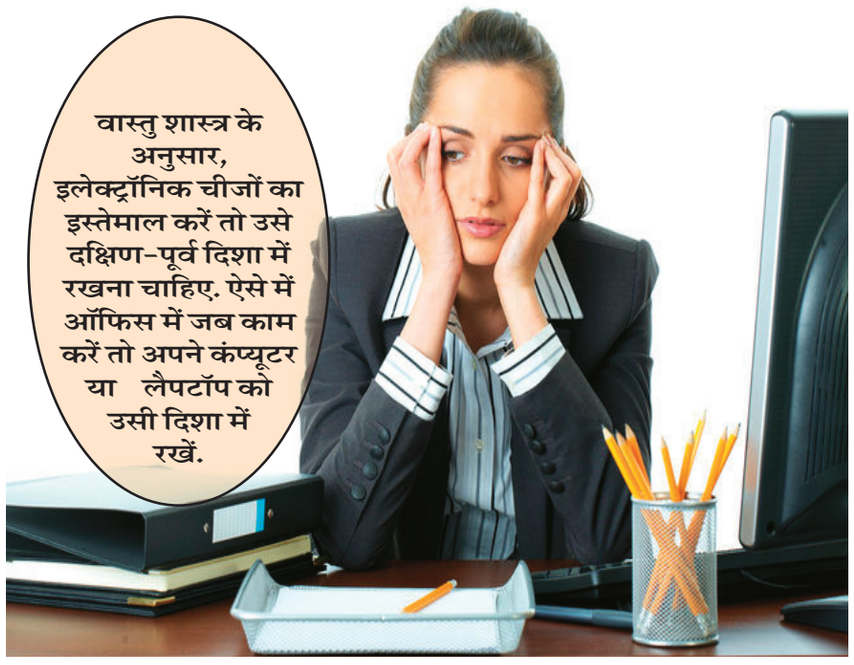


वास्तु शास्त्र के अनुसार, करियर में तरक्की चाहते हैं तो हमेशा सिर को पूर्व दिशा में रखें वास्तु शास्त्र को मानने वाले इसकी ताकत भी बताते हैं। वास्तु को मानने वाले अपना घर, ऑफिस, दुकान या जहां वो लोग जाते हैं उस जगह को वास्तु के हिसाब से सजाते हैं।वास्तु शास्त्र में हर तरह की सफलता के बारे में बताया गया है और अगर आप अपने जीवन में सफलता चाहते हैं तो अपने वर्कप्लेस को वास्तु के हिसाब से सजाएं।आज हम आपको ऑफिस के लिए कुछ ऐसे वास्तु टिप्स देने वाले हैं जिसको अपनाकर आप अपने जीवन में सफलता को अट्रैक्ट कर सकते हैं इससे आपका आने वाला जीवन काफी सरल बन सकता है बस आपको ये सभी प्रयास करने चाहिए।

1.करियर में सफलता चाहने के लिए अपने काम में बढ़ोत्तरी करने की जरूरत होती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, काम करने वाले को अपने काम करने वाले टेबल पर बांस का पौधा और क्रिस्टल रखने से कार्य की क्षमता बढ़ती है।

2.वास्तु शास्त्र के अनुसार, ऑफिस में काम करते समय पैरों को एक-दूसरे पर चढ़ाकर नहीं बैठना चाहिए।ऑफिस में काम करने के दौरान इस्तेमाल करने वाली कुर्सी के पीछे का हिस्सा हमेशा ऊंचा रखें।

3. वास्तु शास्त्र के अनुसार, करियर में तरक्की चाहते हैं तो हमेशा सिर को पूर्व दिशा में रखें।ऐसा करने से मन शांत रहता है और ऑफिस में काम करने में मन लगा रहता है।

4. वास्तु शास्त्र के अनुसार, काम घर से करें या ऑफिस से करें लेकिन उसके लिए जगह अलग होनी चाहिए। इसके लिए छोटी डेस्क और आरामदायक कुर्सी जरूर रखें।ये टेबल आयताकार या वर्गाकार होनी चाहिए।

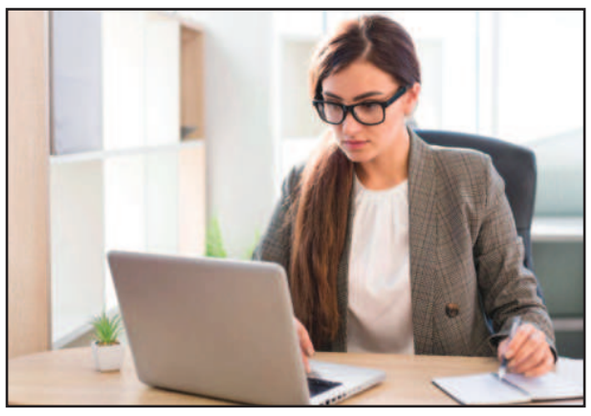

# होलाष्टक के दौरान घर से निकल दें ये सामान

## खराब इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम

**घर में अक्सर बिजली के उपकरण या इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम खराब पड़े होते हैं। इन्हें घर पर रखना शुभ नहीं माना जाता है। बेहतर होगा आप या तो ऐसे इलेक्ट्रॉनिक सामान घर से बाहर निकाल दें या फिर उन्हें रिपेयर करवा लें।**

## खंडित मूर्तियां

**खंडित या टूटी मूर्तियां घर में रखना बेहद अशुभ माना जाता है। अगर आपके घर में कोई खंडित मूर्ति है तो उसे तुरंत बाहर निकाल दें।ऐसी मूर्तियों को आप किसी तालाब या नदी में प्रवाहित कर कर सकते हैं।**

## खराब घड़ी

**क्या आप जानते हैं बंद या खराब घड़ी इंसान का समय खराब कर सकती है। ऐसी चीजों को घर में रखना अशुभ होता है।अगर घर की घड़ी खराब है तो उसे तुरंत घर से बाहर कर दें।रुकी हुई घड़ी नेगेटिव ऊर्जा पैदा करती है।**

होली एक ऐसा त्योहार है, जिसे सभी धर्मों के लोग पूरे उत्साह और मस्ती के साथ मनाते हैं।प्रेम के रंगों से सजा यह त्योहार हर धर्म, संप्रदाय और जाति के बंधन को खोल देता है और भाईचारे का संदेश देता है। इस दिन लोग अपने पुराने गिले-शिकवे भूलकर एक-दूसरे को गले लगाते हैं और एक-दूसरे को गुलाल लगाते हैं।बच्चे और युवा रंगों से खेलते हैं।यह पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।इस साल होली 8 मार्च को मनाई जाएगी।ज्योतिष शास्त्र में कहा गया है कि होली से पहले घर में रखी कुछ अशुभ चीजों को बाहर निकाल देना चाहिए।ये चीजें घर में नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाती हैं।इसलिए होलाष्टक के दौरान इन चीजों को घर से निकालने की तैयारी शुरू कर दें।

## घर में लगे मकड़ी के जाले

**होली का स्वागत करने के लिए सभी घर की साफ-सफाई करते हैं। ऐसे में ध्यान रखें कि घर में कहीं भी मकड़ी के जाले नहीं होने चाहिए।घर में लगे जाले दरिद्रता को बढ़ावा देते हैं।**

# इस महीने शुरू होगा सनातन नववर्ष

**6 मार्च, सोमवार: इस तारीख को शाम में होलिका पूजन किया जाएगा। फिर सूर्यास्त के बाद रात में होलिका दहन किया जाएगा।**

**7 मार्च, मंगलवार: इस दिन व्रत की फाल्गुन पूर्णिमा है। इसके अगले दिन बुधवार को होली खेली जाएगी। इस दिन से चैत्र, नया हिन्दी महीना शुरू हो जाएगा।**

इस साल मार्च का महीना बहुत खास रहेगा। क्योंकि इसमें होली के साथ ही सनातन नववर्ष, गुड़ी पड़वा सहित रामनवमी जैसे बड़े तीज-त्योहार रहेंगे। ये महीना ज्योतिषीय नजरिये से भी खास रहने वाला है, क्योंकि मार्च में ही पांच ग्रहों की चाल बदलेगी।

**जानिए इस महीने की खास तारीखें और उन दिनों कौन से शुभ काम किए जा सकते हैं...**

**11 मार्च, शनिवार:** इस तारीख को संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत रहेगा। इस दिन गणेशजी के 12 नामों से पूजा की जाएगी और व्रत किया जाएगा।

**12 मार्च, रविवार:** इस दिन रंगपंचमी पर्व मनेगा। मध्यप्रदेश के ज्यादातर शहरों में होली बाद पांचवी तिथि पर फिर से एक-दूसरे को रंग लगाकर त्योहार मनाया जाता है।

**14 मार्च, मंगलवार:** इस तारीख को शीतला सप्तमी व्रत किया जाएगा। इस दिन देवी शीतला की विशेष पूजा की जाती है और पूरे दिन खाना नहीं बनता। एक दिन पहले बना ठंडा खाना खाया जाता है।

**15 मार्च, बुधवार:** इस दिन सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेगा। इसलिए मीन संक्रांति पर्व मनेगा। इसी दिन से एक महीने तक खरमास रहेगा। इस दौरान मांगलिक काम नहीं किए जाएंगे।

**18 मार्च, शनिवार:** इस दिन चैत्र महीने की पहली एकादशी है। इस दिन भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी की पूजा के साथ ही पापमोचिनी एकादशी व्रत किया जाएगा।

**21 मार्च, मंगलवार:** इस तारीख को चैत्र महीने की अमावस्या है। मंगलवार होने से ये भौमावस्या संयोग कहलाएगा। इस दिन किए गए स्नान-दान और पूजा-पाठ का कई गुना फल मिलेगा।

**22 मार्च, बुधवार:** इस दिन चैत्र महीने की प्रतिपदा है। इस दिन से वासंती नवरात्रि और सनातन नववर्ष शुरू हो जाएगा। इस दिन गुड़ी पड़वा पर्व भी रहेगा।

**24 मार्च, शुक्रवार:** इस तारीख को चैत्र महीने की तृतीया तिथि रहेगी। इस दिन सुहागन महिलाएं सौभाग्य के लिए गणगौर तीज का व्रत करेंगी।

**30 मार्च, गुरुवार:** इस दिन चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष की नवमी है। इस दिन श्रीराम के प्राकट्य दिवस के रूप में रामनवमी पर्व मनाया जाएगा।

# स्वामी विवेकानंद की सीख

विवेकानंद जी ने कहा कि धन कमाना चाहिए और धन दो प्रकार के होते हैं। पहला धन है, जिससे हमारा जीवन चलता है, जिससे खाने-पीने और रहने का खर्च चलता है। दूसरा धन है, जिससे हमारा चरित्र अच्छा बना रहता है। ये दोनों ही धन हमें कमाना चाहिए।

स्वामी जी ने अपनी बात समझाने के लिए एक कहानी भी उस शिष्य को सुनाई। उन्होंने कहा कि एक व्यापारी अपने नौकर के साथ ऊंट खरीदने के लिए गया और उसने एक ऊंट पसंद किया। ऊंट खरीदकर अपने घर ले गया। घर पहुंचकर उस व्यापारी ने ऊंट की पीठ की से गादी हटाई तो वहां एक हीरों से भली थैली मिली।

व्यापारी ने हीरे देखे तो वह समझ गया कि ये ऊंट के मालिक के हैं। व्यापारी के नौकर ने हीरे देखे तो वह बहुत खुश हो गया। उसने कहा कि हमें तो ऊंट के साथ खजाना भी मिल गया है।व्यापारी ने उससे से कहा कि हम सिर्फ ऊंट खरीदकर लाए हैं, इन हीरों पर अपना कोई हक नहीं। इसलिए हमें ये लौटाने होंगे।

व्यापारी तुरंत हीरों की थैली लेकर ऊंट बेचने वाले के पास पहुंच गया और थैली लौटा दी। ऊंट का व्यापारी अपने ग्राहक की ईमानदारी देखकर बहुत खुश हुआ। उसने ग्राहक को एक हीरा देने की इच्छा बताई, लेकिन ईमानदारी व्यापारी ने हीरा लेने से मना कर दिया।

जब हीरों के मालिक ने बार-बार हीरा रखने की बात कही तो ऊंट खरीदने वाले ने कहा कि मैंने तो पहले से ही दो हीरे रख लिए हैं। ये बात सुनते ही हीरों का मालिक गुस्सा हो गया। उसने तुरंत ही थैली के हीरे गिने तो वह पूरे थे। हीरों के मालिक ने कहा कि थैली में हीरे तो पूरे हैं, आपने कौन से दो हीरे रखे हैं? ऊंट खरीदने वाला व्यापारी बोला कि मैंने ईमानदारी और आत्म सम्मान नाम के दो हीरे रखे हैं। मेरे पास ये दो हीरे हैं, इसीलिए आपको पूरे हीरे मिले हैं।

प्रसंग की सीख- ये कहानी सुनाने के बाद विवेकानंद जी बोले कि ईमानदारी और आत्म सम्मान भी धन की तरह ही हैं। हमें इन्हें भी बनाए रखना चाहिए। तभी जीवन में सुख-शांति मिल सकती है।

# कंगना रणौत ने 'जनरेशन जेड' पर की विवादित टिप्पणी, बोलीं- फोन पर बिताते हैं सारा वक्त

**बॉलीवुड की** पंगा गर्ल अभिनेत्री कंगना रणौत अपने काम और फिल्मो से ज्यादा अपने बयानों को लेकर चर्चा में रहती हैं। आए दिन वह किसी न किसी पर निशाना साधती नजर आती हैं। एक बार फिर कंगना अपनी टिप्पणी को लेकर मीडिया की सुर्खियों में आ गई हैं। इस बार उन्होंने किसी फिल्म स्टार या कथित बॉलीवुड माफियाओं पर निशाना नहीं साधा है, बल्कि इस बार उन्होंने जनरेशन जेड पर विवादित टिप्पणी की है।

कंगना रणौत ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट से एक स्टोरी साझा की है। इसमें उन्होंने 'जेन जेड' (1997 से 2012 के बीच जन्म लेने वाले) पर गुस्सा निकाला है। कंगना ने लिखा है, 'जनरेशन जेड...हाहाहा.. उनके पैर और पीठ लाठी के समान है। वे अपना ज्यादातर समय बातचीत करने, देखने या पढ़ने की तुलना में फोन पर बिताते हैं। वे कमिटमेंट में अक्षम हैं और चाहते हैं कि उन्हें बस बॉस का पद दे दिया जाए, जिसका वे सम्मान नहीं करते, क्योंकि उनके बॉस अनुशासन में यकीन रखते हैं और मेहनत का रास्ता तय करके यहां तक आए हैं। जनरेशन जेड सिर्फ तुरंत मिली सफलता को सम्मान देती है।'

इसके आगे एक्ट्रेस ने लिखा है, 'जनरेशन जेड को स्टारबक्स और एवोकाडो टोस्ट बहुत पसंद हैं, लेकिन वे घर खरीदने का जोखिम नहीं उठा सकते। वे किसी को प्रभावित करने के लिए ब्रांडेड कपड़े किराए पर ले सकते हैं, लेकिन कमिटमेंट करने या शादी करने से नफरत करते हैं। शोध में यहां तक पता चला है कि वे सेक्स करने भी आलसी हैं। जनरेशन जेड वास्तव में गाजर मूली की तरह हैं... उनके लिए बेवकूफी भरी बातें ब्रेन वॉश, हेरफेर को प्रभावित करना आसान है। मिलेनियल्स बहुत बेहतर हैं, हम शासन करते हैं ! और योगा, स्पोर्ट्स और एक्सरसाइज के बारे में जेन जेड का क्या ख्याल है...?'

वर्क फ्रंट की बात करें तो कंगना इन दिनों फिल्म 'चंद्रमुखी 2' की शूटिंग में बिजी हैं। बता दें कि फिल्म 'चंद्रमुखी 2' रजनीकांत की लोकप्रिय फिल्म 'चंद्रमुखी' का सीक्वल है। जहां कंगना सीक्वल में एक नर्तकी की मुख्य भूमिका निभाएंगी। राघव लॉरेंस फिल्म में लीड भूमिका निभाएंगे। 'चंद्रमुखी 2' के अलावा कंगना रणौत अपनी आगामी फिल्म 'इमरजेंसी' को लेकर भी व्यस्त हैं। इस फिल्म का निर्देशन भी उन्होंने किया है। बता दें कि कंगना इस फिल्म में दिवंगत पीएम इंदिरा गांधी का रोल अदा करती नजर आएंगी। इसके अलावा कंगना की झोली में फिल्म 'तेजस' भी है।

# सामने आया नवाज का असली चेहरा! पत्नी और बच्ची के साथ किया कुछ ऐसा, फूट फूटकर रोती रही बेटी

**बॉलीवुड एक्टर** नवाजुद्दीन सिद्दीकी और उनकी पत्नी आलिया के बीच विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। अब रोते गिड़गिड़ाते आलिया सिद्दीकी ने वीडियो शेयर किया है और आरोप लगाया है कि नवाज ने उन्हें और दोनों बच्चों को घर से बाहर निकाल दिया है। आलिया ने इंस्टाग्राम पर वीडियो शेयर किया और लंबा चौड़ा पोस्ट लिखा है। इस वीडियो में आलिया दोनों बच्चों के साथ बंगले के बाहर नजर आ रही हैं। उनके साथ बेटी और बेटा भी है। दोनों बच्चे रोते नजर आ रहे हैं।

**नवाजुद्दीन ने पत्नी आलिया और बच्चों को घर से निकाला**

इस वायरल वीडियो को देखने के बाद हर कोई एक्टर को बुरा-भला सुना रहा है। आलिया ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक वीडियो शेयर किया है जिसमें वह अपने बच्चों के साथ आधी रात को सड़क पर नजर आ रही हैं। आलिया ने दावा किया है कि खुद नवाजुद्दीन ने उन्हें इस हाल पर रहने के लिए मजबूर किया है। उनके बच्चें भूखे हैं, उनके सिर पर छत तक छीन ली गई है। आलिया ने आरोप लगाए हैं कि नवाजुद्दीन ने उन्हें और उनके बच्चों को घर से बाहर निकाल फेंका है। आलिया की यह वीडियो सोशल मीडिया पर हवा की तरह वायरल हो रहा है। वीडियो में आलिया अपने दोनों बच्चों के साथ घर से बाहर खड़ी हुई नजर आ रही हैं। वीडियो में वह कहती हैं कि, 'मेरी बच्ची रो रही है वो बहुत परेशान हैं। मैं नहीं जानती नवाज ऐसा क्यों कर रही है, क्या उसे ये शोभा देता है। मैं नवाज के बंगले से आईं हूं, ये मेरे दोनों बच्चे हैं। हमें बंगले से निकाल दिया है। अब मुझे समझ नहीं आ रहा है न मेरे पास पैसे हैं न घर है। कुछ समझ नहीं आ रहा मैं बच्चे लेकर कहां जाऊं। मैं तुझे कभी माफ नहीं करूंगी। जो मेरे बच्चों के साथ कर रहा है कभी माफ नहीं करूंगी। नवाज ने मुझे रात के 12 बजे बच्चों के साथ रोड़ पर खड़ा रखा हुआ है। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि मैं किधर जाऊं इस वक्त'। तो वहीं आलिया अपनी पोस्ट में एक वीडियो और शेयर की जहां उनके बच्चे सोते हुए नजर आ रहे हैं। आलिया ने इस वीडियो के साथ एक लंबा-चौड़ा पोस्ट शेयर किया है। जिसके जरिए वह नवाज की सच्चाई सभी के सामने लाने की बात कहती हुई नजर आ रही हैं। फिलहाल नवाज का इस मामले पर अभी तक कोई बयान सामने नहीं आया है।

# ऑस्कर में प्रेजेंटर के तौर पर नजर आएंगी दीपिका पादुकोण, भारत का बढ़ाएंगी मान

**बॉलीवुड की मशहूर एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण के लिए ये साल की शुरूआत खास रही है, जहां उनकी फिल्म पठान ने दुनियाभर में कमाल कर दिया है. वहीं अप दीपिका पादुकोण कान फिल्म फेस्टिवल में जूरी बनने के बाद अब ऑस्कर जानें की भी तैयार कर रही हैं. दरअसल 12 मार्च को 95वें ऑस्कर पुरस्कार का आगाज होने जा रहा है. एक तरह जहां इंडियन फिल्म RRR के गाने नाटू-नाटू को नॉमिनेट किया गया है. इसके साथ ही दीपिका भी अब ऑस्कर में जा रही हैं और वो ऑस्कर 2023 में प्रेजेंटर के तौर पर नजर आएंगी. गुरुवार की रात दीपिका ने इंस्टाग्राम पर सभी प्रेजेंटर्स के नाम के साथ एक पोस्ट शेयर की थी.**

**दीपिका पादुकोण ने अपने इंस्टाग्राम एकाउंट से ऑस्कर प्रेजेंटर्स की लिस्ट साझा की, जिसमें एक्ट्रेस का नाम भी शामिल था. दीपिका की इस पोस्ट पर जहां रणवीर सिंह ने तालियां बजाते हुए रिएक्शन दिया तो वहीं बहन अनीशा पादुकोण ने लिखा, 'बूम' दीपिका ने अपने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर कर बताया कि उन्हें अमेरिकी एक्ट्रेस एरियाना डेबोस के साथ ऑस्कर अवॉर्ड होस्ट करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है. दीपिका पादुकोण की इस पोस्ट पर कमेंट करते हुए कुछ यूजर्स ने RRR की जीत की उम्मीद भी जताई.**

## भारत के लिए खास है ऑस्कर

**बता दें कि 95वां एकेडमी अवॉर्ड्स 12 मार्च (भारत में 13 मार्च) को लॉस एंजिल्स के डॉली थिएटर में आयोजित किये जाएंगे. ऑस्कर में भारत के लिए यह एक खास साल है. इस बार, केवल एक नहीं, बल्कि तीन इंडियन फिल्में ऑस्कर अवाइर्स 2023 के नॉमिनेशन में हैं. फिल्म 'आरआरआर' के सॉन्ग 'नाटू नाटू' बेस्ट ओरिजनल सॉन्ग है. वहीं शौनक सेन की 'ऑल दैट ब्रीथ्स' को बेस्ट डॉक्यूमेंट्री फीचर फिल्म और गुनीत मोंगा की 'द एलिफेंट व्हिस्परर्स' को बेस्ट डॉक्यूमेंट्री शॉर्ट के लिए नॉमिनेट किया गया है.**

# कश्मीरा शाह ने कृष्णा अभिषेक को जब सरेआम किया था लिप किस, अब कहा 'नशे में नहीं...'

**फेमस कॉमेडियन** कृष्णा अभिषेक और उनकी पत्नी व एक्ट्रेस कश्मीरा शाह टीवी के सबसे दमदार और हॉट कपल के तौर पर देखे जाते हैं और वो जहां भी जाते हैं अक्सर वहां से कोई ना कई खबर आ ही जाती है. ऐसे में हाल ही में, कपल ने 'बिग बॉस 16' के कंटेस्टेंट के लिए होस्ट की गई सलमान खान की पार्टी में शिरकत की थी, जहां दोनों के लिप किस ने जमकर हंगामा कर दिया और कश्मीरा को नशे में रहने के लिए ट्रोल कर दिया गया. ऐसे में अब एक्ट्रेस ने अपनी प्रतिक्रिया दी है और ट्रोलर्स को जवाब दिया है.

**कश्मीरा ने अपने पति कृष्णा का किया किस**

दरअसल, जैसे ही कृष्णा और कश्मीरा कार से बाहर निकले, कपल ने पैपराजी के लिए साथ में पोज दिया. इसके बाद कश्मीरा ने अपने पति कृष्णा को अपनी ओर खींचा और उन्हें दो बार किस किया. इसके कुछ सेकंड बाद 'बिग बॉस' कंटेस्टेंट प्रियंका चाहर चौधरी वहां आती हैं और कश्मीरा उनके गाल पर किस करती हैं. कई नेटिजंस ने कश्मीरा को अपने पति को पब्लिकली किस करने को लेकर ट्रोल किया और इसे पब्लिसिटी स्टंट बताया. कुछ को लगा कि शायद वह नशे में थीं, क्योंकि कैमरे के सामने कश्मीरा बहुत क्लियर थीं.

**कृष्णा को तीन हफ्तों में मिस किया- कश्मीरा**

ट्रोलर्स के कयासों पर प्रतिक्रिया देते हुए कश्मीरा ने अपने नशे में होने की अफवाहों को खारिज कर दिया और 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के साथ एक बातचीत में इसका कारण बताया उन्होंने कहा, 'हां, मुझे पता है कि लोगों ने मान लिया था कि मैं नशे में हूं और ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी. सच तो यह था कि मैं जेटलैग्ड थी. मैं लॉस एंजेलिस से तभी लौटी थी, घर पहुंची और फिर पार्टी में गई, इसलिए मैं थक गई थी. मेरे पास एक गिलास वाइन थी, इसलिए मुझे यकीन नहीं है कि इससे मुझे नशा हुआ होगा. हां मैं अपने पति को अपनी ओर खींच रही थी और उनके साथ रोमांटिक हो गई थी, क्योंकि मैं उनसे लंबे समय से नहीं मिली थी. मैं उन्हें लगभग तीन सप्ताह से याद कर रही थी. यही वजह है कि मैंने पार्टी में कृष्णा को पब्लिकली किस किया'. कश्मीरा ने यह भी कहा कि वह अपने बच्चों को याद कर रही थीं और वे जल्द ही एलए में एक फैमिली वेकेशन की प्लानिंग कर रहे हैं.

# 'पहले से सौ प्रतिशत बेहतर होगी ब्रह्मास्त्र-2': अयान मुखर्जी

ब्रह्मास्त्र पार्ट वन-शिवा ने बॉक्स ऑफिस पर कई रिकॉर्ड्स अपने नाम किए हैं। इस फिल्म को बनने में लगभग 10 सालों का समय लग गया। लेकिन दूसरे पार्ट को तैयार करने में अयान मुखर्जी अब इतना समय नहीं लेना चाहते हैं। हाल ही में मीडिया को दिए इंटरव्यू में अयान ने बताया कि वो अपनी इस फिल्म के दूसरे पार्ट का काम जल्द से जल्द खत्म करने का मन बना रहे हैं। इतना ही नहीं अयान का मानना है कि अगर वो दूसरे पार्ट को बनाने में 10 साल जितना समय लगाएंगे, तो उनकी फिल्म फिल्म देखने कोई नहीं आएगा।

एक इंटरव्यू में अयान ने बताया कि उन्होंने फिल्म ब्रह्मास्त्र 2 पर काम शुरू कर दिया था। बातचीत के दौरान अयान के कहा- 'हमने काम शुरू कर दिया है, कुछ समय में फिल्म बनकर तैयार हो जाएगी। मैं 100 % दावा करता हूं कि ये पिछले दस सालों में बनी फिल्म से जल्दी और बेहतर होगी।' 'अगर मैं इस फिल्म को तैयार करने में अगले 10 साल और लेता हूं तो ब्रह्मास्त्र 2 देखने कोई भी नहीं आएगा। हम जल्द से जल्द फिल्म का काम पूरा करना चाहेंगे।' कुछ समय पहले इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में अयान ने ब्रह्मास्त्र पार्ट 2- देव के बारे में बात की थी। इस दौरान उन्होंने बताया था कि वो फिल्म को 2025 तक खत्म करना चाहते हैं। बातचीत के दौरान अयान ने कहा था- 'हमारा लक्ष्य है कि हम इस फिल्म को बनाना चाहते हैं और यह तीन साल बाद आएगी। अब हम सीख गए हैं कि इस तरह की फिल्में कैसे तैयार की जाती हैं।'इतना ही नही सीक्वल के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि पार्ट 2 देव में बैक स्टोरी के साथ-साथ प्रेजेंट में भी चलती रहेगी।

क्रिटिक्स और ऑडियंस को इंप्रेस नहीं कर पाई थी ब्रह्मास्त्र

भले ही ब्रह्मास्त्र पार्ट 1 ने बॉक्स ऑफिस पर 400 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन किया था, इसके बावजूद फिल्म ऑडियंस और क्रिटिक्स को इंप्रेस करने में असफल रही थी। अयान ने खुद फिल्म की कमजोरी को स्वीकार करते हुए कहा था- यह अवॉर्ड जीतने वाली फिल्मों में से नहीं थी, यह महज एक पॉपुलर फिल्म थी।'

रणबीर कपूर को हाल ही में इस फिल्म के लिए दादा साहब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था। इस बारे में बात करते हुए रणबीर ने कहा था- मुझे नहीं लगता है कि ब्रह्मास्त्र के लिए मैं यह अवॉर्ड डिजर्व करता हूं। वो बहुत बड़ी एक्टिंग परफॉर्मेंस नहीं थी।

## शाहरुख की सुरक्षा में चूक, 2 लोग मन्नत में घुसे

# दीवार फांदकर बंगले की तीसरी मंजिल तक पहुंच गए थे, सुरक्षा गार्ड ने पकड़ा

**शाहरुख खान** के बंगले 'मन्नत' की सुरक्षा में चूक का मामला सामने आया। गुरुवार देर रात दो युवक दीवार फांदकर बंगले के तीसरी मंजिल तक पहुंच गए। हालांकि, सिक्योरिटी गार्ड्स ने इन्हें पकड़ लिया और पुलिस के हवाले कर दिया। दोनों लड़कों की उम्र 21 से 25 साल बताई जा रही है। दोनों गुजरात के हैं। पुलिस ने दोनों के खिलाफ IPC की धारा 452/34 के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

**शाहरुख घर पर नहीं थे, सबसे पहले गार्ड ने देखा**

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस घटना के वक्त शाहरुख खान घर पर नहीं थे। दोनों लड़के बंगले की तीसरी मंजिल तक पहुंच गए थे। सबसे पहले सिक्युरिटी गार्ड ने देखा। ये घटना रात 9.30 बजे की है। पुलिस की पूछताछ में बताया कि दोनों सूरत के रहने वाले हैं और शाहरुख से मिलने के लिए मुंबई पहुंचे थे। दोनों के आपराधिक रिकॉर्ड का पता लगाया जा रहा है।

**शाहरुख ने 2001 में खरीदा था मन्नत**

व्हाइट मार्बल से बने इस बंगले 'मन्नत' को शाहरुख ने 2001 में बाई खोरशेद भानू संजना ट्रस्ट से लीज पर 13.32 करोड़ रुपए में खरीदा था। चार साल तक चले इसके रिनोवेशन के बाद इसे मन्नत नाम दिया गया। मुंबई स्थित फकीह एंड एसोसिएट्स ने 6,000 वर्ग फीट के इस बंगले को संवारा है। शाहरुख-गौरी के इस बंगले का ढांचा 20वीं सदी के ग्रेड-3 हेरिटेज का है, जो चारों तरफ खुलता है। आसमान की ओर, पीछे की ओर और किनारे की ओर। 6 मंजिला मन्नत में शाहरुख खान का परिवार महज 2 मंजिलों में ही रहता है। बाकी की मंजिलों को ऑफिस, प्राइवेट बार, प्राइवेट थिएटर, स्विमिंग पूल, गेस्ट रूम, जिम, लाइब्रेरी, प्ले एरिया और पार्किंग जैसी अन्य सुविधाओं के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

**गौरी खान ने किया इंटीरियर डिजाइन**

इंटीरियर के साथ स्टाइलिंग का काम खुद गौरी ने किया है। वे बताती हैं कि इसके लिए उन्हें चार साल से भी अधिक का समय लगा। वे ट्रैवलिंग करतीं, एक-एक चीज़ खुद अपनी पसंद से खरीदतीं और घर के हर कोने को पूरी शिद्दत से सजातीं, ताकि सब परफेक्ट लगे। इसके बाद ही गौरी ने इंटीरियर डिजाइनर के तौर पर काम शुरू किया।

# पैपराजी संग मस्ती मजाक करती दिखीं जया बच्चन

**बॉलीवुड एक्ट्रेस** जया बच्चन अपने रूड बिहेवियर के लिए जानी जाती हैं, लेकिन इस बार उनके मिजाज बदले हुए दिखाई दिए। दरअसल हाल ही में जया फैशन डिजाइनर जोड़ी अबू जानी और संदीप खोसला के न्यू कलेक्शन लॉन्च में शामिल हुईं, जहां वो पैपराजी के साथ मस्ती मजाक करती हुई नजर आईं।

**जया बच्चन ने पैपराजी के साथ दिया पोज**

इस दौरान उन्होंने पैपराजी को पोज भी दिए। फिर जब जया इवेंट में जाने लगीं, तो पैपराजी ने उनसे कहा, 'जया जी'। उसके बाद जया पैपराजी से कहती हैं, 'मैं इस फोटोग्राफर को तब से जानती हूं जब ये बच्चा था।' उसके बाद वो उसकी उम्र भी पूछती हुए बाकी पैप्स से बोलती हैं, 'ये सभी नए-नए हैं।' फिर जिस पैपराजी को वो पहले से जानती हैं उनके साथ फोटो भी क्लिक करवाती हैं।

**देखा मैं कितना स्माइल करती हूं- जया**

इसके अलावा एक और वीडियो सामने आई है, जिसमें वो पोज देती हुई कहती हैं, 'देखा कितना स्माइल करती हूं मैं।' उसके बाद वो इवेंट में जाते-जाते पैपराजी को नमस्ते भी कहती हैं।

**सोशल मीडिया यूजर्स के रिएक्शन**

अब जया बच्चन के इस बिहेवियर को देखने के बाद लोग तरह-तरह के कमेंट कर रहे हैं। जहां एक यूजर ने लिखा, 'लग रहा है कि आज जया जी का मूड अच्छा है।' दूसरे ने लिखा, 'ये क्या देख लिया भाई, लगता है मैडम की काउंसलिंग हुई है।' वहीं तीसरे ने लिखा, 'अरे ये हंसती भी हैं!'

**जया ने पैपराजी को कहा था घुसपैठिए**

जया बच्चन अक्सर पैपराजी को खरी खोटी सुनाती रहती हैं। पिछली दिवाली पर जया का एक वीडियो सामने आया था, जिसमें वो पैपराजी पर फटकार लगा रही थी।

दरअसल दिवाली के मौके पर पैपराजी अमिताभ बच्चन और जया बच्चन के घर प्रतीक्षा के बाहर इकट्ठा हो गए और उनके सेलिब्रेशन को अपने कैमरों में कैद करने लगे थे, लेकिन जया बच्चन को ये सब अच्छा नहीं लगा। ऐसे में वो खुद घर से बाहर आईं और पैपराजी का पीछा करते हुए उन्हें जमकर फटकार लगाने लगीं। यहां तक कि जया ने पैपराजी को घुसपैठिए तक कह दिया था।

# क्या विराट के स्वर्णिम युग का अंत?

## ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ लगातार तीसरे टेस्ट में हुए फ्लॉप

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में टीम इंडिया के रन मशीन विराट कोहली का प्रदर्शन बहुत ही खराब रहा है। अब तक खेले गए तीन मैचों की पांच पारियों में उनके बल्ले से केवल 111 रन ही निकले हैं। विराट के फॉर्म की स्थिति यह है कि मार्च 2022 से टेस्ट में एक भी अर्धशतक नहीं लगा सके हैं। उन्होंने पिछला अर्धशतक जनवरी 2022 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ लगाया था। वह बतौर कप्तान उनका आखिरी टेस्ट था। कप्तानी जाने के बाद से विराट के बल्ले से अर्धशतक नहीं निकला है।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ किंग कोहली का रिकॉर्ड काफी शानदार रहा है। उन्होंने कंगारूओं के खिलाफ 23 मैचों की 41 पारियों में सात शतक और पांच अर्धशतक की मदद से 1794 रन बनाए हैं। इसके बावजूद वह इस बार एक-एक रन के लिए जूझते दिख रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे उनके स्वर्णिम युग का अंत होने वाला है।

**एशिया कप में खत्म हुआ था शतक का इंतजार**

विराट कोहली ने पिछले साल एशिया कप के दौरान अफगानिस्तान के खिलाफ शतक जड़कर तीन साल के इंतजार को खत्म किया था, लेकिन टेस्ट में अभी भी फैंस को उनके शतक का इंतजार है। उन्होंने अपना आखिरी टेस्ट शतक नवंबर 2019 में बांग्लादेश के खिलाफ लगाया था। उसके बाद से टेस्ट में उनके बल्ले से एक भी शतक नहीं निकल पाया।

**ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में ऐसा रहा प्रदर्शन**

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए तीन टेस्ट मैचों में भी उनके बल्ले से मुश्किल से ही रन निकल पाए हैं। नागपुर में खेले गए पहले टेस्ट में उन्होंने 12 रन और दिल्ली में खेले गए दूसरे टेस्ट में 44 और 20 रन की पारी खेली थी। उसके बाद इंदौर में खेले जा रहे तीसरे मैच में 13 और 22 रन ही बना सके।

**2019 से शतक का इंतजार**

विराट कोहली ने साल 2011 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट करियर की शुरुआत की थी। 2011 से लेकर 2019 तक उन्होंने महज 84 मैचों में 54.97 की औसत से 7202 रन बनाए। इस दौरान उनके बल्ले से कुल 27 शतक निकले थे। नवंबर 2019 के बाद से ही उनकी बल्लेबाजी में गिरावट आने लगी। उसके बाद से अब तक विराट ने टेस्ट में 23 मुकाबले खेले हैं, जिसमें 25.7 की औसत से 1028 रन ही बनाने में कामयाब रहे। इस दौरान उनके बल्ले से एक भी शतक नहीं निकला।

**कोहली के रैंकिंग में गिरावट**

टेस्ट में लगातार फ्लॉप प्रदर्शन का असर उनकी रैंकिंग पर भी दिख रहा है। मौजूदा समय में कोहली टेस्ट रैंकिंग में टॉप-10 से भी बाहर हो चुके हैं। वह 665 रेटिंग प्वाइंट के साथ 17वें स्थान पर हैं।

# ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत का टॉप-ऑर्डर फ्लॉप, अपने ही घर में खराब प्रदर्शन

**बॉर्डर-गावस्कर** ट्रॉफी में भारत का पलड़ा भारी होने के बावजूद खिलाड़ियों का प्रदर्शन चयनकर्ताओं के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। नागपुर और दिल्ली में खेले गए मुकाबलों में भले ही भारत ने ऑस्ट्रेलिया को हराकर 2-0 से सीरीज में बढ़त बना ली, लेकिन इसके बावजूद भारतीय खिलाड़ी रन बनाने के लिए जूझते दिखे हैं।

कप्तान रोहित शर्मा और विराट कोहली के अलावा कोई भी बल्लेबाज सीरीज में कुल 100 रनों का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाया है। ऐसा लग रहा है मानों ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को फंसाने के लिए भारत ने जो जाल बुनी थी उसमें उसके बल्लेबाज खुद ही फंस गए हैं। ऑस्ट्रेलियाई स्पिनरों के सामने टॉप-ऑर्डर बल्लेबाजों के बल्ले से रन निकलना बंद हो गया है।

नागपुर में खेले गए पहले मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया के 263 रनों के जवाब में भारत रोहित शर्मा के 120 रनों की बदौलत पहली पारी में बढ़त बनाने के साथ मुकाबला भी जीतने में कामयाब रहा था। रोहित के अलावा अन्य बल्लेबाजों ने निराशाजनक प्रदर्शन दिया। उस मुकाबले में केएल राहुल 20 तो चेतेश्वर पुजारा सात रन पर ही पवेलियन लौट गए थे। विराट कोहली ने केवल 12 रन बनाया।

भारत के टॉप-ऑर्डर बल्लेबाज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बुरी तरह से फ्लॉप रहे हैं। नागपुर के बाद दिल्ली में भी भारतीय टॉप-ऑर्डर बल्लेबाजों की हालत खराब ही रही। नागपुर में शतक लगाने के बाद दूसरे मुकाबले में रोहित शर्मा दोनों पारियों में महज 32 और 31 रन पर ही आउट हो गए। वहीं, इंदौर में रोहित ने दोनों पारियों में 12-12 रन बनाए। केएल राहुल और किंग कोहली का बल्ला इस बार भी खामोश रहा।

अब तक खेले गए टेस्ट मुकाबलों की पांच पारियों में रोहित ने करीब 48 की औसत से 207 रन बनाए हैं। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शानदार रिकॉर्ड रखने वाले विराट कोहली टेस्ट में फिर एक बार खराब फॉर्म में दिखे। इस सीरीज में पांच पारियों में उन्होंने 24 की औसत से 111 रन बनाए हैं।

टीम के अनुभवी बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा भी भारतीय मैदानों पर रन बनाने से चूक रहे हैं। इंदौर टेस्ट की दूसरी पारी से पहले तक 13 की औसत से 39 रन बनाए थे। हालांकि, इंदौर टेस्ट की दूसरी पारी में उन्होंने 59 रन बनाए। राहुल के बल्ले से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन पारियों में केवल 38 रन ही निकला। न्यूजीलैंड के खिलाफ शानदार बल्लेबाजी करने वाले युवा बल्लेबाज शुभमन गिल भी ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सुस्त दिखे। उन्होंने दो पारी में महज 26 रन का ही योगदान दिया।

मिडिल ऑर्डर बल्लेबाज श्रेयस अय्यर और सूर्यकुमार यादव की भी हालत कुछ ऐसी ही है। टी20 फॉर्मेट के नंबर-वन बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव टेस्ट में फ्लॉप हो गए। पहले मुकाबले की पहली पारी में उन्होंने महज आठ रन ही बनाए थे। भारतीय टॉप-ऑर्डर बल्लेबाजों का निराशाजनक प्रदर्शन टेस्ट चैंपियनशिप जीतने में रुकावट खड़ी कर सकता है।

इंदौर में रोहित ने 12 और 12 रन, शुभमन ने 21 और पांच रन, पुजारा ने एक और 59 रन, विराट कोहली ने 22 और 13 रन, रवींद्र जडेजा ने चार और सात रन, श्रेयस अय्यर ने 0 और 26 रन, श्रीकर भरत ने 12 और तीन रन, अक्षर पटेल ने 12 और 15* रन, अश्विन ने तीन और 16 रन बनाए।

भारत की बैटिंग पूरी तरह फ्लॉप रही है। मैच की बात करें तो पहली पारी में भारत ने 109 रन बनाए थे। जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 197 रन बनाए थे। कंगारुओं को 88 रन की बढ़त मिली थी। भारत ने दूसरी पारी में 163 रन बनाए और इस तरह 75 रन की बढ़त हासिल की और 76 रन का लक्ष्य रखा।

### बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 2023 में भारतीय बल्लेबाजों का प्रदर्शन

| बैटर | पारी | रन |
|---|---|---|
| रोहित शर्मा | 5 | 207 |
| विराट कोहली | 5 | 111 |
| चेतेश्वर पुजारा | 5 | 98 |
| श्रेयस अय्यर | 4 | 42 |
| केएल राहुल | 3 | 38 |
| शुभमन गिल | 2 | 26 |
| सूर्यकुमार यादव | 1 | 8 |

# अश्विन ने 3 विकेट लेकर इस मामले में कपिल देव को छोड़ा पीछे, अब निशाने पर हरभजन का रिकॉर्ड

**रविचंद्रन अश्विन** ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट की पहली पारी में तीन विकेट लिए। उन्होंने इंदौर टेस्ट में टीम इंडिया की वापसी कराई। भारत ने पहली पारी में 109 रन बनाए थे। वहीं, ऑस्ट्रेलियाई टीम 197 रनों पर सिमट गई। उसने पहली पारी में 88 रनों की बढ़त हासिल की। अश्विन ने पहली पारी में पीटर हैंड्सकॉम्ब, एलेक्स केरी और नाथन लियोन को आउट किया। इस दौरान उन्होंने एक खास उपलब्धि हासिल की। भारत यह मैच 9 विकेट से हार गया।

अश्विन के अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अब 689 विकेट हो गए हैं। वह भारत के लिए सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय विकेट लेने के मामले में तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। उन्होंने पूर्व कप्तान कपिल देव को पीछे छोड़ दिया। कपिल देव ने 356 टेस्ट में 687 विकेट लिए थे। उन्होंने 131 टेस्ट में 434 विकेट और 225 वनडे में 253 विकेट हासिल किए थे। अश्विन के 91 टेस्ट में 466 विकेट, 113 वनडे में 151 और 65 टी20 में 72 विकेट लिए हैं।

**अनिल कुंबले ने लिए हैं भारत के लिए सबसे ज्यादा विकेट**

कपिल देव को पीछे छोड़ने के बाद अब अश्विन की नजर हरभजन सिंह पर होगी। भारत के सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में उनसे आगे हरभजन सिंह (707) और अनिल कुंबले (953) हैं। हरभजन को पीछे छोड़ने के लिए उन्हें 19 विकेट और लेने हैं।

**शेन वॉर्न को पीछे छोड़ सकते हैं जेम्स एंडरसन**

सबसे ज्यादा अंतरराष्ट्रीय विकेट श्रीलंका के मुथैया मुरलीधरन ने लिए हैं। उन्होंने 495 मैचों में 1347 विकेट झटके थे। ऑस्ट्रेलिया के शेन वॉर्न ने 339 मैचों में 1001 विकेट हासिल किए थे। इंग्लैंड के जेम्स एंडरसन इस मामले में तीसरे और अनिल कुंबले चौथे स्थान पर हैं। एंडरसन ने 392 मैचों में 972 और कुंबले ने 403 मैचों में 956 विकेट लिए। एंडरसन 1000 विकेट से 28 कदम दूर हैं। अगर वह 30 विकेट और ले लेते हैं तो शेन वॉर्न को भी पीछे छोड़ देंगे।

# क्या कप्तानों को अपने मुताबिक पिच बनवानी चाहिए?

ऑस्ट्रेलिया ने चार टेस्ट मैचों की सीरीज के तीसरे मुकाबले में भारत को नौ विकेट से हरा दिया। इस जीत के साथ ही उसने विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। इंदौर टेस्ट में भारत की हार से ज्यादा होल्कर स्टेडियम की पिच की चर्चा हो रही है। लगातार तीसरा टेस्ट तीन दिन में समाप्त हो गया। इंदौर में तो पहले ही दिन से गेंद टर्न होने लगी थी, इससे क्रिकेट फैंस हैरान रह गए। यहां की पिच की लगातार आलोचना हो रही है।

कप्तान रोहित शर्मा इन आलोचनाओं को ज्यादा तवज्जो नहीं देते। उन्होंने मैच के बाद कहा, "इस तरह की पिच पर खेलना टीम प्रबंधन का सामूहिक फैसला था। हमें यह पता था कि बल्लेबाजों के लिए यहां कठिनाई होने वाली है, लेकिन चुनौती के लिए तैयार हैं।" अब सवाल यह उठता है कि क्या टीम इंडिया को लगातार होमग्राउंड पर इसी तरह की पिचों पर खेलना चाहिए? क्या ऐसी पिचों पर लगातार

खेलने से विदेश में मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा? इस संबंध में क्रिकेट के जानकार सुशील दोशी ने बताया कि पिच की बात करें तो टेस्ट मैच का पिच ऐसा होना चाहिए कि पांचवें दिन परिणाम निकले। चौथे और पाचंवें दिन गेंद घूमने लगे। अभी हमने इंग्लैंड और न्यूजीलैंड का मैच देखा जिसमें पांचवें दिन नतीजा आया। न्यूजीलैंड की टीम एक रन से जीती थी। वह मैच टेस्ट क्रिकेट का सही मैच था। ऐसा ही मैच होना चाहिए। मुकाबले पांच दिन तक चलने चाहिए।

आप घरेलू परिस्थितियों का फायदा तो उठाते हैं। जैसे हम इंग्लैंड जाते हैं तो वहां पर हमें ग्रीन टॉप पिच पर खेलना पड़ता है। वहीं, ऑस्ट्रेलिया वाले ज्यादा उछाल वाली पिचें बनाते हैं। जब जरूरत से ज्यादा मदद विकेट बनाते हैं तो कई बार खुद ही नुकसान उठाना पड़ता है। इस बार ऐसा ही हुआ। पहले दो टेस्ट में भी स्पिन को मदद करने वाली पिच थी तो भारत ने अच्छी गेंदबाजी से जीत हासिल कर ली, लेकिन इंदौर में ज्यादा टर्न था। पहले ही दिन से गेंद घूमने लगी। यहां फायदा दोनों टीमों को हुआ। ऑस्ट्रेलिया के औसत स्पिनर भी पिच की मदद से इंदौर में चल गए। ऐसे में भारत पराजित हो गया।

उन्होंने कहा कि पिच ऐसी नहीं होनी चाहिए कि पहले दिन से ही गेंद टर्न होने लगे। कम से कम टेस्ट मैच पांच दिन के तो होने चाहिए। टेस्ट क्रिकेट के लिए यह सही उदाहरण नहीं है। इस फॉर्मेट पर ऐसे ही संकट के बादल मंडरा रहे हैं। दर्शक स्टेडियम में कम पहुंच रहे। जो फैंस पांच दिन के लिए पैसे देते हैं तो वह निराश हो जाते हैं। इस पिच पर कोई बल्लेबाज शतक भी नहीं लगा सका। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का फाइनल होना है। भारतीय टीम वहां पहुंचना चाहती है। भारत अगर अहमदबाद में जीत जाता है तो वह फाइनल में पहुंच जाएगा। अभी टीम इंडिया इसलिए रवींद्र जडेजा और रविचंद्रन अश्विन को मदद देने वाली पिच बनाना चाहते हैं। इन दोनों गेंदबाजों को अगर पिच से टर्न मिलने लगे तो ये किसी भी बल्लेबाजी आक्रमण को तहस-नहस कर सकते हैं।

हर देश ताकत के हिसाब से पिच बनाता है। सभी देश ऐसा करते हैं, लेकिन ऐसा भी न हो कि पहले ही दिन से पिच टर्न लेने लगे और धूल उड़ने लगे। ऐसे में आप कई बार खुद ही फंस जाते हैं। इंदौर में भी ऐसा ही हुआ। आजकल टी20 मैच होने से खिलाड़ियों में धैर्य कम हो गया है। सीमित ओवरों के कारण आपका बल्ला खुद ही चल निकलता है। रोहित शर्मा ने इसलिए ऐसा कहा कि खिलाड़ियों को पांच दिन तक खेलने के लिए अपनी क्षमता को दिखानी चाहिए। अच्छा क्रिकेट खेलेंगे, तभी मैच पांच दिन चलेंगे।

## विश्व कप जीतने पर लियोनल मेसी ने मंगाए सोने के 35 आईफोन

**अर्जेंटीना के कप्तान** लियोनल मेसी ने विश्व कप जीतने की खुशी में टीम के साथियों और सपोर्ट स्टाफ को गिफ्ट देने का फैसला किया। अर्जेंटीना की टीम पिछले साल के अंत में फ्रांस को हराकर फुटबॉल विश्व कप जीती थी। मेसी ने सभी सदस्य के लिए 35 सोने के आईफोन मंगाए हैं। इसकी कीमत करीब 1.72 करोड़ रुपये (175,000 पाउंड) बताई जा रही है। ब्रिटेन के वेबसाइट 'द सन' के मुताबिक, 24 कैरेट के आईफोन पर खिलाड़ी का नाम, उनका नंबर और अर्जेंटीना का लोगो लगा रहेगा। मेसी के पेरिस स्थित आवास पर शनिवार (25 फरवरी) को इसे पहुंचाया गया। विश्व कप में शानदार जीत के बाद लियोनल मेसी कुछ खास करना चाहते थे। उन्होंने बिजनेसमैन बेन ल्योंस से संपर्क किया और फिर सोने के आईफोन पर मुहर लगी।

**मेसी को कुछ अलग गिफ्ट चाहिए था**

रिपोर्ट में आईडिजाइन गोल्ड के सीईओ बेन ने कहा, "मेसी न केवल सर्वकालिक महान हैं, बल्कि वह आइडिजाइन गोल्ड के सबसे वफादार ग्राहकों में से एक हैं। उन्होंने विश्व कप फाइनल के कुछ महीने बाद हमसे संपर्क किया। उन्होंने कहा कि वह अद्भुत जीत का जश्न मनाने के लिए सभी खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ के लिए एक विशेष उपहार चाहते हैं, लेकिन उपहार में घड़ी देना नहीं चाहते हैं। इसलिए मैंने सुझाव दिया कि सोने के आईफोन ठीक होंगे। उस पर उनके नाम होंगे। मेसी को यह आइडिया काफी पसंद आया।"

**मेसी ने फाइनल में किए थे दो गोल**

अर्जेंटीना और फ्रांस के बीच फाइनल मैच काफी रोमांचक रहा था। निर्धारित समय तक 3-3 की बराबरी के बाद मैच का नतीजा पेनल्टी शूटआउट में आया था। अर्जेंटीना के लिए लियोनल मेसी ने दो दागे थे। एंजेल डी मारिया ने एक गोल किया था। वहीं, फ्रांस के लिए किलियन एम्बाप्पे ने तीन गोल किए थे। पेनल्टी शूटआउट में अर्जेंटीना ने 4-2 से जीत हासिल की थी।

**अर्जेंटीना की विश्व कप विजेता टीम**

एमी मार्टिनेज, फ्रेंको अरमानी, गेरोनिमो रूली, मार्कोस एक्यूना, जुआन फोयथ, लिसेंड्रो मार्टिनेज, निकोलस टैगेलियाफिको, क्रिस्टियन रोमेरो, निकोलस ओटामेंडी, नहुएल मोलिना, गोंजालो मोंटिएल, जर्मन पेजSला, एंजेल डी मारिया, लिएंड्रो परेडेस, रोड्रिगो डी पॉल, एलेक्सिस मैक एलिस्टर, एंजो फर्नांडीज, एक्सेक्विएल पलासियोस, गुइडो रोड्रिगेज, लियोनेल मेसी, लोटारो मार्टिनेज, पाउलो डाइबाला, एंजेल कोरेया, जूलियन अल्वारेज, थियागो अल्माडा, एलेजांद्रो गोमेज।

# सानिया मिर्जा के हॉट अंदाज ने बढ़ाया इंटरनेट का पारा

## सानिया पांच मार्च को हैदराबाद के एलबी स्टेडियम में खेलती नजर आएंगी

भारत की स्पोर्ट्स आइकन सानिया मिर्जा ने प्रोफेशनल टेनिस को अलविदा कह दिया है। दुबई चैंपियनशिप में पहले राउंड में हार के साथ ही सानिया का करियर खत्म हो गया। उन्होंने पहले ही इसकी घोषणा की थी, ऑस्ट्रेलियन ओपन सानिया का आखिरी ग्रैंड स्लैम था। रोहन बोपन्ना के साथ मिक्स्ड डबल्स में सानिया ऑस्ट्रेलियन ओपन के फाइनल तक भी पहुंची थीं, लेकिन खिताबी मुकाबला हार गई थीं। सानिया ने बुधवार को इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें शेयर कीं और इसका लोकेशन दुबई बताया है। सानिया ब्लू ड्रेस में नजर आ रही हैं, इसमें वह बेहद खूबसूरत लग रही हैं। नए फोटोशूट में उनके अंदाज ने फैंस का दिल जीत लिया, इंटरनेट पर यह तस्वीरें खूब वायरल हो रही हैं। मुंबई में एक कार्यक्रम के दौरान टेनिस में काफी समय तक भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए सानिया को सम्मानित किया गया था। सानिया पांच मार्च को हैदराबाद के एलबी स्टेडियम में खेलती नजर आएंगी, हालांकि यह प्रोफेशनल मैच नहीं, बल्कि एक प्रदर्शनी मैच होगा।

## सबसे अमीर लोगों की लिस्ट में मस्क फिर दूसरे नंबर पर, अरनॉल्ट आगे निकले

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। एलन मस्क दुनिया के नंबर एक अमीर व्यक्ति होने का ताज एक बार फिर गंवा बैठे हैं। टेस्ला, स्पेसएक्स और ट्विटर जैसी कंपनियों के मुखिया मस्क इसी हफ्ते फिर से दुनिया के नंबर एक व्यक्ति बने थे। ब्लूमबर्ग बिजनेस इंडेक्स के अनुसार मस्क का नेट वर्थ 187.1 अरब डॉलर के करीब है। फॉर्च्यून की एक रिपोर्ट में कहा गया है टेस्ला के शेयरों के भाव बुधवार को 5% से अधिक फिसल गए। इससे मस्क को करीब दो अरब डॉलर का नुकसान हुआ। इसके बाद फ्रांस के कारोबारी बर्नार्ड अरनॉल्ट एक बार फिर दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बन गए। बुधवार के कारोबारी सेशन के दौरान मस्क की संपत्ति में 1.9 अरब डॉलर की कमी आई और यह 184 बिलियन डॉलर पर पहुंच गई। वहीं अरनॉल्ट की कुल संपत्ति करीब 186 अरब डॉलर है। दो दिन पहले ही मस्क अरनॉल्ट को पीछे करते हुए दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बने थे। उससे पहले पिछले साल दिसंबर में फ्रेंच कारोबारी अरनॉल्ट ने मस्क को पीछे कर दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बने थे। उस दौरान टेस्ला के शेयरों में 65 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई थी।

# पुरानी पेंशन की ओर लौटना गलत कदम

### आरबीआई के पूर्व गवर्नर बोले-ये बड़ी आबादी की सुविधाओं से समझौते जैसा

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। पुरानी पेंशन योजना को फिर से शुरू करने का कुछ राज्यों का निर्णय निश्चित रूप से एक प्रतिकूल कदम होगा और इससे सरकारी कर्मचारियों को आम लोगों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार हासिल होगा। आरबीआई के पूर्व गवर्नर डी सुब्बाराव ने यह बात कही है। पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) के तहत कर्मचारियों को एक परिभाषित पेंशन मिलती है। एक कर्मचारी पेंशन के रूप में अंतिम आहरित वेतन की 50 प्रतिशत राशि का हकदार है। एनडीए सरकार ने 2003 में ओपीएस को बंद कर दिया था। यह फैसला एक अप्रैल 2003 से प्रभावी था। सुब्बाराव ने कहा, 'राजकोषीय जिम्मेदारी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और व्यापक रूप से हमारे सुधारों की विश्वसनीयता के लिए यह निश्चित रूप से गलत कदम होगा। नई पेंशन योजना (एनपीएस) के तहत कर्मचारी अपने मूल वेतन का 10 प्रतिशत पेंशन में योगदान करते हैं जबकि सरकार 14 प्रतिशत का योगदान करती है। उन्होंने कहा ₹एक ऐसे देश में जहां अधिकांश लोगों के पास कोई सामाजिक सुरक्षा जाल नहीं है, सुनिश्चित पेंशन वाले सरकारी कर्मचारी एक विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति की तरह हैं। आम जनता की सुविधाओं की कीमत पर उन्हें और अधिक सुविधाएं प्रदान करना

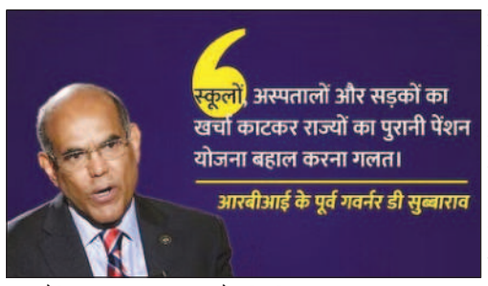


नैतिक रूप से गलत और वित्तीय रूप से हानिकारक होगा। सुब्बाराव के अनुसार, अगर राज्य सरकारें 'पे एज यू गो' पेंशन योजना पर वापस लौटती हैं, तो पेंशन का बोझ मौजूदा राजस्व पर पड़ेगा। जिसका साफ मतलब होगा कि सरकारों को स्कूलों, अस्पतालों, सड़कों और सिंचाई योजनाओं पर खर्चा कम करना होगा। राजस्थान, छत्तीसगढ़ और झारखंड की सरकारों ने अपने कर्मचारियों के लिए ओपीएस को फिर से शुरू करने के अपने फैसले के बारे में केंद्र सरकार/ पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) को सूचित किया है। पंजाब सरकार ने 18 नवंबर 2022 को एनपीएस के तहत आने वाले राज्य सरकार के कर्मचारियों के लिए ओपीएस के कार्यान्वयन के संबंध में एक अधिसूचना जारी की है। झारखंड ने भी ओपीएस पर लौटने का फैसला किया है। भारत के बढ़ते चालू खाते के घाटे (सीएडी) के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में सुब्बाराव ने कहा कि इस साल की शुरुआत में इस बात को लेकर चिंता थी कि जिंसों की ऊंची कीमतों और निर्यात में नरमी के कारण चालू खाते का घाटा बढ़कर जीडीपी के चार प्रतिशत तक पहुंच जाएगा।उन्होंने कहा, 'हालांकि पिछले कुछ महीनों में दबाव कम हुआ है क्योंकि जिंसों की कीमतें अपने चरम से 15 प्रतिशत तक कम हो गई हैं।'

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत का सेवा क्षेत्र का निर्यात उल्लेखनीय प्रदर्शन कर रहा है।

## मुकेश अंबानी बोले- हम आंध्र में 40 हजार करोड़ का निवेश कर सबसे बड़ा डिजिटल नेटवर्क बना रहे

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। रिलायंस इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी ने विशाखापत्तनम में कहा है कि हम राज्य में 40,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश करके सबसे बड़ा और सबसे अच्छा डिजिटल नेटवर्क पदचिह्न बना रहे हैं। मुकेश अंबानी ने कहा कि इसमें हमारे 4जी नेटवर्क में राज्य का 98 फीसदी हिस्सा शामिल है। उन्होंने कहा कि पूरे भारत में 5जी का रोलआउट 2023 के अंत तक पूरा हो जाएगा। इससे अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र को लाभ होगा और आंध्र प्रदेश में रोजगार के अवसर पैदा होंगे। रिलायंस ने आंध्र प्रदेश में 20,000 से अधिक प्रत्यक्ष नौकरियां और बड़ी संख्या में अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा की हैं। यह यहां शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर रही है। हम राज्य में 10 गीगावाट नवीकरणीय सौर ऊर्जा में भी निवेश करेंगे।

## सोने-चांदी की चमक वापस लौटी, दो दिनों की गिरावट के बाद आज देखी गई बढ़त

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। दो दिन लगातार सोने और चांदी के दाम में गिरावट के बाद हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन में सोने और चांदी में तेजी देखी जा रही है. मार्केट खुलने के साथ ही बढ़त देखी जा सकती है. पहले सोने के दाम की बात करें तो आज मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में 24 कैरेट सोना 55,899 रुपये प्रति 10 ग्राम पर खुला है. इसके बाद सोने के दाम में कुछ नरमी देखी गई है और यह सुबह 10.38 मिनट पर 55,821 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रहा है. कल सोना 55,739 रुपये पर बंद हुआ था. 03 मार्च यानी शुक्रवार के दिन चांदी के दाम में इजाफा दर्ज किया जा रहा है. वायदा बाजार में आज चांदी बढ़त के साथ कारोबार कर रहा है. आज 999 शुद्धता वाली चांदी मार्केट खुलने के साथ 64,322 रुपये प्रति किलोग्राम पर कारोबार कर रही थी. वहीं 10.38 मिनट तक चांदी में और मजबूती देखी गई है और यह 64,467 रुपये प्रति किलोग्राम पर कारोबार कर रही है. कल की बात करें तो चांदी 64,034 रुपये पर बंद हुई थी.

**अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्या है सोना और चांदी का हाल?**

वहीं इंटरनेशनल मार्केट में सोने के दाम की बात करें तो सोना अपने निचले स्तर से तो कुछ मजबूत हुआ, लेकिन इसमें आज भी गिरावट देखी जा रही है. आज सोना 0.27 फीसदी की गिरावट के साथ 1,840.50 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा है. वहीं चांदी के दाम में भी गिरावट देखी जा रही है. यह आज 0.92 फीसदी की गिरावट के साथ 20.901 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा है.

**जानें देश के प्रमुख शहरों के गोल्ड सिल्वर के दाम-**

नई दिल्ली- 24 कैरेट सोना 56,600 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 66,900 रुपये प्रति किलोग्राम मुंबई- 24 कैरेट सोना 56,450 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 66,900 रुपये प्रति किलोग्राम कोलकाता- 24 कैरेट सोना 56,450 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 66,900 रुपये प्रति किलोग्राम चेन्नई- 24 कैरेट सोना 57,200 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 70,000 रुपये प्रति किलोग्राम बेंगलुरु- 24 कैरेट सोना 56,500 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 70,000 रुपये प्रति किलोग्राम अहमदाबाद- 24 कैरेट सोना 56,500 रुपये प्रति 10 ग्राम, चांदी 66,900 रुपये प्रति किलोग्राम।

## बीती तिमाही ग्रामीण खपत सिर्फ 4.6% बढ़ी, ये 2% कम

### लागत-उपज के दाम का अंतर 15% इसी घाटे के चलते ग्रामीण खपत घटी

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। ग्रामीण खपत सुस्त पड़ रही है। दिसंबर तिमाही में दोपहिया की बिक्री 27 महीनों में सबसे कम बढ़ना इसका संकेत है। अप्रैल-दिसंबर 2022 के दौरान खेती-किसानी की लागत 24% बढ़ने के मुकाबले उपज के दाम सिर्फ 9% बढ़ना इसकी सबसे बड़ी वजह रही। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेस की एक रिपोर्ट के मुताबिक, इस बीच खेती-किसानी से आय सिर्फ 1% बढ़ी और गैर-कृषि मजदूरी में लगातार कमी आई। इकोस्कोप नाम की रिपोर्ट के मुताबिक, तीसरी तिमाही में ग्रामीण खपत 4.6% बढ़ी। पहली तिमाही में ये बढ़ोतरी 5.5% और दूसरी तिमाही में 6.5% थी। महंगाई के चलते कम चीजों पर ज्यादा खर्च हुआ। अक्टूर-दिसंबर तिमाही में देश में वास्तविक कृषि मजदूरी लगभग 1% ही बढ़ी। राहत की बात ये है कि इससे पहले लगातार तीन तिमाही कृषि मजदूरी में गिरावट आई थी। अप्रैल-दिसंबर 2022 के बीच सरकार ने ग्रामीण क्षेत्र पर सरकारी खर्च में 13.4% हुई। लेकिन अप्रैल-दिसंबर 2021 के बीच ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर सरकारी खर्च में 9.9% गिरावट आई थी। किसान खेती के लिए जरूरी सामान पर आय से ज्यादा खर्च कर रहा है। अप्रैल 2022 से जनवरी 2023 के बीच डीजल, खाद, कीटनाशक, ट्रैक्टर जैसी मशीनरी और बिजली जैसे इनपुट पर खर्च 24% बढ़ा। इसके मुकाबले कृषि उपज के दाम सर्फ 9% बढ़े। चालू वित्त वर्ष के पहले 9 महीनों में ग्रामीणों का खर्च 5.3% बढ़ा। बीते वित्त वर्ष के पहले 9 महीनों में ये खर्च सिर्फ 0.6% बढ़ा था।

## दैनिक पंचांग

| ग्रह स्थिति | | लग्नारंभ समय | |
|---|---|---|---|
| सूर्य- | कुंभ में | कुंभ - | 05-32 बजे |
| चंद्र- | कर्क में | मीन... | 07-10 बजे |
| मंगल | वृष में | मेष-- | 08-46 बजे |
| बुध- | कुंभ में | वृष-- | 10-30 बजे |
| गुरु- | मीन में | मिथुन.. | 12-30 बजे |
| शुक्र- | मीन में | कर्क... | 14-43 बजे |
| शनि- | कुंभ में | सिंह... | 16-55 बजे |
| राहु- | मेष में | कन्या.. | 19-02 बजे |
| केतु- | तुला में | तुला.. | 21-08 बजे |
| | | वृश्चिक. | 23-19 बजे |
| | | धनु..... | 01-31 बजे |
| | | मकर.. | 03-38 बजे |

विक्रम श्री नल नाम संवत्- **2079**
शक संवत -**1944,** कलियुग अवधि-**432000**
भोग्य कलि वर्ष-**426878**
कलियुग संवत् -**5123** वर्ष सूर्य-उत्तरायणे
कल्पारंभ संवत् -**1972949123**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885123**
महावीर निर्वाण संवत् -**2549,**हिजरी सन् -**1443**
ऋतु-बसंत दिशाशूल-पूर्व - अदरक खाकर घर से निकले
तिथि- द्वादशी - **11 -43** उपरान्त त्रयोदशी
मास - फाल्गुन शुक्ल पक्ष , शनिवार **Mar 04**
नक्षत्र -पुष्य - **18 -41** उपरान्त आश्लेषा
योग - शोभन-**19 - 35** - तक उप अतिगण्ड
करण- बालव -**11 - 43** - तक उप- कौलव
विशेष:-
व्रत -त्योहार - **शनि प्रदोष व्रत**

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

**राहुकाल 09:31 से 10:59 तक**

### श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

| दिन का चौघड़िया | | रात का चौघड़िया | |
|---|---|---|---|
| काल. | 06:36 - 08:02 अशुभ | लाभ. | 18:19 - 19:53 शुभ |
| शुभ. | 08:02 - 09:31 शुभ | उत्पात | 19:53 - 21:25 अशुभ |
| रोग | 09:31 - 10:59 अशुभ | शुभ | 21:25 - 22:56 शुभ |
| उत्पात | 10:59 - 12:28 अशुभ | अमृत | 22:56 - 00:28 शुभ |
| चंचल | 12:28 - 13:57 शुभ | चंचल | 00:28 - 01:59 शुभ |
| लाभ | 13:57 - 15:25 शुभ | रोग | 01:59 - 03:30 अशुभ |
| अमृत | 15:25 - 16:54 शुभ | काल | 03:30 - 05:02 अशुभ |
| काल | 16:54 - 18:19 अशुभ | लाभ | 05:02 - 06:36 शुभ |

### आपका राशिफल

**मेष** (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,)

खुशियों से भरा शुभ दिन। पैसों का आगमन आज आपको कई आर्थिक परेशानियों से निजात दिला सकता है। नई चीजों पर ध्यान दें और अपने सबसे अच्छे दोस्तों से मदद लें। निजी मामले नियंत्रण में रहेंगे। अपने पेशेवर ब्लॉकों को हल करने के लिए अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करें।

**वृष** (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,)

किसी दोस्त का ठंडा रवैया आपको नाराज़ कर सकता है। लेकिन अपने आप को ठंडा रखने की कोशिश करें। यह आपको पीड़ा न दें बल्कि दुख से बचने का प्रयास करें। पैसे के संदिग्ध उपक्रमों में न फँसें-निवेश को अत्यधिक सावधानी से संभालना चाहिए। दोस्तों के साथ शाम का समय मौज-मस्ती के साथ-साथ छुट्टियों की योजना बनाने के लिए भी अच्छा रहेगा।

**मिथुन** (का, की, कू, घ, ङ, झ, के, को, हा,)

दोस्त आपका परिचय किसी ख़ास व्यक्ति से कराएंगे, जो आपकी सोच पर गहरा प्रभाव डालेगा। आज दूसरों के कहने पर निवेश करने से आर्थिक नुकसान होने की संभावना है। आज अगर परिवार का कोई सदस्य आपको परेशान करता है- इससे पहले कि स्थिति हाथ से निकल जाए, सीमा तय कर लें।

**कर्क** (ही, हू ,हे, हो, डा , डी, डू, डे, डो,)

कोई दोस्त आपके खुले विचारों और सहनशीलता की परीक्षा ले सकता है। आपको सावधान रहना चाहिए कि आप अपने मूल्यों का समर्पण न करें और हर निर्णय में तर्कसंगत रहें। धन लाभ आपकी उम्मीद के अनुरूप नहीं रहेगा। आपका ज्ञान और अच्छा हास-परिहास आपके आस-पास के लोगों को प्रभावित करेगा।

**सिंह** (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)

किसी बेवजह की बहस में अपनी ऊर्जा बर्बाद न करें। अपने आप को याद दिलाएं कि आप किसी तर्क से कभी कुछ हासिल नहीं करते हैं लेकिन कुछ खो देते हैं। लंबी अवधि के नज़रिए से निवेश करना चाहिए। दिन की शुरुआत करीबी रिश्तेदारों या दोस्तों से शुभ समाचार के साथ होगी।

**कन्या** (टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ट, पे ,पो,)

आज आप आशा के जादू के अधीन हैं। यदि आपकी रचनात्मक प्रतिभा का उचित उपयोग किया जाए तो यह अत्यधिक आकर्षक साबित होगी। जब आप किसी ग्रुप में हों तो ध्यान रखें कि आप क्या कहते हैं-आपकी आवेगपूर्ण टिप्पणियों के लिए आपकी कड़ी आलोचना हो सकती है।

**तुला** (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)

शराब की आदत से छुटकारा पाने के लिए यह एक बहुत ही शुभ दिन है। आपको यह समझना चाहिए कि शराब पीना स्वास्थ्य का घातक दुश्मन है और यह आपकी कार्यक्षमता को भी कम करता है। धन का अचानक प्रवाह आपके बिलों और तत्काल खर्चों का ख्याल रखता है।

**वृश्चिक** (लो,ना,नी, ने,नू, या, यी ,यू,)

बच्चे आपकी पसंद के मुताबिक काम नहीं करेंगे- जिससे आप चिड़चिड़े हो जाएंगे। आपको खुद पर संयम रखना चाहिए क्योंकि अनियंत्रित क्रोध आमतौर पर सभी को प्रभावित करता है और क्रोधित व्यक्ति को सबसे अधिक नुकसान होता है क्योंकि यह ऊर्जा बर्बाद करता है।

**धनु** (ये, यो,य, मी, मू धा ,फा, ढा, मे)

आपके लिए तम्बाकू का सेवन बंद करने का सही समय है अन्यथा बाद में इस आदत से छुटकारा पाना आपके लिए बेहद मुश्किल होगा और इसका उपयोग न केवल आपके शरीर को स्टंट करता है बल्कि मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है। आज निवेश से बचना चाहिए।

**मकर** (मो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, ग, गी)

कुछ शारीरिक परिवर्तन जो आप आज करते हैं निश्चित रूप से आपके रूप-रंग में निखार लाएंगे। आज आपको अपना पैसा खर्च करने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि घर का कोई बड़ा आपके पैसों में आपकी मदद कर सकता है। जीवनसाथी के साथ बेहतर समझ घर में सुख-शांति और समृद्धि लाती है।

**कुंभ** (गू, गे ,गो, सा, सि, सू, से, सो, द,)

किसी रचनात्मक काम में खुद को लगाएं। आपकी बेकार बैठने की आदत मानसिक शांति के लिए घातक साबित हो सकती है। अतीत में आपने अपने भविष्य को समृद्ध बनाने के लिए जो पैसा लगाया था, आज उसका फल मिलेगा। दिन के उत्तरार्ध में आप आराम करना और अपने परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताना पसंद करेंगे।

**मीन** (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)

अब समय आ गया है कि आप यह जान लें कि मानसिक शत्रु शरीर की रोगप्रतिरोधक शक्ति को कम कर देते हैं इसलिए मन में कोई अवांछित विचार न आने दें। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य आज ख़राब हो सकता है, जिससे आपके ख़र्चे का बड़ा हिस्सा ख़र्च होगा। आपके मित्र उस समय आपको निराश कर सकते हैं।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

## नितिन गडकरी ने दी अहम जानकारी नई गति सीमा लागू करेगी सरकार

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। भारत में पिछले कुछ सालों में तेजी से एक्सप्रेस वे और हाइवे का विकास हुआ है। ऐसे में देश में गाड़ियों की स्पीड में बढ़ोतरी के प्लान पर सरकार काम कर रही है। सड़क और परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने बताया है कि अब भारत के नए एक्सप्रेस वे और हाइवे ज्यादा तेजी स्पीड के लिए तैयार है। ऐसे में सरकार गति सीमा को बदलने की तैयारी कर रही है। लाइव मिंट में छपी रिपोर्ट के मुताबिक गडकरी ने कहा कि सरकार की यह प्राथमिकता है कि लोगों की सेफ्टी को ध्यान में रखते हुए देश के ट्रांसपोर्टेशन को बेहतर बनाया जाए।उन्होंने कहा कि नए हाइवे में पुरानी स्पीड लिमिट के कारण यातायात पर बुरा असर पड़ेगा। ऐसे में सरकार स्पीड लिमिट में बदलाव की तैयारी कर रही है। नितिन गडकरी ने आगे कहा कि गति सीमा को तय करने की जिम्मेदारी सड़क और परिवहन की है, लेकिन यह मामला समवर्ती सूची में आता है। ऐसे में केंद्र जल्द ही राज्य सरकारों से भी इस मामले पर बातचीत करेगी। इसके बाद ही सरकार गति सीमा के नियम कानून में किसी तरह का बदलाव करेगी। उन्होंने कहा कि देश में कई नए हाइवे का निर्माण हुआ है, लेकिन गाड़ियों की स्पीड पुरानी ही है। ऐसे में ट्रांसपोर्टेशन में लगने वाला वक्त कम नहीं हुआ है। इस परेशानी को दूर करने के लिए केंद्रीय परिवहन मंत्रालय जल्द ही राज्यों के परिवहन मंत्रियों के साथ बैठक करेगा। इसके बाद नए नियमों के लागू किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि गाड़ियों की स्पीड को हाईवे के 8 लेन, 6 लेन, 4 लेन और 2 लेन के हिसाब से तय किया जाएगा। इसके साथ ही गाड़ियों के प्रकार और शहरों के हिसाब से भी गति सीमा पर विचार किया जाएगा। गौरतलब है कि साल 2018 में केंद्र ने नोटिफिकेशन के जरिए एक्सप्रेस वे और हाईवे की स्पीड लिमिट में इजाफा करने का फैसला किया था। एक्सप्रेस वे की गति सीमा को बढ़ाकर 120 किलोमीटर और हाईवे को बढ़ाकर 100 किलो मीटर कर दिया गया था। मगर इस मद्रास हाईकोर्ट ने इस नोटिफिकेशन पर रोक लगा दी थी। इसके बाद केंद्र सरकार हाईकोर्ट के इस फैसले के खिलाफ अगस्त 2021 में सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई थी। नितिन गडकरी ने बताया कि सरकार हर दिन 60 किलोमीटर के हाईवे का निर्माण करना चाहती है, लेकिन कोरोना के दौरान यह कम होकर 60 किलोमीटर पर रह गया था। ऐसे में इस स्पीड को बेहतर करने के लिए लगातार काम किया जा रहा है।

## क्रेडिट कार्ड रिवार्ड प्वाइंट का ऐसे करें स्मार्ट यूज, शॉपिंग, ट्रेवेल और फूड पर मिलेगी भारी छूट

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। पिछले कुछ सालों के दौरान क्रेडिट कार्ड का यूज बढ़ा है। क्रेडिट कार्ड ने लोगों के शॉपिंग करने के तरीके को बदला है। खासकर फेस्टिवल सीजन के दौरान क्रेडिट कार्ड का खूब उपयोग किया गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, जनवरी के दौरान क्रेडिट कार्ड का कुल खर्च 11 महीने से लगातार 1 लाख करोड़ को पार कर चुका है। पिछले साल फेस्टिवल सीजन के दौरान 1.22 लाख करोड़ रुपये का खर्च हुआ था। ऐसे क्रेडिट कार्ड की संख्या, डिमांड और बैंकों की ओर से पेश किए गए नए तरह के क्रेडिट कार्ड की संख्या भी बढ़ी है। हालांकि क्रेडिट कार्ड का समय के साथ पैसा नहीं चुकाया जाए तो ये आपका भारी नुकसान भी करा सकती है, लेकिन स्मार्ट तरीके से इसका यूज आपको फायदा भी पहुंचा सकती है। क्रेडिट कार्ड के तहत गिफ्ट बेनेफिट्स, छूट के अलावा कई ऐसे फायदे दिए जाते हैं, जिस कारण ज्यादातर लोग क्रेडिट कार्ड का उपयोग करते हैं।

## अडाणी ग्रुप के सभी 10 शेयरों में तेजी:एंटरप्राइजेज का शेयर 16% से ज्यादा बढ़ा

### सेंसेक्स 900 अंक चढ़कर 59,808 पर बंद हुआ

मुंबई, 3 मार्च (एजेंसियां)। भारतीय शेयर बाजार में हफ्ते के पांचवें और आखिरी कारोबारी दिन, यानी शुक्रवार (3 मार्च 23) को तेजी देखने को मिली। सेंसेक्स करीब 900 अंक बढ़कर 59,808 के स्तर पर बंद हुआ।

वहीं निफ्टी में भी 272 अंक की तेजी रही। यह 17,594 के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 25 शेयरों में तेजी और सिर्फ 5 शेयरों में गिरावट रही।

**अडाणी एंटरप्राइजेज का शेयर 16.60% चढ़ा**

मार्केट में इस तेजी के बीच आज अडाणी ग्रुप के सभी 10 शेयरों में भी तेजी देखने को मिली। ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी अडाणी एंटरप्राइजेज का शेयर सबसे ज्यादा 16.60% चढ़ा।

वहीं अडाणी पोर्ट्स में 9.76% की तेजी देखने को मिली। इसके अलावा अडाणी ट्रांसमिशन, विल्मर, पावर, टोटल गैस, ग्रीन एनर्जी, अंबुजा सीमेंट, एसीसी और एनडीटीवी के शेयरों में करीब 5-5% की तेजी रही।

**एसबीआई -भारती एयरटेल निफ्टी-50 के टॉप गेनर में शामिल**

अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पोर्ट्स, एसबीआई, भारती एयरटेल, एसबीआई लाइफ, टाटा स्टील, आईटीसी और रिलायंस समेत निफ्टी-50 के 42 शेयरों में तेजी देखने को मिली। टेक महिंद्रा, अल्ट्राटेक सीमेंट, सिप्ला, डिविस लैब, नेस्ले इंडिया, ग्रासिम और एशियन पेंट्स में गिरावट रही। वहीं एक शेयर में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

**पीएसयू बैंक सेक्टर में सबसे ज्यादा 5.40% की तेजी**

एनएसई के सभी 11 सेक्टोरल इंडेक्स में तेजी देखने को मिली। पीएसयू बैंक सेक्टर में सबसे ज्यादा 5.40% की तेजी रही। मेटल में 3.55% और बैंक सेक्टर में 2.13% की तेजी आई है। फाइनेंशियल सर्विसेज, एफएमसीजी, मीडिया, प्राइवेट बैंक और रियल्टी सेक्टर में भी 1% से ज्यादा की तेजी रही। वहीं ऑटो, आईटी और फार्मा सेक्टर में भी मामूली तेजी देखने को मिली।

**गुरुवार को सेंसेक्स 501 अंक गिरकर बंद हुआ था**

शेयर बाजार में गुरुवार (2 मार्च) को बिकवाली देखने को मिली थी। सेंसेक्स 501 अंक गिरकर 58,909 के स्तर पर बंद हुआ था। निफ्टी में भी कमजोरी रही थी। ये 130 अंक गिरकर 17,320 के स्तर पर बंद हुआ था।

## बेंगलुरु में बनेगा आईफोन बनाने का प्लांट

### फॉक्सकॉन इसके लिए 5.7 हजार करोड़ रुपए का निवेश करेगी, 1 लाख जॉब्स क्रिएट होने की उम्मीद

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। एपल इंक के पार्टनर फॉक्सकॉन टेक्नोलॉजी ग्रुप ने लोकल प्रोडक्शन को बढ़ाने के लिए भारत में एक नए प्लांट पर करीब 700 मिलियन डॉलर (करीब 5.7 हजार करोड़ रुपए) का निवेश करने का प्लान बनाया है। ब्लूमबर्ग ने अपनी एक रिपोर्ट में इस बात की जानकारी दी है। अमेरिका-चीन के बीच तनाव बढ़ने के कारण चीन से मैन्युफैक्चरिंग भारत में शिफ्ट की जा रही है। जियो पॉलिटिकल टेंशन और कोरोना महामारी के बाद एपल समेत अन्य अमेरिकी टेक दिग्गज चीन के बाहर भी अपनी मैन्युफैक्चरिंग फैसिलिटी के विस्तार पर काम कर रहे हैं। मामले से जुड़े लोगों ने बताया कि ताइवान की कंपनी ने बेंगलुरु में एयरपोर्ट के करीब 300 एकड़ की साइट पर प्लांट बनाने का प्लान बनाया है। यह फैक्ट्री पार्ट बनाने के साथ एपल के हैंडसेट भी असेंबल कर सकेगी। फॉक्सकॉन अपनी इस साइट को नए इलेक्ट्रिक व्हीकल बिजनेस के लिए कुछ पार्ट्स का प्रोडक्शन करने के लिए भी यूज कर सकती है। भारत में इस प्लांट के बनने से लगभग 1 लाख जॉब्स क्रिएट होने की उम्मीद है। चीन के झेंग्झौ में कंपनी के विशाल आईफोन असैंबली कॉम्प्लेक्स में इस समय लगभग 200,000 कर्मचारी काम करते हैं। हालांकि पीक प्रोडक्शन सीजन के दौरान यह संख्या बढ़ जाती है। भारत में फॉक्सकॉन का ये इन्वेस्टमेंट अब तक का उसका यहां सबसे बड़ा सिंगल इन्वेस्टमेंट है। एपल ने 2017 में आईफोन एसई के साथ भारत में आईफोन्स की मैन्युफैक्चरिंग शुरू की थी।

# जलती चिता की राख से श्मशान में होली

## गले में नरमुंड की माला और सांप, हवा में भस्म उड़ाते निकालते हैं शिव की बारात

वाराणसी, 3 मार्च (एक्सक्लूसिव डेस्क)। यहां सड़कें श्मशान की राख से पटी हैं। जिधर नजर जा रही, कोई चेहरे पर राख मल रहा है, तो कोई चिता भस्म से नहाया हुआ है। कोई इंसानी खोपड़ियों की माला गले में पहने, मुंह में जिंदा सांप दबाए नृत्य कर रहा, तो कोई जानवरों की खाल पहनकर डमरू बजा रहा। एक तरफ चिताएं जल रही हैं, दूसरी तरफ लोग उसकी राख से होली खेल रहे हैं। यानी खुशी और गम साथ-साथ। आम इंसान जो चिता की राख से दूर भागता है, आज वो इसे प्रसाद मानकर एक चुटकी राख के लिए घंटों इंतजार कर रहा है। भीड़ इतनी कि पैर रखने तक की भी जगह नहीं। ये नजारा है बनारस की मसान होली का। मान्यता ये कि चिता की राख से होली खेलने पर भगवान शिव प्रसन्न होते हैं।

काशी में होली से 4-5 दिन पहले ही मसान होली की शुरुआत हो जाती है। इसके लिए न सिर्फ देशभर से बल्कि बड़ी संख्या में विदेशी भी यहां मसान होली खेलने आते हैं। यही वजह है काशी विश्वनाथ मंदिर के आसपास एक भी होटल या गेस्ट हाउस खाली नहीं है। रास्ते में जगह-जगह अघोरी बाबा करतब दिखा रहे हैं। कोई हाथ में नाग लेकर घूम रहा है, तो कोई आग से खेल रहा। चिता की भस्म हवा में इस तरह घुली है कि दूर-दूर तक मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा। हरिश्चंद्र घाट पर दिन-रात शव जलते रहते हैं। यहां के मुख्य आयोजक पवन कुमार चौधरी हैं। वे डोमराजा कालूराम के वंशज हैं। मसान होली को लेकर पवन चौधरी एक पौराणिक कथा सुनाते हैं।

'राजा हरिश्चंद्र हमारे बाबा कालू राम डोम के हाथों इसी जगह पर बिके थे। उनकी पत्नी भी कालू राम डोम के यहां काम करने लगी थीं। जब राजा हरिश्चंद्र ने अपनी पत्नी तारा से अपने बेटे के अंतिम संस्कार के लिए भी कर चुकाने को कहा, तो तारा ने अपनी साड़ी फाड़कर कर चुकाया। उस दिन एकादशी थी। राजा की इस सत्यवादिता को देखकर भगवान विष्णु प्रकट हुए और कहने लगे कि राजा तुम अपनी तपस्या में सफल हुए। तुम अमर रहोगे और यह दुनिया तुम्हें सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र के नाम से जानेगी। भगवान विष्णु के पादुका निशान आज भी हरिश्चंद्र घाट पर हैं। इसी स्थान से चिता भस्म होली की शुरुआत की जाती है।'

मणिकर्णिका घाट के डोम लोकेश चौधरी बताते हैं, 'रंगभरी एकादशी के दिन शिव जी, माता पार्वती का गौना कराकर लाए थे। इसके बाद उन्होंने काशी में अपने गणों के साथ रंग-गुलाल की होली खेली, लेकिन वे श्मशान में बसने वाले भूत, प्रेत, पिशाच, किन्नर और अन्य जीव जंतुओं आदि के साथ होली नहीं खेल पाए थे। इसलिए रंगभरी एकादशी के एक दिन बाद महादेव ने श्मशान में बसने वाले भूत-पिशाचों के साथ होली खेली थी। तभी से यहां मसान होली खेली जाती है।'

हरिश्चंद्र घाट पर शिव जी का एक मंदिर है। इसे मसान मंदिर कहा जाता है। यहां सुबह से ही उत्सव का माहौल है। शिवलिंग पर दूध, दही, शहद, फल, फूल, माला, धतूरा, गांजा, भस्म चढ़ाई जा रही है। पांच पुजारी रुद्राभिषेक करा रहे हैं। इसके बाद बाबा को धोती और मुकुट पहनाया जाता है। साल में एक ही दिन बाबा मसान मुकुट पहनते हैं। इसके लिए एक रथ सजाया गया है। उस पर एक लड़के को शिव और एक लड़की को पार्वती बनाकर बिठाया जाता है। फिर चिता के सामने उनकी पूजा की जा जाती है। इसके बाद झांकी निकलती है। झांकी में कीड़े-मकौड़े, सांप-बिच्छू लिए औघड़ों को देखते ही बनता है। इसमें महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। सिर पर मुकुट, हाथ में त्रिशूल, कटार, मुंह पर काला रंग और लाल रंग की बाहर लटकती जीभ। मानो साक्षात काली यहां उतर आई हैं। ये झांकी यहां से करीब 700 मीटर दूर अघोराचार्य कीनाराम के आश्रम जाती है। फिर आश्रम से बाबा भोलेनाथ की बारात निकलती है। बारात में भीड़ ऐसी कि तिल रखने की भी जगह नहीं है। अघोरी और तांत्रिक तो इसमें शामिल है ही, आम लोग भी इसमें शामिल होने के लिए लालायित हैं।

रंगभरी एकादशी पर हजारों लोग अघोरियों को देखने आए हैं। कोई बोल रहा है कि ऐसे-ऐसे बाबा साल में एक बार ही दिखाई देते हैं। इसलिए इनका दर्शन करना सौभाग्य की बात है। हर कोई ऐसे अद्भुत दृश्यों को अपने कैमरे में कैद करना चाहता है। दोपहर बाद करीब 2 बजे झांकी अघोरपीठ आश्रम पहुंचती है। इसके बाद सभी अघोरी बाबा और डोम राजा उसी जगह पहुंचते हैं, जहां भगवान विष्णु राजा हरिश्चंद्र के सामने प्रकट हुए थे। यहां एक मंच बना हुआ है। सभी मंच पर पहुंचते हैं। इसके बाद शिवलिंग पर चढ़ाई गई चिता की भस्म मंगाई जाती है। अघोरी बाबा एक दूसरे पर चिताओं की राख उडेलने लगते हैं। इसके बाद बाकी लोग भी एक-दूसरे पर भस्म लगाने लगते हैं।

पवन कुमार चौधरी बताते हैं, अघोराचार्य कीनाराम, कालू राम डोम के शिष्य थे। उन्होंने इसी हरिश्चंद्र घाट पर शिव की साधना की थी और सिद्धि हासिल की थी। इसी वजह से शिव-पार्वती की पालकी यहां लाई जाती है। यहां अघोरपीठ की स्थापना की गई है। अघोरपंथ के लोग कीनाराम को शिव के रूप में भी पूजते हैं। हर दिन अघोरपीठ से एक व्यक्ति हरिश्चंद्र घाट आता है और चिता की सुलगती लकड़ी कंधे पर रखकर अघोरपीठ ले जाता है। इन्हीं चिताओं की लकड़ियों पर आश्रम में प्रसाद और लंगर बनता है। दूर दूर से लोग यहां अपनी अलग अलग समस्याओं के निवारण के लिए आते हैं। हजारों साल से चली आ रही यह परंपरा आज भी कायम है। पवन कहते हैं कि काशी में अघोरी गोपनीय तरीके से रहते हैं। वे साधना के लिए कब श्मशान आते हैं और कब चले जाते हैं, कोई नहीं जानता। वे होली, दिवाली की रात और रंगभरी एकादशी को खुले तौर पर आते हैं। इन तीन दिनों में यहां वो सब देखने को मिलता है, जिसे कमजोर दिल वाले आम इंसान नहीं देख सकते। जैसे कोई अघोरी गुड़िया में सुई घोंप रहा होता है, कोई मुर्गे का सिर काटकर उसके खून से साधना करता है, तो कई मछली जला रहा होता है। जैसा संकल्प, वैसी साधना।'

अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान चंदौली के मंत्री बाबा सूर्यनाथ सिंह कहते हैं, 'अघोर का मतलब है जो घोर नहीं हो। यानी जो कठिन नहीं हो। यह एक मार्ग है, जिस पर अघोरी चलते हैं। इन्हें किसी भी चीज से तनिक भी घृणा नहीं होती है।

जैसे गंगा जिंदा-मुर्दा और पूरी गंदगी को अपने अंदर समाहित कर लेती है, फिर भी पवित्र बनी रहती है। उसी तरह अघोरी भी अपने अंदर सारी गंदगियों को समाहित करके पवित्र बना रहता है। अघोर को तंत्र से कोई मतलब नहीं है। उसकी साधना पांच प्रकार की क्रियाओं पर होती है- मांस, मछली, मदिरा, मुद्रा और मैथुन। इसे पंचमकार कहते हैं। इसी तरह से मांस में पांच प्रकार के महामांस होते हैं, जिसमें इंसान का मांस भी शामिल है।

हालांकि, सभी अघोरी इंसान का मांस नहीं खाते। अघोर मार्ग पर चलने वाले गृहस्थ हो सकते हैं, लेकिन अघोर साधक अविवाहित होते हैं। अघोरी बनने के लिए एक गुरु चुनना होता है। उससे दीक्षा लेने के बाद व्यक्ति अघोरी बन जाता है।'

# पैसों के विवाद में दो पक्षों के बीच खूनी संघर्ष

## पीट-पीट कर युवक को उतारा मौत के घाट, जांच शुरू

कोरबा, 3 मार्च (एजेंसियां)। कोरबा रजगामार चौकी अंतर्गत भुलसीडीह स्थित चौबे परिवार के फॉर्म हाउस में एक व्यक्ति की इस कदर पिटाई की गई कि अस्पताल में उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। पैसों के लेन देन को लेकर दोनों पक्षों में विवाद हुआ था। मारपीट की घटना में गंभीर रुप से घायल होने के बाद घायल शैलेंद्र दीप को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था जहां उसने दम तोड़ दिया। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

मामला रजगामार चैकी क्षेत्र का है जहां बीती रात ग्राम भुलसीडीह स्थित फॉर्म हाउस में यह घटना सामने आई। बताया जा रहा है कि फारुख और शैलेंद्र दीप अपने कुछ साथियों के साथ पुष्पेंद्र चौबे के फॉर्म हाउस पहुंचे जहां पुष्पेंद्र चौबे के परिवार के साथ उनका विवाद हुआ। विवाद के दौरान शैलेंद्र दीप को मौके पर छोड़कर उसके साथी फरार हो गए। जिसके बाद पुष्पेंद्र चौबे व उसके परिवार ने शैलेंद्र की जमकर पिटाई कर दी।

मारपीट की घटना में बुरी तरह से घायल शैलेंद्र को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही हरकत में आई पुलिस ने दोनों पक्षों के लोगों के खिलाफ अपराध कायम कर मामले की जांच शुरु कर दी है। पुलिस ने बताया कि मामले में हत्या का प्रकरण कायम कर अलग से जांच की जाएगी। रजगामार चौकी प्रभारी राजेंश चंद्रवंशी ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची जहां घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया और उसके उपचार के दौरान मौत हो गई।

मृतक के भाई भूपेंद्र डीप ने बताया कि फारुख और उसके भाई ने पुष्पेंद्र के पिता से फॉर्म हाउस में कबाड़ में तब्दील हो चुके बसों को खरीदने का सौदा किया था। जिसके एवज में उन्होंने एक लाख रुपए एडवांस भी दिए थे। इससे पहले पुष्पेंद्र के पिता की हत्या हो गई जिसके बाद वह अपने एक लाख रुपयों को वापस मांग कर रहे थे। बस इसी बात को लेकर दोनों पक्षों के बीच विवाद चल रहा था। जो खूनी संघर्ष में तब्दील हो गया। पुलिस मामले में अपराध कायम कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। बताया कि जल्द ही इस मामले में आरोपियों की गिरफ्तारी कर ली जाएगी।

# कैंची से वार कर बीबीए के स्टूडेंट की हत्या

## 2 हजार रुपए के विवाद को लेकर किया अटैक, काफी खून बह जाने से गई जान

रायपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। रायपुर में गुरुवार रात दो हजार रुपए की लेनदेन को लेकर एक युवक की हत्या कर दी गई। घटना के कुछ ही देर बाद पुलिस ने हत्यारे को हिरासत में ले लिया है, अब घटना के बारे में उससे पूछताछ की जा रही है। जिस लड़के की हत्या की गई वो बड़े कारोबारी ग्रुप के सीए का बेटा था।

घटना समता कॉलोनी इलाके के कृष्णा एडलैब्स के पास हुई। प्रियांशु अग्रवाल (19) यहां अपने 4-5 साथियों के साथ बातें कर रहा था। तभी रात करीब साढ़े 8 बजे के बीच वहां रोहित यादव (19) आ पहुंचा। उसने प्रियांशु के साथ पैसे को लेकर विवाद करने लगा। मौके पर मौजूद लड़कों ने बताया कि रोहित ने प्रियांशु पर हाथ उठा दिया, इसका विरोध करने पर आरोपी ने अपने पास रखी कैंची से उस पर कई वार कर दिए। काफी खून बह जाने से उसकी मौत हो गई। जब प्रियांशु को कैंची से मारा गया, तो मौके पर मौजूद उसके कुछ साथी भाग गए। फिर आस-पास के लोग उसे नजदीक के प्राइवेट अस्पताल लेकर गए, लेकिन उसकी की मौत हो गई।

लोगों ने ही पुलिस को खबर दी। रोहित के बारे में जानकारी मिलते ही पुलिस ने उसे पकड़ लिया। आरोपी जोरापारा का रहने वाला है। समता कॉलोनी के पास ही उसकी फ्लावर डेकोरेशन की दुकान होने की वजह से आस-पास के दुकानदार भी उसे जानते थे।

**पुराने बदमाशों के साथ काम करता था रोहित**

पुलिस को अब तक की छानबीन में पता चला है कि आरोपी रोहित हिस्ट्रीशीटर अरुण यादव के संपर्क में था। वो कुछ ऐसे ही लोगों के लिए उगाही का काम करता था। उधारी वसूली और ब्याज वसूलने की भी बातें सामने आई हैं। पुलिस इस बात का भी पता लगा रही है कि रोहित के पीछे और किन बदमाशों का हाथ है। जो प्रियांशु पर पैसों का दबाव बनाना चाह रहे थे। लोगों की जिंदगी में खुशियां बिखेरनी वाली कैंची का इस्तेमाल रोहित ने हत्या जैसी वारदात के लिए किया।

इस कैंची को फूलों की डंडियां काटने के काम में लाया जाता था। रोहित और प्रियांशु पुराने परिचित थे। मृतक के पिता सुरेश अग्रवाल पेशे से सीए हैं, पॉश इलाके समता कॉलोनी में इनका मकान है। प्रियांशु बीबीए का स्टूडेंट था।

# 184 से अधिक लोग फूड पाइजनिंग का शिकार

## गांव में था मृत्यु भोज, जिस घर में कार्यक्रम वहां कोई नहीं हुआ बीमार

आगर मालवा, 3 मार्च (एजेंसियां)। आगर मालवा जिले में 184 से अधिक लोग फूड पाइजनिंग का शिकार हो गए। मामला नलखेड़ा क्षेत्र के ग्राम लटूरी गेहलोत का है। दरअसल, इस गांव में एक मृत्युभोज कार्यक्रम हुआ था। जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीण शामिल हुए थे। बताया जा रहा है कि भोजन के बाद ग्रामीणों को उल्टी-दस्त की शिकायत होने लगी। जब बड़ी संख्या में ग्रामीण बीमार हुए तो प्रशासन को सूचना दी गई। इसके बाद शुक्रवार को पहुंचे स्वास्थ्य अमले ने ग्रामीणों का उपचार शुरू कर दिया। दूसरी ओर, स्वास्थ्य विभाग की टीम ने खाने और पानी का सैंपल लिया है। हालांकि, यह भी बात सामने आई है कि जिस परिवार में मृत्यु भोज था, उस घर से कोई बीमार नहीं हुआ है। वहीं, कुछ ऐसे भी लोग है जो मृत्यु भोज में शामिल नहीं हुए लेकिन उन्हें भी उल्टी दस्त की शिकायत हुई है। दरअसल, आगर मालवा जिले के ग्राम लटूरी गेहलोत में एक परिवार में गुरुवार का मृत्युभोज कार्यक्रम हुआ था। जिसमें 200 से अधिक लोग शामिल हुए थे। इस दौरान नुकती (बूंदी), सेव, बर्फी, गुलाब जामुन, सब्जी पूड़ी खाने के बाद ग्रामीणों की तबीयत बिगड़ने लगी। जब बड़ी संख्या में लोगों को उल्टी-दस्त की शिकायत हुई तो प्रशासन को बुलाया गया। इसके बाद एसडीएम सोहन कनास और सीएमएचओ एसएस मालवीय सहित स्वास्थ्य विभाग की टीम मौके पर पहुंची, और बीमारों का ग्राम में ही इलाज शुरू किया। शुक्रवार दोपहर तक करीब 184 लोगों की जांच की जा चुकी है, जिनमें से किसी की भी स्थिति चिंताजनक नहीं है।

सीएमएचओ एसएस मालवीय ने बताया कि जानकारी मिलते ही हमने स्वास्थ अमला गांव भेज दिया है, और वहां पर सभी मरीजों का उपचार किया गया।

# 'मैं न बुलेट से डरता हूं और न भूपेश से'

## अमित जोगी बोले- जन समर्थन से घबरा गई सरकार, एसपी ने चिंतलनार जाने से किया मना

जगदलपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में जोगी कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अमित जोगी को सुकमा के एसपी सुनील शर्मा ने लेटर लिखा है। एसपी ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए अमित जोगी को नक्सल प्रभावित इलाका चिंतलनार जाने से मना किया है। लेटर से खफा अमित जोगी ने ट्वीट कर कांग्रेस सरकार को घेरा है। उन्होंने लिखा है कि, ऐसा मत कीजिए, 'मैं न तो बुलेट से डरता हूं और न ही भूपेश से'। हमारी पार्टी को मिल रहे जन समर्थन से सरकार घबरा गई है।

दरअसल, एसपी ने लिखा है कि, गर्मियों में नक्सलियों का टीसीओसी चलता है। इस दौरान वे किसी न किसी तरह की वारदातों को अंजाम देने की कोशिश करते रहते हैं। चिंतलनार गांव नक्सल प्रभावित इलाका है। इलाके में नक्सल मूवमेंट की सूचना लगातार मिल रही है। इसलिए वीआईपी मूवमेंट से पहले रोड ओपनिंग पार्टी को निकालना

होता है। लेकिन कम समय में यह संभव नहीं है। एसपी ने कहा कि 3 मार्च की यात्रा को स्थगित कर कोई नई तिथि दी जाए।

अमित बोले- मेरी चिंता न करें

एसपी के लेटर के बाद अमित जोगी ने सरकार को घेरा है। अमित जोगी ने कहा कि, मेरे बस्तर प्रवास के दौरान हमारी पार्टी को अपार समर्थन मिला है। जिसकी इंटेलीजेंट्स रिपोर्ट पाकर सरकार घबरा गई है। इसलिए मुझे चिंतलनार जाने से रोका जा रहा है। अमित ने कहा कि सरकार मेरी चिंता न करें। मैं चुप नहीं बैठूंगा। मैं न बुलेट से डरता हूं और न भूपेश से। क्योंकि छत्तीसगढ़ महतारी और मेरे पिता अजित जोगी जी का अशीर्वाद मेरे साथ है। अमित ने कहा कि, मेरी चिता देखने की मंशा रखने वाले अगर मेरी चिंता करने की बात करें तो न वो अच्छा लगता है और न सच्चा।

अमित जोगी पिछले 3-4 दिनों से बस्तर में ही डेरा जमाए हुए हैं। अलग-अलग तारीखों में उन्होंने सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ विभिन्न मुद्दों को लेकर पहले जगदलपुर और फिर बीजापुर के कलेक्ट्रेट कार्यालय का घेराव किया है। राज्यपाल के नाम अफसरों को ज्ञापन भी सौंपा है। वहीं आज 3 मार्च को वे सुकमा जिले के नक्सल प्रभावित चिंतलनार जाने वाले थे। लेकिन इस बीच सुकमा के एसपी की मनाही के बाद उन्हें जाने नहीं दिया गया।

# झारखंड विधानसभा में 1,16,418 करोड़ का बजट पेश

## इंफ्रास्ट्रक्चर, एग्रीकल्चर और नयी योजनाओं पर जोर, सभी को साथ लेकर चलने की कोशिश

रांची, 3 मार्च (एजेंसियां)। झारखंड विधानसभा में आज 1,16,418 करोड़ का बजट पेश किया। वित्त मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने बजट पेश किया। अपने बजट भाषण में उन्होंने इस बात को बताया कि इस बार के बजट में सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की कोशिश की गयी है। वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव ने कहा कि यह झारखंड का हमीन कर बजट है। हमने स्थापना से ज्यादा योजनाओं पर जोर दिया है। इसका मतलब है कि हम चाहते हैं कि लोगों का ज्यादा से ज्यादा विकास हो। सदन में उन्होंने कहा कि यह बजट सभी वर्गों से सुझाव लेकर बनाया गया है। राज्य पिछले तीन सालों में विकास की ओर बढ़ा है। झारखंड की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई है। बजट अभिभाषण के मुताबिक सरकार ने लगभग हर क्षेत्र को बजट आवंटित किया है। लेकिन सरकार का जोर स्थापना से ज्यादा योजनाओं पर है। राज्य सरकार इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर कृषि तक को फोकस करते हुए योजनाएं लागू करने को लेकर वजट फोकस किया है। इसके तहत सिंचाई व्यवस्था और जल संरक्षण के लिए पांच एकड़ से कम क्षेत्र वाले तालाबों का मशीन से गाद हटाने और डीप बोरिंग कराने पर 500 करोड़ रुपये खर्च करने पर जोर दिया गया है। वहीं सौर ऊर्जा आधारित माइक्रोलिफ्ट ईरिगेशन के लिए कृषि समृद्धि योजना लागू की जाएगी। कृषि क्षेत्र में पेस्टीसाइड तथा फर्टीलाइजर का उपयोग कम करते हुए जैविक खेती के प्रमोशन के लिए फसल सुरक्षा कार्यक्रम शुरू की जाएगी। ये योजनाएं बताती हैं कि 2023-24 का वर्ष योजनाओं के कृयान्वयन का होगा।

आज पेश किए गए बजट में बढ़ोत्तरी की गई है। वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव ने कहा कि अब तक जितने भी बजट पेश किए गए हैं। उसमें सामान्य तौर पर 10 प्रतिशत की वृद्धि होती थी लेकिन हमने बजट में 15 प्रतिशत की वृद्धि की है। सीएम मेधा छात्रवृति योजना ,सीएम गंभीर बीमारी योजना ,धोती साड़ी लूंगी योजना सहित सभी योजना सीधे राज्य की जनता से जुड़ी है। हमारी सरकार के पांव जमीन पर मजबूती से टिके है और आसमान की ऊंचाई को छूना है। हमारी सरकार ने राज्य के स्वास्थ्य व्यवस्था को बेहतर करने के लिए बेहतर ऋण प्रबंधन किया है। बजट में हर क्षेत्र को आगे बढ़ाने की बात कही गयी है। बजट में श्रम नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग के लिए बजट में 67% की वृद्धि की गई है। श्रम नियोजन के लिए 985 करोड़ का बजट प्रस्तावित है।

वहीं मुख्यमंत्री सारथी योजना के तहत राज्य की 1 लाख 40 हजार युवक युवतियों को कौशल प्रशिक्षण दिए जाने का लक्ष्य रखा गया है। इस बजट में वित्त मंत्री के मुताबिक राज्य में आधारभूत संरचनाओं का विकास तेजी से करना सरकार की प्राथमिकता है। राज्य के आर्थिक स्वास्थ्य को बेहतर करने और भविष्य की पीढ़ी को आर्थिक बोझ की विरासत से बचाने के लिए बेहतर ऋण प्रबंधन किया गया है।

# कड़ी सुरक्षा के बीच रवाना हुआ राम रहीम

## हनीप्रीत भी गई साथ, अब फिर से जेल में करवटें बदलेगा

बागपत, 3 मार्च (एजेंसियां)। बागपत में बरनावा के डेरा सच्चा सौदा आश्रम में गुरमीत सिंह राम रहीम की 40 दिन की पैरोल पूरी हो गई है। शुक्रवार को उसे बरनावा आश्रम से कड़ी सुरक्षा के बीच रोहतक की सुनारिया जेल ले जाया गया।

रोहतक की सुनरिया जेल से गुरमीत राम रहीम 21 जनवरी को तीसरी बार 40 दिन की पैरोल लेकर बरनावा के आश्रम पहुंचा था। इस दौरान उसने यहां पर अपनी मुंहबोली बेटी हनीप्रीत व परिवार संग पैरोल अवधि का समय बिताया। उसके पैरोल की समय अवधि गुरुवार को पूरी हो गई।

वहीं दोपहर में उसे सुनारिया जेल ले जाने के लिए हरियाणा पुलिस व सीओ बागपत विजय चौधरी, इंस्पेक्टर सलीम अहमद बरनावा आश्रम पहुंचे।

यहां से दोपहर करीब दो बजकर 50 मिनट पर पुलिस सुरक्षा के बीच उसका चार लग्जरी गाड़ियों का काफिला निकला। बताया गया कि भारी पुलिस फोर्स की मौजूदगी में राम रहीम की गाड़ियों का काफिला सुनरिया जेल के लिए रवाना कर दिया गया है।

# होटल में आग लगी, सिलेंडर फटा

## धमाके की चपेट में आया एक दमकलकर्मी घायल, पुलिस को आग लगाई जाने की आशंका

बलौदाबाजार, 3 मार्च (एजेंसियां)। बलौदाबाजार के गार्डन चौक स्थित यादव होटल में शुक्रवार सुबह आग लग गई। आग बुझाने के दौरान सिलेंडर में ब्लास्ट होने से एक दमकलकर्मी भी घायल हो गया। घायल फायर ब्रिगेड के कर्मचारी कृष्णा यादव को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक, कुछ असामाजिक तत्वों ने होटल में आग लगाई। आग ने पूरे होटल को अपनी चपेट में ले लिया। आग इतनी भीषण थी कि होटल का सारा सामान जलकर खाक हो गया। लोगों ने तुरंत घटना की सूचना फायर ब्रिगेड को दी।

घटना की सूचना मिलते ही दमकल कर्मी मौके पर पहुंच गए और आग बुझाने में जुट गए। इस दौरान होटल में रखा गैस सिलेंडर फट गया और करीब 20 फीट दूर सिलेंडर का अवशेष जाकर गिरा।इससे आग बुझाने के लिए गए फायर कर्मी कृष्णा यादव घायल हो गए। सिलेंडर का अवशेष उनके पैर पर जाकर गिरा था।

# कोयला कारोबारी के घर से 3 करोड़ कैश जब्त

## पूजा सिंघल के 2 करीबियों के 14 ठिकानों पर ईडी की रेड

रांची, 3 मार्च (एजेंसियां)। निलंबित आईएएस पूजा सिंघल की मुश्किलें और बढ़ सकती हैं। पूजा सिंघल के करीबी माने जाने वाले कोयला कारोबारी इजहार अंसारी और अशोक कुमार के 14 ठिकानों पर ईडी ने छापेमारी की है। ईडी ने इजहार अंसारी के हजारीबाग वाले घर से 3 करोड़ कैश जब्त किए हैं। अशोक कुमार जेएसएमडीसी के पूर्व प्रोजेक्ट डायरेक्टर हैं।

राजधानी रांची के हरमू स्थित ब्लू सिप्रा अपार्टमेंट के साथ- साथ रामगढ़ और हजारीबाग में मनी लॉन्ड्रिंग को लेकर कई ठिकानों पर छापेमारी हुई है। ईडी की टीम अब भी कई घरों की तलाशी ले रही है।

इजहार अंसारी कोयले का बड़ा कारोबारी है। कई नेताओं और अधिकारियों के साथ इसके रिश्ते हैं। बताया जा रहा है कि हाल में ही इजहार अंसारी ने जमशेदपुर में एक बड़ी पार्टी दी थी। इस पार्टी में राज्य के कई वरिष्ठ अधिकारी और नेता भी शामिल हुए थे।

अशोक कुमार सिंह को पूजा सिंघल का नजदीकी भी माना जाता है। कोल तस्करी से जुड़े कई कंपनियों के पते पर यह छापेमारी की जा रही है।

अशोक सिंह की नियुक्ति जेएसएमडीसी में कॉन्ट्रैक्ट पर हुई थी। बताया जाता है कि निलंबित आईएएस पूजा सिंघल का संरक्षण इन्हें मिला हुआ था।

# यूएन में भाषण देने वाली नित्यानंद की शिष्या की सफाई

## बोलीं- हम भारत का सम्मान करते हैं, पहले कहा था- हिंदू विरोधी नित्यानंद को टारगेट कर रहे

न्यूयार्क, 3 मार्च (एजेंसियां)। भारत के भगोड़े नित्यानंद की शिष्या विजयप्रिया ने 1 मार्च को जेनेवा में हुई यूएन की बैठक में कहा था- नित्यानंद को उनके जन्मस्थल पर हिंदू विरोधी लोग प्रताड़ित कर रहे हैं। अब विजयप्रिया का एक वीडियो सामने आया है। इसमें वो अपने बयान पर सफाई देती हुई नजर आ रही हैं।

उन्होंने कहा- मैं स्पष्ट करना चाहूंगी कि मैंने भारत के विरोध में कुछ नहीं कहा था। हम भारत का सम्मान करते हैं। मेरे बयान को गलत समझा जा रहा है। मीडिया के कुछ एंटी-हिंदू सेक्शन्स मेरे बयान को जानबूझकर तोड़-मोड़कर पेश कर रहे हैं।

**एंटी-हिंदू सेक्शन्स पर कार्रवाई की मांग की**

विजयप्रिया ने कहा- हम चाहते हैं कि भारत सरकार इन एंटी-हिंदू सेक्शन्स के खिलाफ कार्रवाई करे। ये सेक्शन्स कैलासा के खिलाफ लगातार हमले और हिंसा भड़का रहे हैं। हिंदू-विरोधी लोग भारतीय आबादी का बहुत ही छोटा हिस्सा है। उनकी हरकतें पूरे भारत पर सवाल नहीं खड़ा कर सकतीं। ये जरूरी है कि भारत सरकार हिंदू-विरोधी लोगों की गतिविधियों को खत्म करने के लिए कदम उठाए।

**यूएन में पारंपरिक कपड़ों और ज्वैलरी में नजर आई थीं विजयप्रिया**

स्विटजरलैंड के जेनेवा में यूएन मीटिंग के दौरान कैलासा की एक महिला भक्त (विजयप्रिया) ने इकोनॉमिक और सोशल राइट्स के साथ सस्टेनेबल डेवलपमेंट पर चर्चा में हिस्सा लिया। कैलासा की प्रतिनिधि नित्यानंद की तरह ही पारंपरिक कपड़ों और ज्वैलरी में नजर आई थीं। नित्यानंद ने ट्वीट कर इसकी जानकारी दी थी।

**नित्यानंद पर लगे हैं रेप के आरोप, इस पर रिपोर्ट्स पब्लिश कर चुका है यूएन**

नित्यानंद पर भारत में शिष्यों से रेप और किडनैपिंग के आरोप लगे थे। 2019 में वो देश छोड़कर भाग गया था। बाद में उसने अमेरिका के नजदीक 'रिपब्लिक ऑफ कैलासा' नाम का अपना अलग द्वीप बसाने का दावा किया था। हालांकि, अब तक इस द्वीप या देश को किसी देश ने मान्यता नहीं दी है।

जेनेवा मीटिंग से पहले भी यूएन कैलासा के प्रतिनिधियों की कुछ रिपोर्ट्स को पब्लिश कर चुका है। इनमें हिंदुओं के साथ ही कैलासा के धर्मगुरु नित्यानंद पर हुए अत्याचारों का जिक्र किया गया था। इसके अलावा यूएन कमेटी में कैलासा की वेबसाइट पर भी इन रिपोर्ट्स को दिखाया गया। कैलासा ने यूएन को महिलाओं और अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर भी रिपोर्ट्स सौंपी हैं।

**यूएन के मेंबर स्टेट्स का हिस्सा नहीं है कैलासा**

यूएन की ऑफिशियल वेबसाइट कैलासा को 193 मेंबर स्टेट्स में शामिल नहीं करती। दरअसल, एक 'तथाकथित' देश (या संगठन) को भी यूएन के कुछ खास सेशन्स में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है।

इसके लिए यूएन मेंबर होना जरूरी नहीं है। फिलिस्तीन और बलूचिस्तान के प्रतिनिधि भी यूएन मीटिंग्स का हिस्सा रह चुके हैं। कैलासा को आज तक किसी भी देश ने अलग कंट्री के तौर पर मान्यता नहीं दी है।

# 'भारत में दो साल से अमेरिकी राजदूत की नियुक्ति नहीं होना शर्मनाक'

## अमेरिकी सांसद ने सरकार पर उठाए सवाल

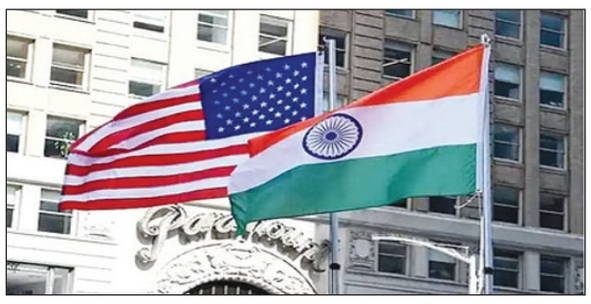

वॉशिंगटन, 3 मार्च (एजेंसियां)। अमेरिका की सत्ताधारी डेमोक्रेटिक पार्टी के सीनेटर (सांसद) ने अपनी ही सरकार पर सवाल उठाते हुए कहा है कि भारत में दो साल से अमेरिकी राजदूत की अनुपस्थिति शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि अगर एरिक गारसेट्टी के नाम को सीनेट से मंजूरी नहीं मिलती है तो हमें किसी अन्य समान रूप से योग्य व्यक्ति को भारत में राजदूत नियुक्त कर देना चाहिए। राष्ट्रपति जो बाइडेन ने लॉस एंजेलेस के पूर्व मेयर एरिक गारसेट्टी को भारत में अमेरिका का नया राजदूत नियुक्त किया है। हालांकि अभी गारसेट्टी के नाम को सीनेट से मंजूरी मिलनी बाकी है। अमेरिका के सांसद मार्क वार्नर ने कहा है कि 'यह शर्मनाक है, हम कहते हैं कि यह दुनिया में सबसे अहम और मूल्यवान संबंधों में से है और इसके बावजूद हम एक राजदूत की नियुक्ति नहीं कर सके हैं।' बता दें कि हाल ही में अमेरिका के सीनेटर्स का एक दल भारत दौरे पर आया था। मार्क वार्नर भी उस दल में शामिल थे। वार्नर ने कहा कि उनके भारत दौरे पर भारतीयों ने भी अमेरिकी राजदूत की नियुक्ति का मुद्दा उठाया। वार्नर ने कहा कि 'भारतीय दोस्तों ने कहा कि आप भारत अमेरिका के मजबूत संबंधों की बात करते हैं लेकिन आपके राजदूत यहां लंबे समय से नहीं हैं। अब स्थानीय राजनीति में भी यह मुद्दा उठाया जा रहा है। लेकिन मुझे लगता है कि अब जल्द ही एरिक गारसेट्टी की नियुक्ति हो जाएगी।' वार्नर ने कहा कि अगर गारसेट्टी की नियुक्ति होती है तो यह बढ़िया होगा लेकिन अगर नहीं हो पाती है तो हमें उनके समान ही योग्य व्यक्ति को तुरंत नियुक्त कर देना चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो यह बेहद शर्मनाक होगा। बता दें कि राष्ट्रपति जो बाइडेन ने एरिक गारसेट्टी को भारत में अमेरिका का नया राजदूत नियुक्ति किया है लेकिन रिपब्लिकन पार्टी और कुछ डेमोक्रेटिक सांसदों द्वारा गारसेट्टी के नाम का विरोध किया जा रहा है।

# कोयले का इस्तेमाल पड़ रहा भारी

## 2022 में रिकॉर्ड कार्बन उत्सर्जन, दुनियाभर में बढ़ी ऊर्जा खपत

न्यूयॉर्क, 3 मार्च (एजेंसियां)। अमेरिका से लेकर चीन तक और ब्रिटेन से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक हर कोई अपनी ऊर्जा की भूख मिटाने के लिए कोयले का इस्तेमाल कर रहा है। यह न केवल मौजूदा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी भारी पड़ रहा है। 2022 में रिकॉर्ड 36.8 गीगाटन कार्बन उत्सर्जन हुआ। साल 1900 से कार्बन उत्सर्जन का रिकॉर्ड रखना शुरू किया गया, तब से आज तक की यह सबसे बड़ी वृद्धि है।

अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) ने बृहस्पतिवार को रिपोर्ट जारी कर बताया कि उत्सर्जन में रिकॉर्ड वृद्धि के पीछे वजह वैश्विक ऊर्जा उत्पादन में 0.9 फीसदी की बढ़ोतरी है। आईईए के मुताबिक, ऊर्जा उत्पादन के लिए दुनियाभर में कोयले का इस्तेमाल बढ़ा है। आईईए ने रिपोर्ट में बताया कि यह एक दुष्चक्र सा बन गया है। साल 2022 में चरम मौसमी घटनाओं की वजह से कई जगह सूखा पड़ा और जलविद्युत परियोजनाओं से ऊर्जा उत्पादन में कमी आई। इस कमी और मांग में आई तेजी की पूर्ति के लिए जैव ईंधन और कोयले का इस्तेमाल करना पड़ा। बढ़ोतरी आपदाकारी : स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में पृथ्वी विज्ञान प्रणाली के प्रोफेसर रॉब जैक्सन कहते हैं, उत्सर्जन का बढ़ना बेहद चिंताजनक है। इसका स्थिर गति से भी बना रहना भी स्वीकार्य नहीं है, बढ़ोतरी तो आपदाकारी बात है। मानव जीवन और पृथ्वी को बचाने के लिए इसे हर साल घटाना होगा, लेकिन दुर्भाग्य से सच इसके विपरीत सामने आया है। रिपोर्ट के मुताबिक, कोयले की वजह से कार्बन उत्सर्जन में एक वर्ष में 1.6 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा वैश्विक स्तर पर हवाई यातायात बढ़ने से एटीएफ का दहन बढ़ा है, जिसके नतीजतन कार्बन उत्सर्जन में 2.5 फीसदी की वृद्धि हुई है।

# अमेरिका ने भारत के जी-20 नेतृत्व की सराहना की

## कहा- आशाजनक शुरुआत करने के लिए तैयार, हमारे संबंध परिणामी

वाशिंगटन, 3 मार्च (एजेंसियां)। भारत की अध्यक्षता में जी-20 देशों के विदेश मंत्रियों की दो दिवसीय बैठक समाप्त होने के बाद अमेरिका ने भारत के जी-20 नेतृत्व की सराहना की है। अमेरिकी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता नेड प्राइस ने गुरुवार को एक प्रेस ब्रीफिंग में कहा कि जिस तरह से उन्होंने जी20 का नेतृत्व किया है, उसके लिए हम भारत के बहुत आभारी हैं। हमारी साझेदारी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और विदेश मंत्री एस जयशंकर के बीच चर्चा का विषय थी। भारत के साथ हमारे संबंध परिणामी हैं। इस वर्ष के दौरान बहुत अधिक काम किया जाना है। लेकिन, भारत जी20 के अपने नेतृत्व के साथ बहुत ही आशाजनक शुरुआत करने जा रहा है।

प्राइस ने आगे कहा कि भारत के साथ अमेरिका की साझेदारी सबसे परिणामी संबंधों में से एक है और वे भारत के साथ मिलकर हर उस चीज पर काम कर सकते हैं जो दोनों देशों के लिए प्राथमिकता है, जिसमें आपसी समृद्धि, लोकतंत्र का समर्थन करना, जलवायु संकट को दूर करना और नियम-आधारित आदेश को बनाए रखना शामिल है। लेकिन भारत-प्रशांत के संदर्भ में संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के निर्माण और संरक्षण में मदद कर रहा है, यह एक ऐसा दृष्टिकोण जिसे हम अपने भारतीय समकक्षों के साथ साझा करते हैं।

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और विदेश मंत्री एस जयशंकर के बीच हुई बैठक के बारे में बोलते हुए नेड प्राइस ने कहा कि विदेश मंत्री और उनके भारतीय समकक्ष को भारत द्वारा जी-20 देशों के विदेश मंत्रियों की मेजबानी में अब तक किए गए जबरदस्त काम के बारे में बात करने का अवसर मिला। साथ ही वित्त मंत्रियों की मेजबानी करना और वास्तव में एक एजेंडा बनाना जो हमें उन प्रमुख मुद्दों से निपटने की अनुमति देता है जो भारत के साथ हमारे वैश्विक रणनीतिक साझेदार के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्राइस ने कहा कि जी20 अमेरिका और भारत के लिए एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि उन्होंने देखा है कि कैसे जी-20 वैश्विक कार्रवाई के लिए देशों को एक साथ ला सकता है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने जी-20 के विदेश मंत्रियों की बैठक में दो अनिवार्यताओं को ध्यान में रखते हुए भाग लिया, सबसे पहले जी20 की सफलता को देखने के लिए और यह दिखाने के लिए कि कैसे संयुक्त राज्य अमेरिका अपने सहयोगियों के साथ एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए सहयोगात्मक रूप से काम कर रहा है जो अधिक समृद्ध, टिकाऊ और यह है वैश्विक अर्थव्यवस्था के संदर्भ में अधिक समावेशी है। और यह दुनिया भर के लोगों की जरूरतों को पूरा करता है, चाहे वह भोजन हो, चाहे वह ऊर्जा हो, चाहे वह स्वास्थ्य हो, चाहे वह दुनिया भर के लोगों को उन चुनौतियों और खतरों का सामना करने में मदद कर रहा हो जिनका वे सामना कर रहे हैं और नशीले पदार्थों, बदलते जलवायु, कोविड और बीच में सब कुछ।

**यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने के लिए हम भारत के साथ मिलकर काम करने की उम्मीद करते हैं: अमेरिका**

नेड प्राइस ने कहा कि अमेरिका ने उम्मीद जताई है कि वह रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष को समाप्त करने के लिए भारत के साथ काम कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत के पास नैतिक स्पष्टता के साथ बोलने की क्षमता है।

संघर्ष को समाप्त करने के लिए भारत की भूमिका के बारे में एक सवाल के जवाब में प्राइस ने कहा कि भारत के पास वह क्षमता है जो हमने प्रधानमंत्री मोदी से जबरदस्त नैतिक स्पष्टता के साथ बोलने के रूप में देखी है। जब प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले साल कहा था यह युद्ध का युग नहीं है, तो दुनिया ने उनकी बात सुनी क्योंकि जब प्रधानमंत्री मोदी और उनके देश ने उस प्रभाव के लिए कुछ कहा यह अमेरिका के लिए सार्थक है, यह रूस के लिए सार्थक है, यह निकट और दूर के देशों के लिए सार्थक है।

उन्होंने कहा कि हम अपने भारतीय भागीदारों के साथ काम करना जारी रखेंगे, निश्चित रूप से जी-20 मेजबान के रूप में उनकी इसमें एक अनूठी भूमिका है। लेकिन, एक ऐसे देश के रूप में भी जिसके साथ हमारी वैश्विक रणनीतिक साझेदारी है और एक ऐसे देश के रूप में जिसका रूस के साथ एक अनूठा संबंध है।

उन्होंने कहा कि हमें उम्मीद है कि हम इस युद्ध को समाप्त करने के लिए भारत के साथ मिलकर काम कर सकते हैं, इस रूसी आक्रमण का अंत कर सकते हैं जो कि इसके मूल में बस सहन करने योग्य है और संयुक्त राष्ट्र चार्टर में सिद्धांतों के अनुरूप है। प्राइस ने कहा कि भारत के रूस के साथ पुराने और ऐतिहासिक संबंध हैं और वह रूस से कई तरह से जुड़ा हुआ है, लेकिन अमेरिका से नहीं है।

प्राइस ने कहा कि भारत के रूस के साथ जो संबंध हैं वह मॉस्को के साथ अमेरिका के संबंधों से अलग हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि आर्थिक, राजनीतिक और नैतिक उत्तोलन सहित विभिन्न क्षेत्रों में भारत का जबरदस्त प्रभाव है।

**किसी भी तरह की हिंसा और उग्रवाद की निंदा करते हैं: प्राइस**

पश्चिमी देशों में हिंदुओं पर हमले पर अमेरिकी विदेश विभाग के प्रवक्ता नेड प्राइस ने कहा कि हम किसी भी तरह की हिंसा और उग्रवाद की निंदा करते हैं। धार्मिक बहुलवाद हमारा प्रमुख मूल मूल्य है। हम किसी भी आंदोलन की निंदा करते हैं जो एक अलग दृष्टि के साथ कार्य करना चाहता है।

# नेपाल में सियासी अस्थिरता के लिए दोषी हैं 'बिन बुलाए मेहमान'?

काठमांडो, 3 मार्च (एजेंसियां)। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूएमएल) की नेता विमला राय पौडयाल ने इसी हफ्ते देश के विदेश मंत्री पद से इस्तीफा दिया। प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल की सरकार से यूएमएल के अलग होने की घोषणा के बाद पौडयाल ने अपना पद छोड़ा। लेकिन उसके पहले उन्होंने संसद में एक महत्त्वपूर्ण बयान दिया। उस बयान को लेकर देश के कूटनीतिक हलकों में अभी भी चर्चा जारी है।

पौडयाल कुल 42 दिन विदेश मंत्री रहीं। उन्होंने अपने बयान में आरोप लगाया कि बिन बुलाए विदेशी मेहमानों ने यहां आकर राजनीतिक अस्थिरता की जमीन तैयार की। साथ ही उन्होंने कहा कि नेपाल के राजनेताओं ने भी कूटनीतिक आचार संहिता का उल्लंघन किया है। हाल में प्रधानमंत्री दहल यूएमएल के नेतृत्व वाले गठबंधन से नाता तोड़ कर फिर से नेपाली कांग्रेस से जा मिले। समझा जाता है कि पौडयाल ने इस घटनाक्रम के लिए अमेरिकी और भारतीय कूटनीतिकों के हस्तक्षेप को जिम्मेदार ठहराया है। दहल के नेतृत्व में बीते 25 दिसंबर को यूएमएल के नेतृत्व में बने नए सात दलों के गठबंधन की सरकार बनी थी। इस सरकार के कार्यकाल में खास कर अमेरिका के कई उच्चस्तरीय अधिकारियों ने नेपाल की यात्रा की।

# ईरान में छात्राओं पर केमिकल अटैक

## पढ़ाई से रोकने के लिए सैकड़ों को दिया जहर, मांओं ने विरोध किया तो बाल पकड़कर खींचा, गिरफ्तार किया

तेहरान, 3 मार्च (एजेंसियां)। सोशल मीडिया पर ईरान के कुछ वीडियो वायरल हो रहे हैं। इनमें पुलिस महिलाओं के बाल खींचकर उन्हें गिरफ्तार करती हुई नजर आ रही है। बताया जा रहा है कि ये उन बच्चियों की मांएं हैं, जो अभी अस्पताल में भर्ती हैं।

दिसंबर 2022 से स्कूली छात्राओं के बीमार होने की खबरें सामने आ रहीं थी। कहा जा रहा है कि छात्राओं को पढ़ने से रोकने के लिए उन्हें जहर दिया जा रहा है। ऐसा करने के लिए स्कूल के पानी में केमिकल्स मिलाए जा रहे हैं। दूषित पानी पीने से सैंकड़ों छात्राओं को सांस लेने में दिक्कत आ रही है और उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया जा रहा है।

प्रदर्शन कर रहे पेरेंट्स की मांग है कि सरकार इस मामले में कार्रवाई करे। दिसंबर 2022 में छात्राओं के बीमार होने के मामले में जांच के आदेश दिए गए थे। लेकिन 3 महीने बाद भी इस मामले में किसी को पकड़ा नहीं गया। न ही कोई कार्रवाई हुई। इससे नाराज पेरेंट्स विरोध प्रदर्शन करने लगे हैं। वहीं, पुलिस फोर्स इन्हें ही गिरफ्तार कर रही है।

डिप्टी हेल्थ मिनिस्टर यूनुस पनाही ने 27 फरवरी को कहा था- घोम, बोरुजर्ड जैसे शहर में नवंबर 2022 के बाद से रेस्पिरेटरी पॉइजनिंग के सैंकड़ों मामले सामने आए हैं। उनका कहना था कि स्कूलों के पानी में कैमिकल मिलाया जा रहा है। इससे छात्राओं को सांस लेने में तकलीफ हो रही है। इनमें उल्टी, जबरदस्त बॉडी पेन और दिमागी दिक्कत भी शामिल है।

ईरान की न्यूज एजेंसी आईआरएनए के मुताबिक, डिप्टी हेल्थ मिनिस्टर यूनुस पनाही ने कहा था- स्कूलों में छात्राओं को जहर दिए जाने के मामलों से पता चलता है कि कुछ लोग लड़कियों की शिक्षा रोकना चाहते हैं और गर्ल्स स्कूल बंद करना चाहते हैं।

**महसा अमिनी की मौत के बाद बढ़े रेस्पिरेटरी पॉइजनिंग के मामले**

रिपोर्ट्स के मुताबिक, छात्राओं को जहर दिए जाने के मामले 16 सितंबर को हुई महसा अमिनी की मौत को लेकर शुरू हुए प्रदर्शन के बाद सामने आए हैं। दरअसल, 16 सितंबर को पुलिस कस्टडी में 22 साल की महसा की मौत हो गई थी। उसने हिजाब नहीं पहना था, जिसके बाद उसे गिरफ्तार किया गया था। ईरान में लड़कियों पर पाबंदियां हैं और हिजाब पहनने को लेकर सख्त कानून हैं।

महसा की मौत और हिजाब को मेंडेटरी किए जाने के विरोध में कई स्कूल गर्ल्स सड़कों पर उतरी थीं। इसके बाद से ही छात्राओं को जहर दिए जाने की खबरें सामने आने लगीं। सरकार और उसकी एजेंसियों पर जहर देने के आरोप लगे थे। इस आरोप के बाद सरकारी अफसरों ने कहा था- हम ये मानते हैं कि स्टूडेंट्स बीमार हुए हैं। इसकी वजह खराब पानी है। पानी में बैक्टीरिया पनपे और इसको पीने से स्टूडेंट्स बीमार हुए।

# आम आदमी पार्टी के नेताओं को झूठे आरोप लगाने के लिए कोर्ट ने लगायी फटकार

## भाजपा नेता को झूठे तथ्यहीन आरोप लगाकर बदनाम करने की साजिश

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। दिल्ली उच्च न्यायालय ने आम आदमी पार्टी के नेता सांसद संजय, सौरभ भारद्वाज, दिलीप पांडे एवं दुर्गेश पाठक को भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजु और उनके सुपुत्र एवं चाटर्ड एकाउंटेंट संदेश जाजु को बदनाम करने की साजिश करने के लिए फटकार लगायी। न्यायालय ने आम आदमी पार्टी के नेताओं को देश दिया कि सोशल मीडिया सहित अन्य सभी मीडिया पर श्याम जाजु और उनके पुत्र को बदनाम करने वाली पोस्ट को तत्काल हटाए। दिल्ली उच्च न्यायालय ने प्रथम दृष्टया मे माना कि श्याम जाजु एवं उनके पुत्र को बदनाम करने के लिए सोशल मीडिया पर पोस्ट किया गया था, जो दुष्प्रचार का एक हिस्सा है। दिल्ली हाई कोर्ट के न्यायाधीश नवीन चावला ने इस मामले में सुनवाई के बाद आदेश दिया कि श्याम जाजु एवं उनके पुत्र को बदनाम करने वाले सभी सोशल मीडिया पोस्ट को अविलंब हटाए। आम आदमी पार्टी के नेताओं ने श्याम जाजु को बदनाम करने का षड़यंत्र रचा था और उस अभियान के तहत बेबुनियाद आरोप लगाए, मीडिया में बयान दिए और सोशल मीडिया पर पोस्ट किये गए। श्याम जाजु ने इसके खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और झूठ आरोप लगाने के लिए मानहानि का मुकदमा दायर की। श्याम जाजू ने उन चार "आप" नेताओं पर 5 करोड़ रुपए का मानहानि का मुकदमा दायर किया है। दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश आने के बाद श्याम जाजु ने इस बारे में कहा कि अब सब कुछ साफ हो गया कि आम आदमी पार्टी के नेताओं ने मुझे और मेरे परिवार को बदनाम करने की साजिश थी। इस आदेश के बाद आम आदमी के पार्टी के ये चारो नेताओं को तथ्यहीन एवं बेबुनियाद आरोप लगाने के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मानहानि केस में 5 करोड़ रुपए की मांग की है उस राशि को प्रधानमंत्री राहत कोष में जमा कराएंगे।

आम आदमी पार्टी के नेताओं के लिए एसी घटना कोई नई बात नहीं है। इससे पहले भी कई नेताओं ने भारतीय जनता पार्टी के बड़े नेताओं को बदनाम करने के लिए बेबुनियाद, तथ्यहीन बयान दिए और कोर्ट के फटकार के माफी मांगी है। इससे पहले भारतीय जनता पार्टी वरिष्ठ नेता एवं केन्द्रीय मंत्री नितीन गडकरी, स्वर्गीय अरूण जेटली, केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, दिल्ली के उप राज्यपाल श्री विनय सक्सेना पर आम आदमी पार्टी के नेताओं ने झूठे एवं तथ्यहीन आरोप लगाए और बाद में कोर्ट के फटकार लगने पर उनसे माफी मांगी।

# जापान बोला-चीन नियम माने तो क्यूयूएडी में शामिल कर लेंगे

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। नई दिल्ली में चल रहे रायसीना डायलॉग के तहत शुक्रवार को क्यूयूएडी के विदेश मंत्रियों की मीटिंग हुई। जी-20 की बैठक के एक दिन बाद हुई इस मीटिंग में ऑस्ट्रेलिया की विदेश मंत्री पेनी वोंग ने इंडो-पैसिफिक में भारत की भूमिका को अहम बताया। उन्होंने कहा- भारत इंडो-पैसिफिक की बड़ी ताकत है। भारत के बिना इस पूरे इलाके में किसी तरह का बदलाव ला पाना मुश्किल है। वहीं जापान के विदेश मंत्री योशीमाशा हयाशी ने इस मीटिंग में कहा कि क्यूयूएडी कोई मिलिट्री ग्रुप नहीं है। हम चीन को भी इससे बाहर नहीं रखना चाहते हैं। बशर्ते वो अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन करने को तैयार हो। हयाशी ने क्यूयूएडी की तुलना इंग्लिश म्यूजिक बैंड बीटल्स से की। उन्होंने कहा कि बीटल्स के चार म्युजिशियन्स की तरह हम भी सालों तक एक साथ रहेंगे और मिलकर काम करेंगे।

**चीन नियमों का पालन करे तो हम उसे भी सदस्य बना लें**

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी क्यूयूएडी को काफी अहम बताया। उन्होंने कहा कि क्यूयूएडी 2023 में भी अपना काम बखूबी कर रहा है क्योंकि हमारी लीडरशिप पर किसी तरह का भार नहीं है। जयशंकर ने यूएन में नए बदलावों पर भारत की पुरानी मांग को दोहराया। उन्होंने कहा कि हमारी मांग का बाकी 3 देश भी समर्थन करते हैं। चारों देशों के बीच काउंटर टेररिज्म को लेकर काम करने की सहमति बनी है।

क्यूयूएडी के विदेश मंत्रियों मीटिंग के बाद घोषणा की गई है कि अब से क्यूयूएडी देश आतंकवाद के खिलाफ भी एक साथ मिलकर लड़ेंगे। इसके लिए वर्किंग ग्रुप बनाए जाएंगे। ज्वाइंट स्टेटमेंट में 26/11 और पठानकोट में हुए आतंकी हमले की निंदा भी की गई है।

अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने चीन के दबदबे को कम करने के लिए बनाए गए क्यूयूएडी की बैठक में भी यूक्रेन जंग को लेकर रूस की आलोचना की। उन्होंने कहा कि रूस जो कुछ भी यूक्रेन में कर रहा है अगर उसे रोका नहीं गया तो इससे दुनिया में गलत मैसेज जाएगा। इससे दूसरे आक्रामक देशों को लगेगा की वो भी इस तरह की हरकत कर बच सकते हैं। एंटनी के इस कमेंट के दौरान ऑस्ट्रेलिया की पेनी वोंग के अलावा विदेश मंत्री एस जयशंकर और जापान के योशीमाशा हयाशी मौजूद थे। ब्लिंकन ने कहा कि हमारा भविष्य इंडो पैसिफिक में है। हालांकि, अभी फोकस रूस की वजह से यूक्रेन पर है।

वहां जो कुछ हो रहा है वो सिर्फ यूक्रेनी और यूरोप के लोगों का मामला नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया के लिए जरूरी है। ब्लिंकन ने चीन का नाम लिए बिना कहा कि अभी क्यूयूएडी देशों के सामने चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं।

# जुनैद-नासिर हत्याकांड : भरतपुर में परिजनों से मिले मुख्यमंत्री

## 5-5 लाख रुपये आर्थिक सहायता की घोषणा

भरतपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भरतपुर के घाटमीका पहुंचकर हरियाणा में हिंसा का शिकार होकर जान गंवाने वाले जुनैद व नासिर के परिजनों से मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री मृतक जुनैद के बच्चों से भी मिले।

उन्होंने कहा कि अपहरण और नृशंस हत्या की यह घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। इस जघन्य अपराध के पीड़ितों को न्याय दिलाने के लिए राजस्थान पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। इस दौरान परिजनों ने अब तक की गई पुलिस कार्रवाई के लिए मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया और मामले में जल्द न्याय दिलवाने की मांग की।

**पीड़ित परिवारों को दी जाएगी आर्थिक सहायता**

मुख्यमंत्री ने कहा कि मानवीय दृष्टिकोण से मृतक नासिर और जुनैद की पत्नियों और उनके बच्चों को 5-5 लाख रुपये की आर्थिक सहायता दी जाएगी। साथ ही सरकार यह भी सुनिश्चित करेगी कि इन बच्चों को उचित शिक्षा उपलब्ध हो सके। उन्होंने कहा कि पीड़ित परिवार को संबल देने के लिए राज्य सरकार द्वारा सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

**हरियाणा खिाए जांच में गंभीरता**

मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा सरकार को इस मामले की जांच में ज्यादा गंभीरता दिखानी चाहिए। उन्होंने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर से बात कर बाकी आरोपियों को गिरफ्तार करने तथा पीड़ित परिवारों को जल्द से जल्द न्याय दिलाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए दोनों राज्यों में डीजीपी स्तर पर भी लगातार बातचीत हो रही है।

**केस ऑफिसर स्कीम के तहत होगी मामले की सुनवाई**

श्री गहलोत ने कहा कि पीड़ित परिवार को न्याय सुनिश्चित करने के लिए इस हृदयविदारक घटना की जांच केस ऑफिसर स्कीम के तहत की जाएगी। स्कीम के अंतर्गत एक लीगल ऑफिसर को नियुक्त कर आरोपियों को गिरफ्तार करने से लेकर चालान पेश करने और बाकी कानूनी प्रक्रिया को समयबद्ध रूप से पूरा किया जा सकेगा और इसकी प्रभावी मॉनिटरिंग हो सकेगी। उन्होंने कहा कि पुलिस द्वारा त्वरित एफआईआर दर्ज कर पहाड़ी द्वारा 50-50 हजार रुपये की सहायता राशि उपलब्ध करवाई जा चुकी है। साथ ही, दोनों परिवारों को पीड़ित प्रतिकर योजना के तहत भी अन्तरिम सहायता के रूप में 1.25 लाख रुपये प्रति परिवार उपलब्ध करवाए जाएंगे, जिसकी स्वीकृति जारी हो चुकी है। इसके अतिरिक्त विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़कर दोनों परिवारों को लाभ दिया जाएगा। इस दौरान पर्यटन मंत्री विश्वेंद्र सिंह, शिक्षा राज्यमंत्री जाहिदा खान, मेवात विकास बोर्ड के अध्यक्ष जुबेर खान, पूर्व शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह डोटासरा, मुख्य सचिव उषा शर्मा, पुलिस महानिदेशक उमेश मिश्रा, संभागीय आयुक्त सांवरमल वर्मा, एडीजी क्राइम दिनेश एमएन, आईजी गौरव श्रीवास्तव, भरतपुर कलेक्टर आलोक रंजन सहित वरिष्ठ अधिकारी एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

केस को आगे बढ़ाया गया। इस जघन्य हत्या के आरोपियों को पकड़ने के लिए पुलिस सक्रियता से कार्य कर रही है।

उल्लेखनीय है कि पीड़ित परिवारों को शिक्षा राज्य मंत्री जाहिदा खान द्वारा 5-5 लाख रुपये एवं पंचायत समिति

# वसुंधरा राजे और सतीश पूनिया दोनों को साधेंगे भाजपा प्रदेश प्रभारी अरुण सिंह

जयपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। राजस्थान में 4 मार्च को होने जा रहे दो बड़े नेताओं के शक्ति प्रदर्शन ने पार्टी पदाधिकारियों और बड़े नेताओं को भी उलझन में डाल दिया है। भाजपा के प्रदेश प्रभारी अरुण सिंह भी 4 मार्च को जहां एक ओर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधराराजे को जन्मदिन की बधाईयां देने सालासर जाएंगे। वहीं उससे पहले जयपुर में विधानसभा पर होने वाले भारतीय जनता युवा मोर्चा के विरोध प्रदर्शन में भी शामिल होंगे।

भाजपा की अधिकृत जानकारी के अनुसार प्रदेश प्रभारी एवं राज्यसभा सांसद अरुण सिंह शनिवार 4 मार्च को सुबह 8 बजे जयपुर एयरपोर्ट पहुंचेंगे। इसके बाद वे पहले पार्टी कार्यालय जाएंगे। फिर वहां से सुबह 11 बजे विधानसभा पर गहलोत सरकार के खिलाफ होने वाले युवा आक्रोश प्रदर्शन में शामिल होंगे। शाम को उनका सालासर बालाजी जाने का कार्यक्रम है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान में पेपर लीक, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को लेकर भारतीय जनता युवा मोर्चा की ओर से विधानसभा पर विरोध प्रदर्शन का बड़ा कार्यक्रम रखा गया है। इसके लिए प्रदेश पदाधिकारियों के साथ-साथ विधायकों और अधिकतर कार्यकर्ताओं को इसमें शामिल होने के लिए कहा जा रहा है।

वहीं वसुंधराराजे समर्थकों की ओर से अधिकतर कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को अधिकतम संख्या में सालासर ले जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इससे पदाधिकारी और कार्यकर्ता असमंजस में हैं कि वे आखिर किस कार्यक्रम में शामिल हों। विवाद की स्थिति से बचने के लिए कई पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने तो अपने जयपुर से बाहर जाने के कार्यक्रम बना लिए हैं। कुछ लोग बाहर के प्रवास पर निकल गए हैं।

## आग में जिंदा जल गई मां-बेटी, सिर्फ कंकाल बचा

बीकानेर, 3 मार्च (एजेंसियां)। बीकानेर के चांडासर गांव में एक दर्दनाक हादसा हो गया है। यहां 22 साल की महिला और उसकी बेटी की जिंदा जलने से मौत हो गई। महिला का पति इसे हादसा बता रहा है। वहीं, पिता का आरोप है कि बेटी और दोहिती को जिंदा जलाकर मार दिया गया है। फिलहाल एसपी तेजस्वनी गौतम मौके पर है। कंकाल बन चुके शवों का पोस्टमार्टम किया जा रहा है। घटना चांडासर गांव में गुरुवार देर रात करीब एक बजे की है। जहां एक झौपड़े में आग लग गई।

एक पक्ष का कहना है कि झौपड़े में रेंवतराम सांसी, उसकी पत्नी ममता सांसी (22) और बेटी खुशी (1) सो रहे थे। इसी दौरान आग लग गई। रेंवतराम की आंख खुल गई, वो बाहर भाग आया। इसी दौरान झौपड़े की छत्त गिर गई। इससे मां-बेटी झुलस गए। इन्हें बाहर नहीं निकाला जा सका। आग बुझाने के बाद मां-बेटी के कंकाल ही नजर आए। ममता का शरीर पूरी तरह जल गया। जो पैर को मोड़े हुए वो जमीन पर लेटी हुई थी। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सोते-सोते ही वो आग की चपेट में आ गई थी।

# गहलोत सरकार के खिलाफ प्रदर्शन के लिए ज्यादा संख्या में जयपुर पहुंचें भाजपा कार्यकर्ता : ऋषि बंसल

कुम्हेर, 3 मार्च (एजेंसियां)। भाजपा जिला अध्यक्ष ऋषि बंसल ने भरतपुर जिले के भाजपा कार्यकर्ताओं से अपील की है कि वे शनिवार 4 मार्च को ज्यादा से ज्यादा संख्या में जयपुर पहुंचें। इस दिन पेपरलीक, भ्रष्टाचार और अन्य मुद्दों को लेकर भारतीय जनता युवा मोर्चा की ओर से विधानसभा पर युवा आक्रोश के तहत विरोध प्रदर्शन किया जाएगा।

बंसल कुम्हेर दौरे पर आए हुए थे। इस दौरान उनका विधानसभा प्रत्याशी प्रताप सिंह महरावर के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ साफा एवं मालाओं से स्वागत सत्कार किया गया। ऋषि बंसल ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए 4 मार्च को विधानसभा घेराव के लिए जयपुर चलने का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि राजस्थान में वर्तमान कांग्रेस सरकार की स्थिति चरमरा गई है। बेरोजगार लोगों के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है, आए दिन पेपर लीक हो रहे हैं। युवाओं को नौकरी नहीं मिल पा रही है। राजस्थान में सड़कों की हालत खराब है किसानों की कर्ज माफी नहीं होने से उन पर कर्ज का बोझ बढ़ गया है। सरकार उनकी जमीन नीलाम कर रही है इससे किसान आत्महत्या जैसे कदम उठाने को मजबूर हो रहे हैं। पीने के पानी सिंचाई के पानी व बिजली की पर्याप्त व्यवस्था नहीं हो पा रही है। आगामी दिसंबर में होने वाले चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की स्पष्ट बहुमत की सरकार बनाएं। ताकि राजस्थान और केंद्र में दोनों ही सरकारें भारतीय जनता पार्टी की होंगी तो मिलजुल कर के लोगों के काम हो सकेंगे। राजस्थान का विकास हो सकेगा। कार्यक्रम में प्रताप सिंह महरावर के अलावा संतोष बंसल, राकेश यादव, पप्पू जैन, अशोक तिरंगा, बॉबी तिलंगा, लक्ष्मीकांत शर्मा शहर मंडल अध्यक्ष, भगवान सिंह कटारिया, डालचंद बघेल, सतीश सैनी, बबलू चौधरी शहर मंडल अध्यक्ष युवा मोर्चा, भूदेव शर्मा, बुद्धन जाटव, पप्पू प्रजापत, रमन प्रजापत, मदन प्रजापत, पूरण सैनी, कुलदीप सोलंकी, हरपाल सिंह पला, रोशन अग्रवाल, गंगा यादव और लोकेंद्र यादव समेत कई भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

प्रताप सिंह महरावर ने कहा कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया के आह्वान पर 4 मार्च को विधानसभा घेराव के लिए डीग कुम्हेर विधानसभा क्षेत्र से उनके नेतृत्व में करीब 200 भाजपा कार्यकर्ता भाग लेंगे।

# 2 करोड़ मांगने वाली निलंबित एएसपी दिव्या का रिसोर्ट गिराया

## खेती की जमीन का कॉमर्शियल उपयोग किया; आधी रात से शुरू हुई कार्रवाई

उदयपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। दो करोड़ रुपए की रिश्वत मांगने के मामले में गिरफ्तार एसओजी (अजमेर) की तत्कालीन एएसपी दिव्या मित्तल के उदयपुर स्थित आलीशान रिसोर्ट पर प्रशासन ने बुलडोजर चला दिया। अभी भी बुलडोजर से रिसोर्ट के निर्माण को ध्वस्त किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि दिव्या मित्तल ने यूआईटी से शहर से करीब 25 किमी दूर चिकलवास गांव में फॉर्म हाउस के लिए जमीन की मंजूरी ली थी, लेकिन यहां रिसोर्ट बनाकर कॉमर्शियल उपयोग किया जा रहा था। ऐसे में यूआईटी ने पहले तो नोटिस देकर जबाव मांगा, लेकिन जबाव नहीं मिला तो यूआईटी टीम गुरुवार देर रात कार्रवाई करने पहुंच गई। यूआईटी ने पहले तो यहां ठहरे टूरिस्ट को वाहन से दूसरी होटल में शिफ्ट किया। वहीं, रिसोर्ट से देर रात तक सामान को

खाली कराया गया। शुक्रवार सुबह बुलडोजर से रिसोर्ट को तोड़ने की कार्रवाई शुरू हो गई। यूआईटी ने बुधवार शाम को 24 घंटे में कार्रवाई की सूचना का नोटिस रिसोर्ट को दिया था। गुरुवार देर शाम नोटिस का समय पूरा होने पर यूआईटी की टीम यहां कार्रवाई करने पहुंच गई।

**डायवर्जन कराए बिना कॉमर्शियल उपयोग किया**

दिव्या मित्तल ने इस फार्म हाउस का भू-उपयोग(डायवर्जन) बदलवाए बिना ही आलीशान रिसोर्ट बनवा लिया था। कॉमर्शियल रूप से उपयोग होने के कारण यूआईटी ने इसे गलत माना। हरिद्वार के दवा कारोबारी से रिश्वत मांगने के मामले में एसीबी ने 16 जनवरी को दिव्या मित्तल को पकड़ा था। यह रिश्वत कारोबारी का नाम आरोपियों की सूची से हटाने के बदले में मांगी गई थी। दिव्या ने एसओजी की धौंस जमाते हुए कारोबारी को दलाल सुमित जाट से संपर्क करने को कहा था। इसके बाद जाट ही दवा कारोबारी को दिव्या के रिसोर्ट लेकर आया था, जहां कारोबारी के साथ मारपीट की बातें सामने आई थीं। एसीबी कोर्ट ने दिव्या को पहले रिमांड पर और बाद में न्यायिक अभिरक्षा में भेजने के आदेश दिए थे।

**प्रदेश में बुलडोजर की यह तीसरी कार्रवाई**

उत्तर प्रदेश सरकार की तर्ज पर राजस्थान में भी अवैध गतिविधियों में लिप्त लोगों की प्रॉपर्टी पर बुलडोजर चलाने के मामले बढ़ रहे हैं। पेपर लीक प्रकरण में भूपेंद्र सारण और सुरेश ढाका के नाम सामने आने के बाद सरकार ने जयपुर में अधिगम कोचिंग संस्थान की बिल्डिंग पर बुलडोजर चलाया था। इसके बाद सारण के घर पर भी बुलडोजर चला था। अब भ्रष्टाचार में लिप्त दिव्या के ठिकानों पर बुलडोजर चलाया जा रहा है।

**आधी जमीन एग्रीकल्चर व आधी फॉर्म हाउस की**

यूआईटी के तहसीलदार विमलेंद्रसिंह ने कहा- दिव्या और सुमित के नाम से यूआईटी ने फॉर्म हाउस बनाने की मंजूरी दी थी। तब आधी जमीन एग्रीकल्चर खाते में थी। अब यहां रिसोर्ट है। इसके लिए यूआईटी से कोई प्रक्रिया नहीं कराई गई।

# मंत्री बोले-सत्ता के शिखर पर बैठा आदमी अकेला कैसे

## कहा-अकेले तो राहुल गांधी हैं, उनके पीछे आईटी, सीबीआई, ईडी और सब नेता पड़े हुए

जयपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। विधानसभा में राजस्व के अनुदान मांगों पर बहस के जवाब के दौरान राजस्व मंत्री रामलाल जाट ने पीएम मोदी के एक अकेला सब पर भारी वाले बयान पर तंज कसते हुए कहा- अकेले मोदी नहीं,अकेले तो राहुल गांधी हैं। उनके पीछे सब पड़े हैं। सत्ता के शिखर पर बैठा आदमी अकेला कैसे हो सकता है?

रामलाल जाट ने कहा- सत्ता के शिखर पर बैठा हुआ आदमी कह रहा है कि मैं अकेला, सब पर भारी। वो अकेला कहां है? ईडी, इनकम टैक्स, सीबीआई उनके साथ। आरएसएस और विश्व हिंदू परिषद उनके साथ। पूरी कार्पोरेट लॉबी और अडाणी उनके साथ हैं। रामलाल जाट गुरुवार रात विधानसभा में राजस्व की अनुदान मांगों की बहस के जवाब में बोल रहे थे। रामलाल ने कहा- वास्तव में अकेला तो राहुल गांधी है। उनके पीछे इनकम टैक्स, सीबीआई, सारे नेता पीछे पड़े हैं।

अकेला तो वो है, जिसके पीछे सब पड़े हैं। वो नहीं है, जो सत्ता के शिखर पर बैठा है। राहुल गांधी ने तमाम शक्तियों का मुकाबला करते हुए कन्याकुमारी से कश्मीर तक यात्रा निकाली। इस यात्रा में गरीब, दलित, किसान, मजदूर सहित सब लोग जुड़े। व्यापारी भी जुड़े, आरबीआई के पूर्व गवर्नर भी जुड़े। रामलाल जाट ने अडाणी ग्रुप को राजस्थान में अलॉट की गई जमीन को लेकर पिछले दिनों उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ के तंज कसने पर जवाब दिया। रामलाल ने बीजेपी और कांग्रेस राज में जमीन आवंटन के आंकड़े गिनाते हुए कहा- बीजेपी राज की तुलना में कांग्रेस राज में सरकारी विभागों को ज्यादा जमीन आवंटित की है। निजी क्षेत्र को भी जमीन दी है। उद्योगपतियों को जमीन अलॉटमेंट हमने भी किया। आपने भी किया, लेकिन बेवजह आरोप लगाना गलत है।

**राठौड़ बोले-अब तो अडाणी से दोस्ती हो गई होगी**

रामलाल पर तंज कसते हुए उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा- अब तो अडाणी से मित्रता हो गई होगी। अडाणी से कोई दुश्मनी नहीं होगी। अडाणी से दोस्ती हो गई। यह तो सदन में बोल दीजिए। नेता आरोप ना लगाएं अडाणी से मित्रता हो गई यह तो रिकॉर्ड पर ले आओ।

**पॉलिसी सबके लिए हो एक के लिए नहीं**

रामलाल जाट ने कहा- किसी उद्योगपति के खिलाफ नहीं है। हम तो निवेश लाने के लिए पूरी दुनिया में घूमकर उद्योगपतियों को बुलाया था। झगड़ा उस चीज का है कि हमने जो पॉलिसी बनाई। उसमें सब लोग हैं। आप लोगों ने पॉलिसी बनाई वह केवल एक ही आए उस पर हैं। हमारा झगड़ा केवल एक को फायदा देने से है।

# 50 करोड़ की बिजली 125 करोड़ में खरीदी

## 12 रुपए प्रति यूनिट का रेट; फिर भी कर रहे कटौती, 50 लाख कंज्यूमर परेशान

जयपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। प्रदेश में रबी फसल की सिंचाई व तापमान बढ़ने से ज्यादा बिजली की डिमांड का सरकारी बिजली कंपनियों के इंजीनियर अनुमान ही नहीं लगा पाए। नतीजा, पिछले तीन दिन में पावर एक्सचेंज से करीब दोगुनी रेट पर बिजली खरीदने के बावजूद छोटे कस्बों व गांवों में 50 लाख से ज्यादा कनेक्शनों को बिजली कटौती की मार झेलनी पड़ी।

लगातार बढ़ रही बिजली की डिमांड

राजस्थान ऊर्जा विकास निगम ने जयपुर, जोधपुर व अजमेर डिस्कॉम के लिए पिछले चार दिन में 125 करोड़ की बिजली खरीदनी पड़ी। रोजाना औसतन 400 से 500 लाख यूनिट बिजली खरीद रहे है। बिजली खरीद के दीर्घकालीन एग्रीमेंट नहीं होने की वजह से महंगी बिजली खरीदनी पड़ी। प्रदेश में बिजली की डिमांड 15600 मेगावाट से ज्यादा है। वहीं रोजाना 3014 लाख यूनिट बिजली की सप्लाई करनी पड़ रही है। इसमें से पावर एक्सचेंज से मंगवार को औसतन 8 रु. प्रति यूनिट की रेट से 498 लाख यूनिट बिजली खरीदनी पड़ी।

**हर साल महंगी रेट पर खरीदते हैं**

ऊर्जा विकास निगम ने 2019-20 में राज्य के बाहर की विद्युत उत्पादन कंपनियों से 12,470 करोड़ और वर्ष 2020-21 में 13,793 करोड़ की मंहगी बिजली 5.70 रु. से लेकर 17 रु. प्रति यूनिट तक खरीदी है। ऐसे में हर साल 10 से 13 हजार करोड़ की बिजली खरीदनी पड़ रही है। बिजली उत्पादन निगम की 23 यूनिट की क्षमता 7580 मेगावाट है। इसमें से सूरतगढ़ थर्मल पावर प्लांट की 250-250 मेगावाट की दो यूनिट बंद हैं। सूरतगढ, छबड़ा व अदाणी पावर की 660-660 मेगावाट की यूनिट से बिजली उत्पादन बंद है। 15,600 मेगावाट से ज्यादा है प्रदेश में बिजली डिमांड। 3,014 लाख यूनिट बिजली की सप्लाई रोजाना हो रही।

**पहले सर्दी का बहाना, अब गर्मी से समस्या**

ऊर्जा विकास निगम ने 22 दिसंबर को ग्रामीण, शहरी व औद्योगिक क्षेत्रों में एक से तीन घंटे की बिजली कटौती करने का आदेश जारी किया। उस समय इंजीनियरों की दलील थी कि उत्तरी भारत में ठंड की वजह से हाइड्रो पावर प्लांट से बिजली उत्पादन कम हो रहा है। इस कारण एनर्जी एक्सचेंज में 12 रुपए प्रति यूनिट के अधिकतम रेट पर भी बिजली नहीं मिल रही है। लेकिन ढाई महीने बाद भी इस आदेश को वापस नहीं लिया। अब इंजीनियरों का कहना है कि गर्मी व तापमान बढ़ने के कारण बिजली की डिमांड बढ़ गई है। ऊर्जा विकास निगम के अधीक्षण अभियंता अशोक वैद्य का कहना है कि बिजली उपलब्धता में बुधवार से सुधार हुआ है। कस्बों व गांवों में बुधवार को बिजली कटौती नहीं की गई है। उत्पादन निगम व अदाणी कंपनी के पावर प्लांट से भी बिजली मिलने लगी है।

# 9 मिलावटखोरों को मिली सजा

चित्तौडगढ़, 3 मार्च (एजेंसियां)। जिले में मिलावट करने वालों के खिलाफ कार्यवाही करते हुए न्याय निर्णयन अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट ने 9 फर्मों पर 6 लाख 30 हजार रूपए का जुर्माना लगाया है।

अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट चित्तौड़गढ़ ने फैसले में कहा है कि नियत समयावधि में जुर्माना राशि जमा नहीं कराने की स्थिति में खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 की धारा 96 के तहत इन पर प्रभावी कार्यवाही की जाएगी। भविष्य में उक्त सभी संस्थानों को खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 की पालना सुनिश्चित करने हेतु भी पाबंद किया गया है।

*शादी में चोरी करने वाले अंतरराज्यीय गैंग का खुलासा*

# मध्य प्रदेश में 22 दिन डेरा डाल पुलिस ने दो को पकड़ा

कोटा, 3 मार्च (एजेंसियां)। बूंदी शहर के शीश महल होटल में आठ फरवरी को आयोजित शादी समारोह से दुल्हन के जेवर चोरी की वारदात का पुलिस ने पर्दाफाश कर दिया। पुलिस ने मध्य प्रदेश से अंतरराज्यीय शातिर चोर गैंग के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है। चोरी हुए आभूषण भी बरामद हुए हैं।

जिला पुलिस अधीक्षक बूंदी जय यादव ने बताया कि शीशमहल होटल में शादी समारोह के दौरान हुई चोरी की घटना का पर्दाफाश करने के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक किशोरी लाल के निर्देशन में एक पुलिस टीम का गठन किया गया। पुलिस टीम ने कार्रवाई करते

हुए अपराधियों को चिन्हित कर मध्यप्रदेश में डेरा डाला। टीम ने लगातार मध्य प्रदेश में रहकर मुखबिर मामुर तकनीकि से चोरी में प्रयुक्त कार के मालिक का पता लगाकर आरोपी को गिरफ्तार कर गैंग का पर्दाफाश किया। प्रार्थी भंवर सिंह निवासी सरसुन्दा तह. फूलिया जिला भीलवाडा ने रिपोर्ट दी थी कि में मेरी बहन राजभंवर कंवर निवासी उलेडा तह जिला बूंदी की लड़की एकता कंवर का मायरा (भात) लेकर दिनांक आठ फरवरी को परिवार सहित शीशमहल होटल पहुंचे। उस समय अगवानी का कार्यक्रम चल रहा था। इसी बीच हमारे भात में लाए हुए सोने के सामान और नकदी सोने के सामानों में दो बाजू की जोड़ी करीबन पांच तोला, दो बगडा ढाई तोला, दो पूंच की जोड़ी तीन तोला, नकद रुपये 15000 रुपये शीशमहल होटल के रूम में रखे हुए थे। सोना करीबन 16-17 तोला था हमारी अगवानी के कार्यक्रम के बीच में होटल शीशमहल के रूम में रखे हुए सोने के सामान और नकदी अज्ञात व्यक्ति चुरा ले गए। होटल के सीसीटीवी कैमरे में भी आरोपी अज्ञात व्यक्ति नजर आ रहा है।

# 'हमारी आवाज नहीं सुनी जाती है तो हमें वीरांगना क्यों कहते हैं'

जयपुर, 3 मार्च (एजेंसियां)। पुलवामा में हुए आतंकी हमले को 4 साल हो गए हैं। 14 फरवरी 2019 को जैश-ए-मोहम्मद के एक आतंकी ने पुलवामा में सीपीआरएफ के जवानों को लेकर जा रहे एक वाहन को टक्कर मार दी थी। इस हमले में 40 जवान शहीद हो गए थे।

भारत ने इस हमले बदला लेते हुए पाकिस्तान पर बालाकोट एयरस्ट्राइक की थी। वहीं, चार साल बाद भी हमले में जान गंवाने वाले राजस्थान के तीन जवानों की पत्नियां सरकार की उदासीनता के खिलाफ धरने पर बैठी हैं।

**सरकार हमारी बात नहीं सुनती- शहीद जवानों की विधवाएं**

जयपुर में पुलिस कमिश्नरेट से कुछ ही दूरी पर शहीद स्मारक के एक कोने में मंजू लांबा और दो अन्य महिलाएं विरोध-प्रदर्शन के लिए बैठी हैं, जहां उन्होंने अपने आंसू पोंछते हुए धरना देने के कारणों के बारे में बताया। फरवरी 2019 में पुलवामा हमले में शहीद हुए 40 सीआरपीएफ जवानों में से एक रोहिताश लांबा की पत्नी मंजू कहती हैं, "जब मेरे पति शहीद हुए, तो जो मंत्री हमसे मिलने आए मीडिया, लोगों ने मेरे पति की प्रशंसा की। हमने सोचा कि हम अपने बच्चों को भी देश के लिए लड़ने भेजेंगे लेकिन हम हाथ जोड़कर कहते हैं कि हम अपने बच्चों को नहीं भेजेंगे।" उन्होंने कहा, "आज कोई साथ नहीं है हमारे, सरकार हमारी बात नहीं सुनती बल्कि हमें तितर-बितर करने के लिए पुलिस का इस्तेमाल करती है। जब हमारी आवाज नहीं सुनी जाती है तो वे हमें वीरांगना क्यों कहते हैं?" राजस्थान के शहीद सीआरपीएफ जवानों रोहिताश लांबा, मराज मीणा और जीत राम गुर्जर की पत्नियां मंजू, मधुबाला मीना और सुंदरी गुर्जर शहीद स्मारक पर अपनी बात रखने के लिए धरना दे रही हैं।

# अतीक के फाइनेंसर माशूक के घर चला बुलडोजर

## मकान की कीमत करीब 3 करोड़, नक्शा रिजेक्ट होने के बाद भी निर्माण कराया

प्रयागराज, 3 मार्च (एजेंसियां)। प्रयागराज में उमेश पाल हत्याकांड के आरोपियों और उनके करीबियों के मकानों पर अवैध निर्माण हटाने की कार्रवाई जारी है। शुक्रवार दोपहर साढ़े 3 बजे पीडीए (प्रयागराज विकास प्राधिकरण) की टीम असरौली इलाके में 3 जेसीबी और एक पोकलेन मशीन लेकर पहुंची। उसके बाद माफिया अतीक अहमद के फाइनेंसर माशूक प्रधान उर्फ माशूकउद्दीन के घर को गिरा दिया। यह कार्रवाई शाम साढ़े 6 बजे तक चली।

जिस मकान को गिराया गया है, उसकी कीमत करीब 3 करोड़ रुपये बताई जा रही है। माशूक सीधे तौर पर उमेश पाल हत्याकांड से नहीं जुड़ा है, लेकिन उसके खिलाफ 40 से ज्यादा केस दर्ज हैं।

**बिना नक्शा पास कराए बनाया था मकान**

यह मकान जहां बना था, वहां से एयरफोर्स का ट्रांसमीटर एरिया शुरू हो जाता है। इसके निर्माण पर एयरफोर्स ने आपत्ति जताई थी। नक्शा भी पास नहीं हुआ था। इसके बावजूद माशूकउद्दीन ने दबंगई के दम पर यह घर बना लिया था।

**अतीक का फाइनेंसर है माशूक प्रधान**

माशूक प्रधान अतीक का फाइनेंसर है। उसका अहमदपुर में जीटी रोड पर आलीशान मकान है। इस क्षेत्र में प्रधान का दबदबा है। जमीन-जायदाद के सौदों में उसकी दखल रहती है। प्रधान बनने के बाद 2021 में उसने बमरौली स्थित भारती बालिका माध्यमिक विद्यालय के पीछे टीले के नीचे की मिट्टी पूरी खुदवा दी थी। इसके बाद भवन का एक हिस्सा भरभरा कर गिर गया था। बच्चे इसमें बाल-बाल बचे थे।

तिवारी का तालाब में स्थित इस स्कूल को 1964-65 में ग्राम सभा की जमीन पर टीले पर बनाया गया था। प्रिंसिपल ने इसकी शिकायत की, तो उन्हें जान से मारने की धमकी दी थी। इस मामले की उच्चाधिकारियों से शिकायत के बाद भी माशूक पर कोई कार्रवाई नहीं हुई थी।

**अतीक के गुर्गों की 40 संपत्तियों की हुई पहचान**

पीडीए ने शहर में अतीक अहमद, उसके गुर्गों और शूटरों की 40 संपत्तियों की पहचान की है। इन अवैध संपत्तियों के खिलाफ बुलडोजर एक्शन होना है। इसी कड़ी में आज माशूक प्रधान की संपत्ति पर बुलडोजर चला है।

**बुलडोजर चलाने पर भड़के सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क**

बुलडोजर की कार्रवाई पर मुरादाबाद के संभल से सपा सांसद डॉ. शफीकुर्रहमान बर्क ने नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा, यह जुल्म है, एक्शन नहीं। मुसलमानों के साथ जुल्म हो रहा है और एक दिन तुम भी इसी जद में आ जाओगे, जब इस ओहदे पर नहीं रहोगे। सांसद ने कहा कि हिंदुस्तान में जब कानून लागू है, तो फिर सरकार कानून के हिसाब से काम क्यों नहीं कर रही। बर्क ने कहा कि योगी सरकार ने कहा था कि माफिया को मिटा दूंगा, लेकिन पहले आप माफिया को मिटाने की बजाय सरकार का निजाम ठीक कीजिए।

# जुनैद-नासिर मर्डर, नेपाल भागा मुख्य आरोपी मोनू मानेसर

चंडीगढ़, 3 मार्च (एजेंसियां)। नासिर-जुनैद हत्याकांड से सुर्खियों में आया मोनू मानेसर हरियाणा से नेपाल भाग गया है। राजस्थान पुलिस ने इसका खुलासा किया है। उन्होंने मोनू मानेसर की फोन इंटरसेप्ट की है। जिसमें पैसों का लेन-देन हुआ है। सूत्रों के मुताबिक, मोनू ने अपने खर्चे के लिए पैसे मंगवाए। वहीं उसके बाकी साथी उतर प्रदेश में अंडरग्राउंड हैं।

राजस्थान पुलिस ने इस बारे में यह इनपुट हरियाणा पुलिस को भेजा है। सूत्रों के मुताबिक राजस्थान पुलिस इन सबूतों के साथ हरियाणा पुलिस पर सवाल उठाए कि मोनू मानेसर समेत बाकी आरोपियों की फरारी में हरियाणा पुलिस ने संरक्षण दिया है। इसको लेकर अब दोनों राज्यों की पुलिस फिर आमने-सामने हो गई है।

इससे पहले नूंह में गौरक्षक की गर्भवती पत्नी को पीटने पर राजस्थान पुलिस पर हरियाणा में केस दर्ज हुआ। इस मारपीट से 9 माह की गर्भवती के पेट से मरा बच्चा पैदा हुआ था।

# मदरसा में नाबालिग को 23 सेकेंड में 26 डंडे

## पाठ याद नहीं करने पर टीचर ने बेरहमी से पीटा

मुंबई, 3 मार्च (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में एक निजी मदरसे में नाबालिग छात्र को टीचर द्वारा बुरी तरह पीटने का मामला सामने आया है। छात्र की गलती सिर्फ इतनी थी कि उसे टीचर ने जो पाठ याद करने दिया था, उसे वह ठीक से सुना नहीं सका। मामला नवंबर 2022 का है, जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

वीडियो में देखा जा सकता है कि टीचर ने छात्र को 23 सेकेंड में 26 डंडे मारे। उधर, मदरसे के ट्रस्टी ने टीचर के खिलाफ केस दर्ज कराया है। टीचर घटना के बाद से लापता है।

**छात्र के पाठ न याद करने से नाराज था टीचर**

दरअसल, 24 नवंबर 2022 की सुबह 14 साल का एक छात्र हर रोज की तरह भिवंडी इलाके के दीनी मदरसे में पहुंचा था। यहां गुजरात के रहने वाले 32 साल के फहाद भगत नूरी बच्चों को तालीम देते थे। टीचर ने एक दिन पहले छात्र को एक पाठ याद करने को दिया था। जब नाबालिग मदरसा पहुंचा तो टीचर ने उससे पाठ सुनाने को कहा, लेकिन छात्र पाठ सही से नहीं सुना सका। इससे गुस्साए टीचर ने स्टूडेंट की डंडे से बुरी तरह पिटाई कर दी।

**मदरसे के ट्रस्टी ने टीचर के खिलाफ केस दर्ज कराया**

घटना का एक वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिसमें साफ देखा जा सकता है कि टीचर डंडे से छात्र को बुरी तरह पीट रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि टीचर ने छात्र को 23 सेकेंड में 26 डंडे मारे। वीडियो सामने आने के बाद दीनी मदरसे के ट्रस्टी ने 28 फरवरी 2023 को निजामपुरा पुलिस स्टेशन में टीचर के खिलाफ केस दर्ज कराया।

**एफआईआर दर्ज होने के बाद से आरोपी फरार**

निजामपुरा पुलिस ने बताया कि तहरीर के आधार पर केस दर्ज कर लिया गया है। हालांकि केस दर्ज होने के बाद से आरोपी फरार है। पुलिस टीम उसकी तलाश में जुटी है। अभी तक इस मामले में कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। एफआईआर के अनुसार मदरसा दारुल उलूम हसनैन करीमन से जुड़ा हुआ है।

# स्कूली बच्चों में पुरस्कारों का वितरण किया गया

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। लक्ष्य फाउंडेशन द्वारा मंडल परिषद् प्राइमरी, स्टालिननगर, मदीनागुड़ा, मियांपुर सेरिलिंगमपल्ली मंडल में आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार का वितरण किया गया। संस्थापक सुनील कुमार द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार प्रतियोगिता में इंग्लिश तेलुगु सुलेख, कला सामाजिक ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। सुनील कुमार ने प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों में निहित क्षमता का विकसित करना है। उन्होंने ने कहा कि अब हमें यह सुनिश्चित करना है कि हमारे गली, मोहल्ले, गांव का प्रत्येक बच्चा स्कुल जाये क्योंकि शिक्षा पर सबका अधिकार है। कार्यक्रम में एस. भैरव, कोऑर्डिनेटर लक्ष्य फाउंडेशन ने कहा कि प्रतियोगिता से प्रतिभा में निखार आता है।

# भाकृअनुप-भारतीय श्रीअन्न (कदन्न) अनुसंधान संस्थान द्वारा मलेट वॉकथॉन

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। भाकृअनुप-भारतीय श्रीअन्न (मिलेट) अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय श्रीअन्न (मिलेट) वर्ष 2023 की सफलता की ओर बढ़ते हुए श्रीअन्न पदयात्रा का आयोजन किया गया। श्रीअन्न पदयात्रा के शुभारंभ स्थल अर्थात प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय के प्रेक्षागृह (ऑडिटोरियम) में मंच पर डॉ. (श्रीमती) सी. तारा सत्यवती, निदेशक, भाश्रीअनुसं, डॉ. बी दयाकर राव, प्रधान वैज्ञानिक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, न्यूट्रीहब, डॉ. सत्यनारायण, डीन, प्रोजतेराकृविवि तथा जीवी सुब्बारेड्डी, कोरोमंडल फर्टलाइजर्स उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. सत्यनारायण ने मंच पर एवं सभा में उपस्थित लोगों का स्वागत किया। तत्पश्चात डॉ. दयाकर राव ने अपने संबोधन में श्रीअन्न को अपने भोजन में शामिल करने का आग्रह किया। डॉ. तारा सत्यवती ने अपने संबोधन में श्रीअन्न के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्रीअन्न में शामिल ज्वार, बाजरा, रागी आदि अनाजों की विविध पोषण विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए, उन्हें अपनाने के लिए कहा। श्री सुब्बा रेड्डी ने भी वर्तमान समय में श्रीअन्न की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात डॉ. तारा सत्यवती के द्वारा झंडा दिखाकर श्रीअन्न पदयात्रा का शुभारंभ किया गया। कुल 3 किलोमीटर की पदयात्रा के बाद भाकृअनुप - भारतीय श्रीअन्न (मिलेट) अनुसंधान संस्थान में इसका समापन हुआ। समापन सभा में मंच पर डॉ. तारा सत्यवती, डॉ. दयाकर राव के अलावा समीपस्थ संस्थानों की वरिष्ठ प्रतिनिधि उपस्थित थे एवं सभी अधिकारीगण नेन्होंनेत्यवती, डॉ. दयाकर राव के अलावा समीपस्थ संस्थानों की वरिष्ठ प्रतिनिधि उपस्थित थे। श्रीअन्न पदयात्रा में भाश्रीअनुसं एवं प्रोजतेराकृविवि के अलावा अन्य समीपस्थ संस्थान के पदाधिकारीगण शामिल 1000 से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। संपूर्ण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. सी (श्रीमती) तारा सत्यवती, निदेशक के मार्गदर्शन में, डॉ. बी दयाकर राव, प्रधान वैज्ञानिक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पोषण केंद्र, डॉ. वी रवि कुमार, तकनीकी अधिकारी तथा डॉ महेश कुमार, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा), भाश्रीअनुसं, हैदराबाद के द्वारा किया गया।

# बैंकिंग में भाषा की भूमिका अहम होती : दीपक एन.एस.

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा अपने स्टाफ के लिए आयोजित कंप्यूटर आधारित दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए दीपक एन.एस., सहायक महाप्रबंधक एवं प्रमुख, यूनियन लर्निंग अकादमी ने कहा कि बैंकिंग में जैसे पैसों का आदान-प्रदान महत्वपूर्ण होता है, वैसे ही ग्राहक के साथ शब्दों का आदान प्रदान भी उत्तम ग्राहक सेवा की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है।

उन्होंने आह्वान किया कि बोलचाल और लिखित भाषा में उत्कृष्टता लाने का हमें प्रयास करना चाहिए।

उपासना सिरसैया, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यशाला की रूप रेखा पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर बोलते हुए देवकांत पवार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि हिन्दी में कार्यालय का काम करने के लिए बेहतरीन तकनीकी साधन अब सबके पास उपलब्ध हो गए हैं और इनका उपयोग करके तेजी से हिन्दी में कार्य सम्भव है। राजभाषा अधिकारी साहेब राव कांबले, अंगेश कुमार, स्नेहा साव और स्नेहा सिंह ने विविध विषयों पर व्याख्यान दिया और कर्मचारियों को हिन्दी में कंप्यूटर पर कार्य करने का व्यवहारिक ज्ञान दिया गया।

कीसरा मण्डल, चिरियाल, बंडलागडा स्थित श्री आईजी सेवा संघ में पूजा-पाठ करते हुए अध्यक्ष मोतीलालजी काग, सचिव मंगलाराम पंवार, भगाराम मूलेवा, ओमप्रकाश परिहार, चेनाराम परिहार, भंवरलाल मूलेवा, आनन्द राठौड, ओमप्रकाश काग, नारायणलाल भागतेचा, पंडित सत्यनारायण शर्मा एवं अन्य।

रंगभरनी एकादशी पर श्री खाटू नरेश कीर्तन मंडल, दिलसुखनगर द्वारा काचीगुडा में श्री श्याम बाबा के सभी निशान यात्रा भक्तों के स्वागत मंच पर उपस्थित तेलंगाना बजरंग सेना के उपाध्यक्ष एनआर लक्ष्मण राव, नगर सचिव सूर्य शुक्ला, नंदू अग्रवाल, रमेश अग्रवाल, संजय व अन्य।

# जन सेवा संघ द्वारा होली मिलन समारोह कल

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। जन सेवा संघ द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन रविवार को शाम 5 बजे से 10 बजे तक निः शुल्क मनाया जायेगा। जन सेवा संघ के महासचिव सुधीर जायसवाल द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इस अवसर पर भोजपुरी फ़िल्म फरिश्ता के मशहूर गायक बबुवा विकास एवं गायक भोलू भारद्वाज अपनी टीम के साथ गीत, संगीत और नृत्य का जलवा बिखेरकर होली के आगमन में चार -चाँद लगा देंगें। अतः सभी से आग्रह है कि सपरिवार पधारकर इस विशेष समारोह का आनंद उठाते हुवे अपनी सांस्कृतिक विरासत को क़ायम रखें।

# श्री श्याम निशान यात्रा का भव्य स्वागत

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। श्री श्याम सत्संग समिति द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली श्री श्याम निशान यात्रा का भव्य स्वागत अग्रवाल समाज मलकपेट शाखा द्वारा मलकपेट स्थित यशोदा हॉस्पिटल के सामने किया गया। यात्रा में जाने वाले सभी भक्तों पर शाखा सदस्यों द्वारा पुष्प वर्षा की गई और बड़े हर्षोल्लास से श्याम गीत गाए गए। अवसर पर केंद्रीय समिति सदस्य महावीर प्रसाद अग्रवाल, उपाध्यक्ष सतनारायण मोदी, मानद मंत्री पंकज संघी, सह मंत्री सुरेश गोयल, कोषाध्यक्ष दिनेश गोयल, श्याम सुंदर अग्रवाल, हरिश्चंद्र बजाज, सतीश बंसल, चंद्र मोहन अग्रवाल, सुनील रुंगटा, प्रदीप बंसल, अशोक अग्रवाल, शैलेश अग्रवाल तथा युवा मोर्चा से नितेश अग्रवाल नितिन अग्रवाल एवं महिलाए आदि उपस्थित थे।

## प्रथम पृष्ठ का शेष भाग

### सोनिया गांधी दिल्ली ...

उस समय सोनिया गांधी को सांस लेने में दिक्कत हो रही थी, जिसके कारण उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उस समय भी सोनिया गांधी को चेस्ट मेडिसिन विभाग में भर्ती कराया गया था और डॉक्टर अजय स्वरूप की निगरानी में उनकी उनका इलाज चला था।

पिछली बार जब सोनिया गांधी की तबीयत खराब हुई थी, उस दौरान राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की भारत जोड़ो यात्रा चल रही थी। तब उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाने के लिए प्रियंका गांधी भी वहां मौजूद थी। इससे पहले पिछले साल जून में भी सोनिया गांधी को कोरोना संक्रमण के चलते अस्पताल में भर्ती कराया गया था। वह कई दिनों तक अस्पताल में भर्ती थीं।

### भाजपा विधायक का ...

प्रशांत के पिता मदल वीरुपक्षप्पा कर्नाटक के दावणगेरे जिले के चन्नागिरी से विधायक हैं। उन्होंने कहा, मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है। इसकी जानकारी मुझे मीडिया के जरिए मिली। इस बारे में मैंने अपने बेटे से बात नहीं की है, क्योंकि वह अब लोकायुक्त की कस्टडी में है। मैं किसी टेंडर में शामिल नहीं हूं।

### विजय माल्या की ...

याचिका पर कार्यवाही पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। मुंबई की विशेष अदालत ने पीएमएलए अधिनियम के तहत पांच जनवरी 2019 को विजय माल्या को भगोड़ा घोषित किया था।

अधिनियम के प्रावधानों के तहत एक बार किसी व्यक्ति को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किए जाने के बाद अभियोजन एजेंसी के पास उसकी संपत्ति जब्त करने की शक्तियां होती हैं। माल्या मार्च 2019 में ब्रिटेन भाग गया था। वह किंगफिशर एयरलाइंस (केएफए) को कई बैंकों की ओर से दिए गए 9000 करोड़ रुपये की अदायगी में चूक से जुड़े मामले में भारत में वांछित है।

### इसी वजह से ...

फिलहाल वह बेंगलुरू वाटर सप्लाई और सीवरेज बोर्ड के चीफ अकाउंटेंट पद पर तैनात हैं। केएसडीएल के कार्यालय में ही लोकायुक्त की एंटी करप्शन विंग ने पारसनाथ मदल को 40 लाख की रिश्वत लेते पकड़ा है। जांच में कार्यालय से 2.2 करोड़ रुपये से भरे बैग भी मिले, जिन्हें जब्त कर लिया गया। इसके बाद पारसनाथ के घर पर भी छापेमारी की गई, जहां से 6.10 करोड़ रुपये बरामद किए गए। एफआईआर दर्ज की गई है। कर्नाटक के लोकायुक्त बीएस पाटिल ने यह जानकारी दी।

### दुनिया के सामने ...

एक रिपोर्ट के मुताबिक, चीन ने कुछ दिन पहले रूस-यूक्रेन जंग खत्म कराने के लिए एक प्रस्ताव रखा था। इसमें चार पॉइंट थे। हैरानी की बात यह है कि चार में से तीन पॉइंट ऐसे थे, जिनसे लगता था कि जंग रूस ने नहीं, बल्कि यूक्रेन ने शुरू की है। सिर्फ एक पॉइंट में जंग खत्म करने के लिए रूस से अपील की गई है। कुल मिलाकर चीन ने डिप्लोमैटिक एडवांटेज हासिल करने के लिए ये चाल चली। यही वजह कि इस प्रस्ताव को किसी ने गंभीरता से नहीं लिया।

जंग शुरू होने के बाद भारत और चीन ने रूस से सबसे ज्यादा क्रूड ऑयल इम्पोर्ट किया। दोनों ही देशों ने इसे रिफाइन करके एक्सपोर्ट भी किया और इस तरह अपना विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा लिया। अमेरिका और उसके सहयोगी देश इस पर अब चुप्पी साध चुके हैं। इसकी वजह यह है कि रूस-यूक्रेन जंग तो शायद जल्द खत्म हो जाए, लेकिन अमेरिका को एशिया के अलावा दुनिया के कई हिस्सों में चीन से मुकाबला करने के लिए भारत की जरूरत पड़ेगी, इस वजह से वो भारत को नाराज नहीं करना चाहता।

'ब्लूमबर्ग' ने जनवरी में पब्लिश एक रिपोर्ट में कहा था, कोविड के बाद दुनिया का हर देश ट्रेड बैलेंस रखना चाहता है। भारत और चीन के बीच करीब 115 अरब डॉलर का बाइलेटरल ट्रेड है। इसका 60 प्रतिशत हिस्सा चीन के फेवर में है। जाहिर है, एलएसी पर तनाव के बावजूद चीन किसी भी सूरत में भारत जैसा बड़ा मार्केट खोने का जोखिम नहीं उठा सकता।

दूसरी तरफ, भारत है। उसका डोमेस्टिक मार्केट और मिडिल क्लास ही इतना बड़ा है कि उसे बहुत ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। कोविड-19 के करीब तीन साल के दौर में यह साफ तौर पर नजर भी आया। जहां दुनिया की बड़ी इकोनॉमीज जबरदस्त प्रेशर में थीं तो भारत की ग्रोथ रेट पर ज्यादा असर नहीं पड़ा। दुनिया के कई एक्सपर्ट और रेटिंग एजेंसी पहले ही कह चुकी हैं कि इस साल भारत की ग्रोथ रेट 6.7 प्रतिशत रहेगी, ये दुनिया में सबसे ज्यादा है।

चीन, ईरान और नॉर्थ कोरिया। ये तीन देश ऐसे हैं, जिन्होंने जंग के दौरान सीधे तौर पर रूस को मदद दी। वेस्टर्न वर्ल्ड इससे काफी नाराज है। यही वजह है कि रूस पर तो सख्त प्रतिबंध लगाए ही गए, चीन और नॉर्थ कोरिया को भी इसकी कीमत चुकानी पड़ रही है। मसलन, चीन की कुछ कंपनियों पर अमेरिका ने जासूसी का आरोप लगाकर उन्हें ब्लैक लिस्ट कर दिया। नॉर्थ कोरिया और ईरान पर तो पहले ही सख्त पाबंदियां हैं।

### मनीष सिसोदिया ने ...

28 फरवरी की शाम 4 बजे सीजेआई जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और जस्टिस पीएस नरसिम्हा की बेंच ने मामले की सुनवाई की। न्यूज एजेंसी के मुताबिक अदालत ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि आप हाईकोर्ट जाइए, सीधे हमारे यहां आने का क्या मतलब है। हम एक गलत परंपरा को बढ़ावा नहीं दे सकते। उधर, सिसोदिया की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने और पहले से ही जेल में बंद सत्येंद्र जैन ने मंत्री पदों से इस्तीफा दे दिया था।

दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने आतिशी मार्लेना और सौरभ भारद्वाज का नाम एलजी के पास मंजूरी के लिए भेजा है। अभी सिसोदिया और जैन के विभाग की जिम्मेदारी कैलाश गहलोत और राजकुमार आनंद के पास रहेगी। इस बारे में गजट नोटिफिकेशन भी जारी हो गया है। सौरभ भारद्वाज केजरीवाल की 49 दिन की पहली सरकार में ट्रांसपोर्ट मंत्री रह चुके हैं।

# अग्रणी महिला मंच ने किया श्याम निशान प्रेमियों का स्वागत

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। अग्रणी महिला मंच की अध्यक्षा सुमन भुवानिया ने बताया कि फागुन एकादशी को श्याम निशान प्रेमियों का रक्षित फ़ार्मसी स्थित निम्बोलि अड्डा काचिगुडा पर फूलों से स्वागत किया। हज़ारों की तादाद में श्याम प्रेमियों ने काचीगुडा स्थित श्याम मंदिर में पूजा-अर्चना की। मलकपेट से श्री श्याम सत्संग समिति एवं अन्य द्वारा निकाली गई यात्राओं का स्वागत किया गया। कार्यक्रम में पवन भुवानिया, रमेश अग्रवाल, बबिता गर्ग, रितु गर्ग, सुनैना नर्सरिया, मीनाक्षी अग्रवाल, रीता अग्रवाल, रितु गोयल, सोनिया गोयल, स्मिता शाह, पायल अग्रवाल, कोमल अग्रवाल, चंचल अग्रवाल, प्रीति गोयल, संगीता जाजोदिया एवं अन्य ने भाग लिया। अंत में अध्यक्ष सुमन भुवानिया ने सबको धन्यवाद दिया।

# पूर्वोत्तर राज्यों में बीजेपी की जीत पर पार्षद ने मनाया जश्न

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्वोत्तर राज्यों में बीजेपी की बंपर जीत पर नगर में जामबाग के पार्षद राकेश जायसवाल ने खुशी मनाई तथा लोगों में मिठाइयां बांटी। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों में बीजपी की जीत यानी आगामी लोकसभा तथा अन्य राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत का संकेत है। उन्होंने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी की जनकल्याणमूलक योजनाओं के कारण देश में चहुंमुखी विकास हो रहे हैं। लोगों ने मोदीजी के नेतृत्व और पूर्वोत्तर में विकास नीतियों के दृष्टिकोण पर विश्वास किया है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आसाम के सीएम हिमंत विस्व सरमा ने जो प्रशंसा की है, वह काबिले तारीफ है। इस अवसर पर भाजपा नेता रामकृष्ण, राजू, रेणुका, कल्पना, संदीप उपस्थित थे।

# इंदौर टेस्ट में भारत की शर्मनाक हार

## आस्ट्रेलिया ने 9 विकेट से हराकर वर्ल्ड टेस्ट कप फाइनल के लिए किया क्वालीफाई

› ऑस्ट्रेलिया ने 76 रन का टारगेट 76 मिनट में हासिल कर लिया, 9 विकेट से जीते

इंदौर, 3 मार्च (एजेंसियां)। इंदौर के होल्कर स्टेडियम में आस्ट्रेलिया ने यहां बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन भारत को 9 विकेट से हरा दिया। इस जीत का मतलब है कि ऑस्ट्रेलिया ने लंदन के द ओवल में 7-11 जून तक होने वाले वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है। ऑस्ट्रेलियाई पारी की बात करें तो बल्लेबाज ट्रेविस हेड और लाबुसेन ने 78 रन की नाबाद अर्धशतकीय साझेदारी निभाई। वहीं, मैन ऑफ द मैच की ट्रॉफी गेंदबाज नाथन लियोन को मिली।

इससे पहले दूसरे दिन 60.3 ओवर में भारत 163 रन पर सिमट गया था, जिससे कंगारूओं को 76 रनों का जीत के लिए लक्ष्य मिला था। गेंदबाज नाथन लियोन ने दोनों पारी में कुल 11 विकेट झटके। वहीं, तीसरे दिन ऑस्ट्रेलिया की सलामी जोड़ी उस्मान ख्वाजा और ट्रेविस हेड ने पारी की शुरूआत की। हालांकि, ख्वाजा अश्विन की गेंद की चपेट में आकर शून्य पर आउट हो गए। दिन की शुरूआत ख्वाजा के फॉरवर्ड डिफेंस पर रविचंद्रन अश्विन की गेंद में एज लगने और केएस भरत के पीछे कैच लेने से हुई। ख्वाजा ने रिव्यू लिया, लेकिन रिप्ले ने बल्लेबाज को आउट करार दिया। फिर मार्नस लाबुसेन क्रिज पर आए और हेड के साथ पारी को आगे बढ़ाया। ऑस्ट्रेलिया जब दस ओवर में एक विकेट के नुकसान पर 13 रन पर था, तो हेड ने अश्विन को मिड ऑन के ऊपर से चौका मारा और इसके बाद 11वें ओवर में एक बड़ा छक्का लगाया, जहां भारत को गेंद बदलनी पड़ी। हेड ने रवींद्र जडेजा का उनके सिर के ऊपर से चौका मारकर स्वागत किया और लेबुसेन ने ओवर में एक और चौका लगाने के लिए बाएं हाथ के स्पिनर को मिड-विकेट पर स्वीप कर ओवर का अंत किया। अश्विन को 15वें ओवर में हटा दिया गया क्योंकि हेड ने कवर पर कुछ अच्छे शॉट्स लगाए, जबकि लाबुसेन ने रिवर्स स्वीप से बैकवर्ड पॉइंट पर दो चौके लगाए।भारत ने उमेश यादव को गेंदबाजी आक्रमण में शामिल किया, लेकिन क्रिज पर मौजूद दोनों बल्लेबाजों ने उमेश यादव का भी स्वागत किया और ओवर में दो चौके लगाए। 18वें ओवर में टीम ने एक विकेट के नुकसान पर 69 रन बना लिए थे। टीम को जीत के लिए 7 रन की और जरूरत थी। गेंदबाजी अब अश्विन ने की, लेकिन दोनों बल्लेबाज इसी ओवर में मैच समाप्त करने पर उतारू थे और वह उन्होंने पूरा किया। पहले हेड ने पहली गेंद पर चौका लगाया, जिसके बाद दूसरी गेंद पर एक रन लिया और स्ट्राइक को बदला। वहीं, लाबुसेन ने 18वें ओवर की पांचवीं गेंद पर चौका लगाकर मैच को समाप्त किया और टीम को नौ विकेट से शानदार जीत दिलाई। हेड ने 53 गेंदों पर एक छक्का और 6 चौके की मदद से 49 रन की नाबाद पारी खेली। वहीं, लाबुसेन ने 58 गेंदों पर 6 चौके की मदद से 28 रन का पारी खेली। सीरीज में भारत अभी भी 2-1 से आगे है। चौथा टेस्ट 9 मार्च से अहमदाबाद में खेला जाएगा।

## रोहित ने माना-टीम इंडिया ने मांगा था स्पिन ट्रैक

### कहा-फैसला सभी का था, हमने पहली पारी में अच्छी बैटिंग नहीं की

इंदौर, 3 मार्च (एजेंसियां)। इंदौर टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया से मिली 9 विकेट की करारी हार के बाद भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने कहा है कि स्पिन फ्रेंडली पिच पर खेलने का फैसला टीम का था। हम जानते थे यह हमारे बल्लेबाजों के लिए भी चैलेंजिंग होगा, लेकिन हम इसके लिए तैयार थे, हालांकि पहली पारी में भारतीय बल्लेबाज अच्छी बैटिंग नहीं कर सके।

मैच के पहले दिन टीम इंडिया के 109 रन पर आउट हो गई और इंदौर के होलकर मैदान पर पिच पर सवाल उठने लगे। पहले दिन के पहले ही सेशन से 4.8 डिग्री का टर्न देखा गया। जो काफी ज्यादा था। भारतीय टीम मैनेजमेंट ने ही स्पिन ट्रैक की मांग की थी और अपने ही जाल में उलझ गई। बाद में आईसीसी ने इस पिच को खराब रेटिंग भी दी। तीसरे टेस्ट में गिरे 31 में से 26 विकेट स्पिनर्स को मिले। जबकि चार तेज गेंदबाजों के खाते में आए। एक रन आउट हुआ।

## वर्ल्ड टेस्ट कप फाइनल का इंतजार बढ़ा

### भारत को जीतना होगा चौथा टेस्ट, वह भी हारे तो न्यूजीलैंड-श्रीलंका सीरीज का इंतजार करना होगा

दुबई, 3 मार्च (एजेंसियां)। टीम इंडिया को बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तीसरे टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया के हाथों 9 विकेट से करारी शिकस्त झेलनी पड़ी। बल्लेबाजों के फ्लॉप शो की वजह से भारतीय टीम सवा दो दिन में ही मुकाबला हार गई। इस हार से भारतीय टीम का वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में जगह बनाने का इंतजार भी लंबा हो गया है। इस स्टोरी में जानेंगे कि भारत के सामने आगे क्या समीकरण हैं और फाइनल में जगह बनाने के लिए क्या करना होगा।

**चौथा टेस्ट जीते तो बन जाएगी जगह**

भारतीय टीम को अपने बूते ड्ब्ल्यूटीसी फाइनल में जगह बनाने के लिए सीरीज का चौथा मुकाबला जीतना होगा। ऐसा करने पर भारतीय टीम दूसरे नंबर पर रहते हुए फाइनल में पहुंच जाएगी। ऑस्ट्रेलिया का पहले स्थान पर रहना तय हो गया है और वह फाइनल में पहुंच गया है। तीसरे टेस्ट में हार के बाद भारत के 60.29% पॉइंट्स हैं। वहीं, ऑस्ट्रेलिया के 68.52% पॉइंट्स हो गए हैं।

**चौथा टेस्ट हारे तो क्या होगा**

अगर भारतीय टीम चौथा टेस्ट मैच भी हार जाती है तो उसके 56.94% पॉइंट्स रह जाएंगे। हालांकि इसके बावजूद भी वह रेस से बाहर नहीं होगी। इसके बाद भारत को न्यूजीलैंड और श्रीलंका के बीच न्यूजीलैंड में होने वाली दो टेस्ट मैचों की सीरीज के नतीजे पर पर निर्भर रहना होगा। यह सीरीज 9 मार्च से शुरू हो रही है।

अगर भारतीय टीम चौथा टेस्ट मैच भी हार जाती है और श्रीलंका की टीम न्यूजीलैंड को दोनों टेस्ट में हरा देती है तो टीम इंडिया फाइनल की रेस से बाहर हो जाएगी। इस स्थिति में श्रीलंका के 61.11% पॉइंट्स हो जाएंगे। हालांकि अगर न्यूजीलैंड की टीम 1 टेस्ट भी ड्रॉ करा लेती है तो भारतीय टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में दो टेस्ट हारने के बावजूद फाइनल में पहुंच जाएगी। श्रीलंका की टीम अगर सीरीज 1-0 से जीतती है तो उसके 55.55% पॉइंट्स ही होंगे।

## प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने नाम पर बने स्टेडियम में पहली बार देखेंगे कोई मैच

### ऑस्ट्रेलियाई पीएम भी होंगे साथ

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष एंथोनी अल्बनीस भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच चौथे टेस्ट मैच के पहले दिन का खेल अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में देखेंगे। यह पहली बार होगा जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने नाम पर बने स्टेडियम में कोई मैच देखेंगे।

मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि मोदी की यात्रा को लेकर गुजरात सरकार दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम में दोनों प्रधानमंत्रियों की मेजबानी के लिए सुरक्षा के व्यापक इंतजाम कर रही है। बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी सीरीज का चौथा टेस्ट मैच 9 से 13 मार्च के बीच खेला जाना है। पिछले साल मई में ऑस्ट्रेलिया का प्रधानमंत्री बनने के बाद से एंथोनी अल्बनीज का यह पहला भारत दौरा है। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा की योजना से परिचित लोगों ने सोमवार को बताया कि अल्बनीस के 8 मार्च के आसपास ऑस्ट्रेलिया से उड़ान भरेंगे। वह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच चौथा क्रिकेट टेस्ट मैच देखने के लिए अहमदाबाद की यात्रा कर सकते हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा की तैयारी के लिए पिछले हफ्ते ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया था।

पीएम मोदी की अहमदाबाद यात्रा से जुड़े लोगों का कहना है कि ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य ताकत की मद्देनजर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग के विस्तार को लेकर चर्चा होने की उम्मीद है।

## अर्जेंटीना में मेसी को ड्रग माफियाओं की धमकी

### पत्नी के संबंधियों को निशाना बनाने की कोशिश

रोजारियो, 3 मार्च (एजेंसियां)। अर्जेंटीना को विश्व कप जिताने वाले कप्तान लियोनल मेसी को उनके ही देश में जान से मारने की धमकी मिली है। मेसी के गृहनगर रोजारियो में ड्रग माफियों ने बंदूकधारियों से एक सुपरमार्केट में गोलीबारी करवाई है। जिस सुपरमार्केट को निशाना बनाया गया है वह मेसी की पत्नी एंटोलेना रोकूजो के संबंधियों का है। स्थानीय पुलिस ने इस घटना की पुष्टि की है। पुलिस के मुताबिक, सुपरमार्केट पर 14 राउंड फायरिंग हुई है।

माफियाओं ने मेसी के लिए एक धमकी भरा नोट भी छोड़ा। जिस पर लिखा था, "लियोनल मेसी, हम आपका इंतजार कर रहे हैं। जावकिन एक ड्रग डीलर हैं और वह आपकी देखभाल नहीं करने वाले हैं।" पुलिस ने कहा कि इस हमले में किसी की जान नहीं गई है और न ही कोई घायल हुआ है। हालांकि, सुपरमार्केट को काफी नुकसान हुआ है। जानकारी के मुताबिक, पाब्लो जावकिन रोजारियो के मेयर हैं। यह देश का तीसरा सबसे बड़ा शहर है।

**रोजारियो के मेयर ने जताई चिंता**

रोजारियो के मेयर जावकिन ने घटना पर चिंता जताई। उन्होंने हिंसा में वृद्धि, पुलिस और सुरक्षा में कमी को लेकर अपनी बात की। वह लगातार इस मामले को उठा रहे हैं। उन्होंने हाल ही में एक ट्वीट में लिखा था, "ब्यूनस आयर्स से रोजारियो 300 किमी दूर है। अपराध को रोकने के लिए हम पर्याप्त उपाय करना चाहते हैं।

हमें अर्जेंटीना की देखभाल करनी होगी।" इस मामले पर अब तक लियोनल मेसी और उनकी पत्नी एंटोनेला ने कोई बयान नहीं दिया है। मेयर जावकिन ने रोजारियो शहर में संगठित अपराध को रोकने में विफल रहने के लिए सुरक्षा बलों को दोषी ठहराया। उन्होंने कहा कि उन्होंने मेसी की पत्नी के परिवार से बात की और कहा कि वे चिंतित हैं। जिस सुपरमार्केट पर हमला हुआ था, उसके बाहर जावकिन ने संवाददाताओं से कहा, मैंने रोकूजो से बात की और वे चिंतित हैं।

## भारतीय पुरुष हॉकी टीम के नए कोच की घोषणा

### दक्षिण अफ्रीका के क्रेग फुल्टन को मिली जिम्मेदारी

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। हॉकी इंडिया भारतीय पुरुष हॉकी टीम के नए कोच की नाम की घोषणा कर दी है। शुक्रवार (तीन मार्च) को हॉकी इंडिया ने बताया कि दक्षिण अफ्रीका के क्रेग फुल्टन मुख्य कोच की जिम्मेदारी संभालेंगे। भारत 10 मार्च से एफआईएच हॉकी प्रो लीग में उतरेगा। उससे पहले फुल्टन के नाम पर मुहर लगी है। 48 वर्षीय कोच के सामने टीम इंडिया को एकजुट करने की चुनौती होगी। वह ग्राहम रीड के इस्तीफे के बाद भारत के कोच बनाए गए हैं।

क्रेग फुल्टन के पास कोचिंग में 25 सालों का अनुभव है। वह औपचारिकताएं पूरी कर जल्द से जल्द टीम से जुड़ेंगे। नेतृत्व में विश्वास रखने वाले फुल्टन ने अपनी पिछली भूमिकाओं में शानदार परिणाम दिए हैं। उनका नाम चर्चा में 2014 से 2018 के बीच में आया था। तब वह आयरलैंड की टीम के कोच थे। उनकी कोचिंग में आयरिश पुरुष टीम ने 2016 ओलंपिक खेलों के लिए क्वालीफाई किया था।

**क्रेग फुल्टन की उपलब्धियां**

100 सालों में पहली बार आयरिश टीम ओलंपिक में शामिल हुई थी। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के बाद उन्हें 2015 में एफआईएच कोच ऑफ द ईयर भी चुना गया था। इसके बाद उन्होंने तत्कालीन ओलंपिक चैंपियन बेल्जियम के साथ सहायक कोच के रूप में काम किया। तब बेल्जियम की टीम ने टोक्यो में स्वर्ण पदक जीता था। वह उस बेल्जियम टीम के कोचिंग स्टाफ का भी हिस्सा थे, जिसने भुवनेश्वर में 2018 में विश्व कप जीता था। बेल्जियम लीग जीतने वाली बेल्जियम क्लब को कोचिंग देने के बाद उन्हें 2023 में बेल्जियम का बेस्ट कोच घोषित किया गया था। विश्व हॉकी में बेल्जियम की राष्ट्रीय टीम के शानदार प्रदर्शन में उनका योगदान काफी रहा। टीम 2018 में पांचवें स्थान पर थी। अब वह तीसरे पायदान पर काबिज है।

**दक्षिण अफ्रीका के लिए ओलंपिक में उतरे थे**

दक्षिण अफ्रीकी टीम के साथ एक हॉकी खिलाड़ी के रूप में फुल्टन ने शानदार प्रदर्शन किया था। उन्होंने 10 सालों में 195 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले थे। उन्होंने अटलांटा ओलंपिक 1996 और एथेंस ओलंपिक 2004 में अपनी घरेलू टीम दक्षिण अफ्रीका के लिए खेला है। फुल्टन ने विश्व कप और राष्ट्रमंडल खेलों में भी खेला है।

## 18 वर्षीय अल्वारो रोड्रिगेज ने मैड्रिड डर्बी में गोल जड़कर रचा इतिहास

### 16 साल पहले बने रिकॉर्ड को किया धवस्त

मैड्रिड, 3 मार्च (एजेंसियां)। स्पेनिश लीग ला लीगा के 23वें फिक्सर में एटलेटिको डी मैड्रिड और रियाल मेड्रिड के बीच 25 फरवरी को एक टक्कर का मुकाबला देखने को मिला। रियाल इस डर्बी मुकाबले में 1-0 से हार रही थी।

लेकिन मैच के अंतिम क्षण में युवा अल्वारो रोड्रिगेज ने शानदार हेडर से गोल कर सनसनी मचा दी। रोड्रिगेज के गोल के चलते मैच 1-1 से ड्रॉ रहा। वहीं अपने इस गोल के साथ अल्वारो ने इतिहास भी रच दिया। एटलेटिको डी मैड्रिड के खिलाफ मैड्रिड डर्बी ड्रॉ में 20 मिनट से भी कम खेलने के बावजूद इस सप्ताह के अंत में अल्वारो रोड्रिगेज का नाम सभी रियाल मैड्रिड प्रशंसकों के होठों पर था। सीए ओससुना में लॉस ब्लैंकोस की 2-0 की जीत में सहायता के साथ पिछले सप्ताह में अपना पहला डेब्यू करने के बाद अल्वारो ने इस सप्ताह के अंत में रियाल मैड्रिड के चिर प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ अपना पहला ला लिगा गोल किया, जैसा कि लगभग 30 साल पहले रियाल के लीजेंड राउल गोंजालेज ने किया था। अल्वारो के प्रमुख लक्ष्य ने उन्हें 21वीं सदी (18 वर्ष 226 दिन) में मैड्रिड डर्बी के इतिहास में सबसे कम उम्र का गोल करने वाला खिलाड़ी बना दिया। 18 वर्षीयअल्वारो ने गोंजालो हिगुएन के रिकॉर्ड (19 वर्ष 76 दिन) को पीछे छोड़ दिया, जो उन्होंने फरवरी 2007 से बना हुआ था। इसके अलावा बात करें रियाल मैड्रिड की तो, इस समय वह ला लीगा में 23 मैचों में 52 अंक हासिल करने के बाद दूसरे पायदान पर बने हुए हैं।

इस सीजन रियान ने 23 में से 16 मैच जीते हैं जबकि 4 में उन्हें हार का सामना भी करना पड़ा है। बहरहाल स्पेनिश लीग ला लीगा के शीर्ष पर 59 अंक के साथ शीर्ष पर एफ सी बार्सीलोना विराजमान है।

## महिला इंग्लिश क्रिकेटर ने प्रेमिका संग सगाई की

### कभी विराट कोहली को किया था प्रपोज, अब विमेंस फुटबॉल मैनेजर से करेंगी शादी

लॉर्ड्स, 3 मार्च (एजेंसियां)। इंग्लैंड की महिला क्रिकेटर डैनी व्याट ने विमेंस फुटबॉल मैनेजर जॉर्जी हॉज से सगाई कर ली है। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी प्रेमिका से सगाई करने की जानकारी शेयर की। व्याट लंबे समय से इंग्लैंड के लिए इंटरनेशनल क्रिकेट खेल रही हैं। वह पिछले दिनों साउथ अफ्रीका में खत्म हुए टी-20 वर्ल्ड कप में भी टीम का हिस्सा थीं। व्याट ने जॉर्जी से सगाई करने के बाद रात करीब 9 बजे सोशल मीडिया पर फोटो पोस्ट की। इस फोटो में दोनों एक-दूसरे किस कर रही हैं। फोटो में जॉर्जी अपनी रिंग फिंगर में पहनी हुई रिंग दिखाते नजर आईं। फोटो के साथ व्याट ने कैप्शन में लिखा, 'माइन फोरेवर' यानी हमेशा के लिए मेरी। जॉर्जी सीएए स्पोर्ट्स असोसिएशन में विमेंस फुटबॉल टीम की हेड मैनेजर हैं। वह विमेंस फुटबॉल टीम को मैनेज करने के साथ टीम स्ट्रैटजी और प्लानिंग का भी ध्यान रखती हैं। व्याट ने साउथ अफ्रीका के केप टाउन से अपनी सगाई की फोटो पोस्ट की। यानी वे इस वक्त साउथ अफ्रीका में ही हैं। जहां उन्होंने पिछले दिनों विमेंस टी-20 वर्ल्ड कप खेला था। उनकी टीम सेमीफाइनल में मेजबान साउथ अफ्रीका से हार कर ही फाइनल में प्रवेश नहीं कर सकी थी। यह मैच 24 फरवरी को खेला गया था और अब 2 मार्च को व्याट ने सगाई की फोटो पोस्ट कर दी।

**विराट कोहली को किया था प्रपोज**

31 साल की व्याट ने 2014 में एक ट्वीटर पोस्ट के जरिए भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली को प्रपोज किया था। उन्होंने ट्विटर पोस्ट के जरिए 'कोहली मैरी मी' यानी विराट कोहली मुझसे शादी कर लो, लिखा था। तब वे 22 साल की थीं और उन्होंने कहा था कि ये बस एक मजाकिया ट्वीट था, उससे ज्यादा कुछ नहीं। विराट ने इंग्लैंड में एक मैच के दौरान डैनी के साथ फोटो भी खिंचवाई थी।

# मेधावी छात्रों को पढ़ाई में सभी प्रकार की मदद की जाएगी : हरीश राव

## सिद्दीपेट में एनईईटी उम्मीदवारों के लिए टैब या आईपैड

सिद्दीपेट, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। वित्त मंत्री टी. हरीश राव ने कहा कि वह राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (एनईईटी) की तैयारी कर रहे छात्रों को परीक्षा में सहायता करने के लिए एक टैब या आईपैड भेंट करेंगे। शुक्रवार को चिन्नाकोदुरु मंडल के इब्राहिमपुर में मॉडल स्कूल की छात्राओं के लिए नवनिर्मित 1.32 करोड़ रुपये के छात्रावास का उद्घाटन करने के बाद इंटरमीडिएट के छात्रों को संबोधित करते हुए, मंत्री ने कहा कि वह मेधावी छात्रों को उनकी पढ़ाई में उत्कृष्ट मदद करने के लिए विभिन्न तरीकों से समर्थन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने पहले ही 10वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं में 10 जीपीए स्कोर करने वाले प्रत्येक छात्र को 10,000 रुपये के पुरस्कार की घोषणा की है।

कक्षा 10 के छात्रों से बात करते हुए, उन्होंने कहा कि 10 जीपीए स्कोर उन्हें आरजीयूकेटी-बसारा में सीट पाने में मदद करेगा जो उनके लिए एक उज्ज्वल भविष्य तैयार करेगा।

राव ने जिला शिक्षा अधिकारी और मंडल शिक्षा अधिकारी को 10वीं कक्षा के छात्रों की लगातार निगरानी करने का सुझाव दिया ताकि सिद्दीपेट जिले को इस साल बोर्ड परीक्षाओं में प्रथम स्थान बनाए रखने में मदद मिल सके। मंत्री ने अधिकारियों को बालिका छात्रावास में सभी सुविधाएं मुहैया कराने के भी निर्देश दिए।

इससे पूर्व उन्होंने कस्तूरीपल्ली से इब्राहिमनगर तक सड़क मरम्मत कार्य का शिलान्यास किया।

# केंद्रीय निधि पर श्वेत-पत्र जारी करें केसीआर : बंडी

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य भाजपा अध्यक्ष बंदी सजय कुमार ने आज सीएम केसीआर से केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा ग्राम पंचायतों को जारी की गई धनराशि पर एक श्वेत पत्र जारी करने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि सीएम ने राज्य में सरपंचों और एमपीटीसी और जेडपीटीसी की व्यवस्था को कमजोर कर दिया है। चौपडांडी निर्वाचन क्षेत्र के रामसागर में पूर्व विधायक बोडिगे शोबा और स्थानीय भाजपा नेताओं के साथ ग्राम पंचायत भवन और आंतरिक सीसी सड़कों के निर्माण की आधारशिला रखने के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं की एक सभा को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा कि वे ग्राम पंचायत भवन के निर्माण के लिए 20 लाख रुपये और आंतरिक सड़क के निर्माण के लिए 20 लाख रुपये खर्च कर रहे हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि सीएम केसीआर 73वें संविधान संशोधन का उल्लंघन कर रहे हैं, जिसमें गांव के सरपंचों और ग्रामीण जनप्रतिनिधियों को शक्तियां दी गई हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि सीएम ने सरपंचों को फंड नहीं देकर उनके साथ धोखा किया है। उन्होंने दावा किया कि केंद्र सरकार ने मनरेगा के तहत तेलंगाना राज्य को 24,000 करोड़ रुपये जारी किए और कहा कि यह कार्यक्रम औसतन 50 लाख लोगों को रोजगार प्रदान कर रहा है।

# दिल्ली में एमएलसी कविता का प्रस्तावित विरोध हास्यास्पद : एनवीएसएस

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य भाजपा के उपाध्यक्ष और पूर्व विधायक एनवीएसएस प्रभाकर ने आज महिला सशक्तीकरण पर दिल्ली में मुख्यमंत्री केसीआर की बेटी एमएलसी के. कविता द्वारा प्रस्तावित विरोध का उपहास किया। प्रभाकर ने यहां राज्य कार्यालय में मीडिया से बात करते हुए कहा कि यह हास्यास्पद है कि कविता दिल्ली में जंतर-मंतर पर केंद्र से महिला आरक्षण विधेयक पेश करने और महिला सशक्तिकरण के समर्थन में विरोध प्रदर्शन आयोजित करने की योजना बना रही है, जबकि उसने पिछले नौ वर्षों के दौरान तेलंगाना राज्य में महिलाओं पर अत्याचार की बढ़ती घटनाओं पर एक भी शब्द नहीं बोला।

प्रभाकर ने कहा कि राज्य की राजधानी में एक नाबालिग लड़की के साथ बलात्कार किया गया और दो छात्राएं (एमबीबीएस और इंजीनियरिंग) रैगिंग की शिकार हुईं जिन्होंने हाल ही में आत्महत्या कर ली, लेकिन कविता ने कभी भी परिवारों को सांत्वना देने की जहमत नहीं उठाई और कभी भी घटनाओं की निंदा नहीं की। उन्होंने कहा कि जब शराब घोटाले की जांच जोर पकड़ रही है और जांच एजेंसी द्वारा गिरफ्तारियां की जा रही हैं, कविता का प्रस्तावित विरोध केवल सहानुभूति बटोरने का खेल है। जांच में सीएम केसीआर की बेटी कविता का नाम भी सामने आया है और एजेंसी ने ठोस सबूत जुटाए हैं। तेलंगाना सरकार द्वारा संवैधानिक राज्यपाल के पद को विवाद में घसीटे जाने का जिक्र करते हुए प्रभाकर ने कहा कि केसीआर सरकार राजभवन के हर मुद्दे को राजनीतिक रंग देने की कोशिश कर रही है और अब उसने लंबित विधेयकों को लेकर शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाया है। उन्होंने कहा कि राजभवन मुख्यमंत्री केसीआर के आधिकारिक आवास प्रगति भवन से पैदल दूरी पर है, लेकिन सीएम केसीआर के पास मुद्दों का राजनीतिकरण किए बिना सौहार्दपूर्ण ढंग से मुद्दों को हल करने के लिए समय नहीं है और कभी भी राजभवन का दौरा नहीं किया। गैस सिलेंडर की कीमतों में वृद्धि पर बीआरएस मंत्रियों के विरोध की निंदा करते हुए भाजपा नेता ने आरोप लगाया कि बीआरएस सरकार ने बिजली, पानी, संपत्ति कर और बस शुल्क में वृद्धि की है। समय आ गया है कि अब लोग बीआरएस के पिछले दरवाजे से विरोध करेंगे और आने वाले चुनावों में इस भ्रष्ट सरकार को उखाड़ फेंकेंगे।

# चावल के दावे पर चंद्रबाबू नायडू पर बरसे हरीश राव

सिद्दीपेट, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। वित्त मंत्रीटी हरीश राव ने शुक्रवार को तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) के प्रमुख एन. चंद्रबाबू नायडू के इस दावे के लिए उन पर निशाना साधा कि तेलुगू देशम पार्टी (तेदेपा) सरकार ने तेलंगाना में चावल लाया था। शुक्रवार को जगदेवपुर में सभा को संबोधित करते हुए, हरीश राव ने कहा कि तेलंगाना दक्षिण भारत का चावल का कटोरा बन गया है क्योंकि मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने कई सिंचाई परियोजनाओं को पूरा किया है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना के किसानों ने वर्तमान यासंगी में 54 लाख एकड़ में धान की खेती की है, जबकि आंध्र प्रदेश ने सिर्फ 16 लाख एकड़ में फसल की खेती की है। मंत्री ने तेलंगाना में सिंचाई के तहत क्षेत्र में वृद्धि का श्रेय मुख्यमंत्री को दिया और कहा कि ऐसे दिन थे जब आंध्र प्रदेश में गर्मियों के दौरान पीने के पानी का एक सपना था। अब, मध्य गर्मियों के दौरान भी तेलंगाना में धाराएं और टैंक बह रहे हैं, क्योंकि सरकार ने उनमें गोदावरी का पानी छोड़ा है।

नायडू के दावों का पर्दाफाश करते हुए, मंत्री ने कहा कि तेदेपा प्रमुख यह दावा करने में भी संकोच नहीं करेंगे कि उन्होंने चारमीनार का निर्माण किया था।

स्वतंत्र वार्ता

Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

# एग्री-गोल्ड कंपनी के पीड़ितों की जल्द मदद करे सरकार : कुनामनेनी

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। भाकपा के राज्य सचिव कुनामनेनी संबाशिव राव ने आज राज्य सरकार को चेतावनी दी कि अगर वह अपने पीड़ितों को वितरित करने में विफल रही तो वे एग्री-गोल्ड कंपनी की संपत्तियों को वितरित कर देंगे। उन्होंने इंदिरा पार्क में कृषि-स्वर्ण पीड़ित संघ द्वारा आयोजित धरना कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यह बात कही। धरना कार्यक्रम की अध्यक्षता इसके अध्यक्ष एन. बाला मल्लेश ने की। इस अवसर पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि तेलंगाना के लगभग 5 लाख लोगों ने एग्री गोल्ड कंपनी के साथ 500 करोड़ जमा किए हैं और कहा कि पूरे तेलंगाना राज्य में कंपनी के पास 1000 करोड़ की संपत्ति है। उन्होंने राज्य सरकार से ऐसी सभी संपत्तियों को जब्त करने और कंपनी के पीड़ितों को सौंपने की मांग की। राव ने राज्य सरकार को बताया कि पड़ोसी आंध्र प्रदेश सीएम वाईएस जगनमोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली सरकार ने राज्य से पीड़ितों के 20,000 जमा वापस कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि वे सभी पीड़ितों को इकट्ठा करेंगे और उनके समर्थन में आंदोलन करेंगे। बाला मल्लेश ने कहा कि अगर राज्य सरकार ने उनकी मांगों को पूरा नहीं किया तो वे अपने आंदोलन को चरणबद्ध तरीके से तेज करेंगे.

# दक्षिणी सेक्टर आईजीपी का पद संभालने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं चारू सिन्हा

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना कैडर के 1996 बैच की आईपीएस अधिकारी आईजीपी चारू सिन्हा जुबली हिल्स में आईजीपी सीआरपीएफ दक्षिणी सेक्टर के रूप में शामिल हुई हैं।

उन्होंने महेश चंद्र लड्ढा से पदभार ग्रहण किया, जिन्हें सीआरपीएफ जम्मू सेक्टर में तैनात किया गया है। चारु सिन्हा आईजीपी दक्षिणी सेक्टर का पद संभालने वाली पहली महिला अधिकारी होंगी। उन्होंने हैदराबाद में सेंट फ्रांसिस कॉलेज फॉर वुमेन से अंग्रेजी साहित्य, इतिहास और राजनीति विज्ञान में स्नातक किया और हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर किया।

इससे पहले उन्होंने 2.6 साल के लिए श्रीनगर सेक्टर में तैनात होने से पहले लगभग एक साल तक आतंक प्रभावित जम्मू सेक्टर में आईजीपी के रूप में काम किया था। इससे पहले चारु सिन्हा नक्सल विरोधी अभियानों के लिए सीआरपीएफ बिहार की कमान संभालने वाली पहली महिला सीआरपीएफ आईजी भी थीं। सीआरपीएफ में प्रतिनियुक्त होने से पहले, उन्होंने तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में विभिन्न पदों पर काम किया। वह एसपी प्रकाशम, निजामाबाद, महबूबनगर, चित्तूर, पूर्वी गोदावरी, खुफिया सुरक्षा विंग के रूप में तैनात थीं और अल्बानियाई मुसलमानों और ईसाई सर्बों के बीच संघर्ष से फटे एक क्षेत्र में शांति स्थापना के लिए कोसोवो में संयुक्त राष्ट्र मिशन में प्रतिनियुक्ति पर गईं, जिसमें उन्होंने पेशेवर को संभाला।

# अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस : दमरे ने 'महिला स्वास्थ्य और कल्याण' पर किया सेमिनार

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। दक्षिण मध्य रेलवे (एससीआर) ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस समारोह के तहत शुक्रवार को रेल निलयम, सिकंदराबाद में 'महिला स्वास्थ्य और भलाई' पर एक सेमिनार का आयोजन किया। पी. उदय कुमार रेड्डी, अतिरिक्त महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे, पी. श्रीलता, उपाध्यक्ष, दक्षिण मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन और राजीव किशोर, प्रधान मुख्य कार्मिक अधिकारी, एससीआर मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर बोलते हुए, पी. उदय कुमार रेड्डी ने कहा कि महिलाएं समाज की आधारशिला हैं और उन्हें उचित मान्यता दी जानी चाहिए। उन्होंने महिला कर्मचारियों को खुद को सशक्त बनाने और जीवन के हर पहलू में आत्मविश्वासी और स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने सेमिनार आयोजित करने के लिए कार्मिक विभाग और दमरे ललिता कला समिति की सराहना की, जो महिला कर्मचारियों को स्वास्थ्य के महत्व और कार्यालय के काम और पारिवारिक जीवन के उचित संतुलन को बनाए रखने के बारे में जागरूक करने के लिए बहुत आवश्यक है। सभा को संबोधित करते हुए श्रीलता ने कहा कि 'हम जो खाते हैं, उससे तंदुरूस्ती शुरू होती है। उन्होंने महिला कर्मचारियों को स्वस्थ, संतुलित आहार लेने और शारीरिक फिटनेस बनाए रखने पर ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने यह भी कहा कि पुरुष और महिला सह-निर्भर हैं और उन्हें सौहार्दपूर्ण पारिवारिक वातावरण बनाए रखने की दिशा में काम करना चाहिए।

राष्ट्रीय पोषण संस्थान से डॉ. मोनिका, एमडी और डॉ. सिल्विया फर्नांडीज राव, पीएचडी सेमिनार के अतिथि वक्ता थे और उन्होंने महिला कर्मचारियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर संबोधित किया। उन्होंने संतुलित आहार लेने और शारीरिक फिटनेस बनाए रखने के महत्व के बारे में बताया।

# सुप्रीम कोर्ट में याचिका के बाद राज्यपाल ने मुख्य सचिव पर साधा निशाना

## कहा, राजभवन दिल्ली की तुलना में अधिक निकट

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। 10 लंबित विधेयकों पर राज्यपाल की सहमति के लिए राज्य सरकार द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में दायर याचिका पर टिप्पणी करते हुए राज्यपाल डॉ. तमिलिसाई सुंदरराजन ने शुक्रवार को याचिका दायर करने के लिए मुख्य सचिव ए. शांति कुमारी पर निशाना साधते हुए राज्य सरकार पर परोक्ष रूप से हमला किया। एक ट्वीट में, उन्होंने मुख्य सचिव पर कार्यालय संभालने के बाद आधिकारिक तौर पर राजभवन का दौरा नहीं करने का आरोप लगाया और कहा कि राजभवन दिल्ली की तुलना में करीब है। जबकि मुख्य सचिव ने एक आधिकारिक क्षमता में राज्य सरकार की ओर से सर्वोच्च न्यायालयमें रिट याचिका दायर की, राज्यपाल ने पूर्व को व्यक्तिगत रूप से निशाना बनाया और उन पर कार्यालय संभालने के बाद आधिकारिक रूप से "राजभवन" का दौरा नहीं करने का आरोप लगाया। एक बार फिर, उन्होंने अधिकारियों पर प्रोटोकॉल का पालन नहीं करने का आरोप लगाया और शिष्टाचार भेंट करने के लिए समय नहीं होने के लिए मुख्य सचिव पर कटाक्ष किया। हालांकि कई लोगों ने यह इशारा किया कि शांति कुमारी ने जनवरी में ही पदभार ग्रहण किया था, जबकि विधेयक छह महीने से अधिक समय से राज्यपाल के पास लंबित हैं।

# अग्नि सुरक्षा जागरूकता पर मॉक ड्रिल

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। अग्नि सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के तहत, अग्निशमन विभाग पूरे तेलंगाना में हर शुक्रवार को मॉक ड्रिल और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर रहा है। मॉक ड्रिल परिसर में ईंधन रिफिलिंग स्टेशनों, स्कूलों, कॉलेजों, उद्योगों और अन्य सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में आयोजित की जा रही है, जिसका उद्देश्य आग लगने की स्थिति में क्या करें और क्या न करें के बारे में जनता को शिक्षित और प्रबुद्ध करना है। शुक्रवार को तेलंगाना में अग्निशमन केंद्रों के चालक दल द्वारा उच्च न्यायालय, सेना एओसी केंद्र, गेल, पुलिस बटालियन जैसे विभिन्न परिसरों में मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया। एक विज्ञप्ति के अनुसार, पिछले दस दिनों के दौरान कुकटपल्ली मंडल में कुल 552 खतरनाक परिसरों और राजेंद्रनगर मंडल में 400 खतरनाक परिसरों का निरीक्षण किया गया। जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं और प्रबंधन को अग्नि सुरक्षा उपकरणों को बनाए रखने और शून्य दुर्घटना और संपत्ति के न्यूनतम नुकसान के साथ आग दुर्घटनाओं से निपटने के निर्देश दिए गए हैं।

# ग्रोथ हार्मोन इंजेक्शन की अवैध खरीद-बिक्री के आरोप में 3 लोग गिरफ्तार

हैदराबाद, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। एसआर नगर में शुक्रवार को एक जिम ट्रेनर सहित तीन लोगों को अवैध रूप से ग्रोथ हार्मोन इंजेक्शन और टैबलेट खरीदने और बेचने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है, जो कम समय में मांसपेशियों के निर्माण के लिए स्टेरॉयड के रूप में उपयोग किया जाता है। कुल मिलाकर 1,100 टैबलेट और 180 इंजेक्शन की शीशियां जब्त की गईं, जिनकी कुल कीमत एक लाख रुपये है। एसआर नगर पुलिस और एक ड्रग कंट्रोल टीम के साथ टास्कफोर्स ने अमीरपेट में प्रोटीन सप्लीमेंट का कारोबार करने वाला डी. ओमप्रकाश (40), एस.नरेश (38), अंबरपेट से प्रोटीन सप्लीमेंट विक्रेता और सैयद फारूक (27), चंद्रायनगुट्टा में बरकस से एक जिम ट्रेनर को गिरफ्तार किया। आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम का एक व्यक्ति अविनाश फरार है। पुलिस के मुताबिक, अपना मसल न्यूट्रिशन सप्लीमेंट प्रोटीन बिजनेस शुरू करने से पहले ओमप्रकाश ने फ्रीलान्स जिम ट्रेनर के तौर पर काम किया। बाजार में ग्रोथ हार्मोन इंजेक्शन और टैबलेट की मांग को देखते हुए, उन्होंने उन्हें कम कीमत पर खरीदना और जिम जाने वालों, फिटनेस और बॉडी बिल्डिंग के शौकीनों को उच्च दरों पर बेचना शुरू किया।

टास्कफोर्स के डीसीपी, चक्रवर्ती गुम्मी ने कहा कि ओमप्रकाश ने अपने बचपन के दोस्त अविनाश को भी शामिल किया, जो एक फार्मेसी चलाता है। चक्रवर्ती गुम्मी ने कहा, ओमप्रकाश ने उन्हें बॉडी बिल्डर्स और जिम जाने वालों के बीच ग्रोथ हार्मोन आधारित इंजेक्शन और टैबलेट की मांग के बारे में समझाया। अच्छे कमीशन की पेशकश करते हुए, उन्होंने शहर में कई लोगों को उनके माध्यम से आपूर्ति शुरू कर दी। अधिकारियों ने आगाह किया कि इस तरह के ग्रोथ हार्मोन इंजेक्शन और टैबलेट के दुष्प्रभाव हो सकते हैं जिनमें कार्डिएक अरेस्ट, हाई ब्लड प्रेशर शामिल हैं। गुप्त सूचना के आधार पर तीनों को गिरफ्तार कर लिया गया और उनके पास से आपत्तिजनक सामग्री जब्त कर ली गई। गिरफ्तार व्यक्तियों को जब्त सामग्री सहित आगे की जांच के लिए एसआर नगर पुलिस को सौंप दिया गया है।

# राजनीतिक लाभ के लिए वैजाग में हो रहा है निवेशकों का शिखर सम्मेलन : टीडीपी

अमरावती, 3 मार्च (स्वतंत्र वार्ता)। आंध्र प्रदेश की मुख्य विपक्षी तेलुगू देशम पार्टी (टीडीपी) ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार द्वारा विशाखापत्तनम में आयोजित किये जा रहे औद्योगिक शिखर सम्मेलन राज्य के हित में नहीं है बल्कि केवल राजनीतिक लाभ के लिए है। टीडीपी ने यह भी आरोप लगाया कि पिछले चार साल से कई उद्योगपतियों को परेशान किया गया है और अब औद्योगिक शिखर सम्मेलन का आयोजन केवल जनता को गुमराह करना है। विपक्षी दल ने दावा किया कि कई प्रसिद्ध उद्योगपति और व्यवसायी मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी के भ्रष्ट कार्यों के शिकार हुए। तेदेपा ने एक 'तथ्य पत्रक' में कहा कि विनाशकारी नीतियों और जगन रेड्डी सरकार द्वारा अपनाई गई नफरत के साथ, एक भी उद्योगपति ने पिछले चार वर्षों में राज्य में इकाई स्थापित करने में रुचि नहीं दिखाई है।

यह इंगित करते हुए कि कडप्पा स्टील प्लांट के लिए दो बार शिलान्यास किया जा चुका है, पार्टी ने उल्लेख किया कि प्लांट का काम आगे नहीं बढ़ा। वाईएसआरसीपी के सत्ता में आने के तुरंत बाद, मायलावरम सौर संयंत्रों पर हमला किया गया और किआ प्रबंधन को ब्लैकमेल किया गया, जबकि अमारा राजा बैटरी को बंद करने की साजिश रची गई। बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार से डरकर, जॉकी इकाई अनंतपुर जिले के रपथडू से पड़ोसी राज्य में चली गई, जबकि रिलायंस इलेक्ट्रॉनिक उद्योग तिरुपति से दूसरे राज्य में स्थानांतरित हो गया। फ्रैंकलिन टेम्पलटन, डेटा सेंटर, लुलु और टाइटन इलेक्ट्रिकल वाहन इकाई, सभी ने विशाखापत्तनम छोड़ दिया, जैसा कि टीडीपी ने तथ्य-पत्र में उल्लेख किया है।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.